SCHEME FOR AWARD OF FELLOWSHIP TO OUTSTANDING PERSONS IN THE FIELD OF CULTURE

Senior Fellowship for 2013-14

FINAL DOCUMENTS

File No.CCRT/SF-3/128/2015

Field: Folk/Traditional and Indigenous Arts

Sub-Field: Folk Music

शीर्षक : बिहार के लोकगीतों का संकलन एवं उसके समजीत एवं सांस्कृतिक महत्व।

From:

Upendra Kumar Choudhary
C/o Mukesh Kumar,
Nand Bhawan,
New Bigrahpur, Mithapur Bus Stand,
PO-GPO Patna,
Mob:- 9304646636
Email: ukchoudhari@gmail.com

To

The Director
Centre for Cultural Resources & Training,
(Ministry of Culture),
15A, Sector-7, Dwarka,
New Delhi-110075.

अपनी बात

वैदिक ऋचाओं की तरह लोकसंगीत या लोकगीत अत्यंत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उद्गार हैं। लोकगीत लोक के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। ये लेखनी द्वारा नहीं बल्कि लोकजिह्वा का - मानस से निःसृत होकर आज तक जीवित-सहारा लेकर जनहै। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है। लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है, वही लोकगीत है। इस प्रकार लोकगीत शब्द का अर्थ है-

1. प्रचलित गीत लोक में
2. लोकरचित गीत-
3. लोकविषयक गीत-

लोकगीत तो प्रकृति के उद्गार हैं। साहित्य की छंदबद्धता एवं अलंकारों से मुक्त रहकर ये मानवीय संवेदनाओं के संवाहक के रूप में माधुर्य प्रवाहित कर हमें तन्मयता के लोक में पहुंचा देते हैं। लोकगीतों के विषय, सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुडे हुए हैं। इन गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य, सुखदुःख-, विभिन्न संस्कारों और जन्म से मृत्यु तक को बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से गाया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि संगीतमयी प्रकृति जब गुनगुना उठती है लोकगीतों का स्फुरण हो उठना स्वाभाविक ही है। विभिन्न ऋतुओं के सहजतम प्रभाव से अनुप्राणित ये लोकगीत प्रकृति रस में लीन हो उठते हैं।

सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतों लोकसंस्कृतियों का/सहेजा जाना बहुत जरूरी है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां पागलों की संख्या अधिक होती है। सदियों से दबेकुचले समाज ने-, खास कर महिलाओं ने सामाजिक दंशधापी को अभिव्यक्ति देने के-जीवन संघर्षों से जुड़ी आपा/परिवार के तानों-घर/अपमान/ लिए लोकगीतों का सहारा लिया। लोकगीत किसी काल विशेष या कवि विशेष की रचनाएं नहीं हैं। अधिकांश लोकगीतों के रचइताओं के नाम अज्ञात हैं। दरअसल एक ही गीत तमाम कंठों से गुजर कर पूर्ण हुई है। महिलाओं ने लोकगीतों को ज़िन्दा रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज वैश्वीकरण की आंधी में हमने अपनी कलाओं को तहसनहस कर दिया है। अप-नी संस्कृतियां अनुपयोगी बेकार/सी जान पड़ने लगी हैं। लोककथा की भाँति लोकगीत भी हमें मानव की परंपरागत वसीयत के रूप में प्राप्त हैं।

दादी अथवा नानी के पास बैठकर बचपन में जो लोकगीत सुनी जाती है, इनका निर्माण कब, कहाँ कैसे और किसके द्वारा हुआ, यह बताना असंभव है।

राष्ट्रपिता **महात्मा गांधी** ने लोकगीत के संबंध में कहा था- कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं। उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठों में लोक समूह लोकगीत गाते हैं।

बिहार की माती की अपनी सुगंध है और यहाँ के लोकगीत की आवाज सूरीनाम से ले कर सिंगापूर तक गई है यहाँ मैथिली, बज्जिका, भोजपुरी, मागधी, अंगिका आदि कोयल की सुंदर भाषाऐं हैं। यहाँ धार्मिक लोकगीत, सामाजिक लोकगीत, पेशागीत , जातीय लोकगीत और विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत-संगीत, आदि काफी प्रसिद्ध है। लोकगीतों में संस्कार गीत का, जो की विभिन्न स्तनों एवं समाज में अगल-अलग होते है, का अत्यंत अधिक महत्व है। इन गीतों से उस समय के समाज के बारे में पता चलता है। उस समय की समजीत व्यवस्था, मानिता, धारणाएँ एवं मानवीय मूल्यों की अवस्था ज्ञात होता है।

विषय सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
	पृष्टभूमि	6
1	लोकगीतों में संगीत तत्व	7-11
2	मगही लोकगीत सोहर गीत (9); जन्मोत्सव सम्बन्धी गीत (35); मुण्डन गीत (41); जनेऊ के गीत (44); सगुन के गीत (49); लगन गीत (52); चुमावन गीत (53); उबटन के गीत (55); कलसा गीत (58); घिउढारी के गीत (61); पैरपूजी (63); बेटा-विवाह गीत (64); बेटी-विवाह गीत (72); नहछू (79); जोग-मँगाई (80); परिछन (84); वैवाहिक झूमर(86); बेटी-बिदाई (89); बेटा-पतोह-परिछन (94); गौना के गीत (95); दोंगा के गीत (97); शिव विवाह गीत (98); श्रम गीत(101); अन्य गीत(112); मुस्लिम संस्कार गीत (113)।	12-131
3	भोजपुरी लोकगीत सोहर गीत(139); छठ गीत(145); कीर्त्तन (146); फगुआ के गीत (149); निर्गुण (150); लोरियाँ (153); गंगा स्नान के गीत (161); रक्षा बंधन के गीत (164); चौथा चंदा के गीत (165); पराती लोकगीत (168); विवाह गीत (171)।	132-185
4	भोजपुरी गाथा/लोकगाथा गीत आल्हा-ऊदल	186-208
5	मैथिली लोकगीत छठ गीत (206); कीर्तन (216); **सांसरिक**	209-284

	लोकगीत:- सोहर गीत (223); मुंडन गीत (231); खेलौना लोकगीत (235); **ऋतु लोकगीत:-** चौमासा (238); बारहमासा (244); कजरी (252); चैतावर (255); मलार (259); बिरहा (262); जट-जटिन (264); वसंत (269); फागु (271); लगनी (276); तिरहुत (278)।	
6	हिन्दी लोकगीत सोहर गीत (282); मेंहदी गीत (289); जेवनार गीत (295); बेटी-बिदाई गीत (300); अन्य लोकगीत (302)	285-310

पृष्टभूमि

बिहार भारत का एक प्राचीन राज्य है एवं इसकी संस्कृति निराली है। यहाँ की शास्त्रीय संगीत बहुत ही प्रसिद्ध है। शास्त्रीय संगीत की तरह यहाँ के पौराणिक लोकगीत भी बहुत प्रसिद्ध है, जोकि एक साधारण व्यक्ति के जीगन केन विभिन्न घटनाओं के साथ जुड़े रहें है।

हमारे राज्य के ग्रामीण इलाकों में भ्रमण एवं बुजुर्ग पीढ़ी के लोक कलाकारों से मिलने के दौरान बहूँ से लोगकीट सुनने को मिलें हैं जो कि रोमांचित करने वाली एवं समाज के लिए अति महत्वपूर्ण है। बहुत से लोकगीत अति जीर्ण-शीर्ण अवस्था में भी मिले हैं जो कि स्थानिक समाज एवं सनस्तृति से जुड़ा हुआ है, जिसे संरक्षित करना आवश्यक है। इन्हें संरक्षित एवं पूर्ण जीवित करने का दायित्व भारत सरकार से संस्कृति मंत्रालय ने हमें दिया है। हमारा भरपूर प्रयास है कि हराई लुप्त होती अथवा जीर्ण-शीर्ण अवस्था से प्राप्त लोकगीतों का संकलन कर सके, उसकी संस्कृति अपनी पूर्ण गरिमा के साथ स्थापित हो सके तथा आनेवाली पीढ़ी को अपने पारंपरिक लोकगीत फिर से समाज में पूरी मर्यादा एवं अस्मिता के साथ प्राप्त हो सके।

अध्याय-1

लोकगीतों में संगीत तत्व

लोकगीत और संगीत दोनों का ही उद्गम और विकास प्रकृतिक परिवेश में स्वतः हुआ है। इस गंगीत ने समग्र चर-अचर प्रकृति में भावनात्मक, संवेदनात्मक गहराई देकर सबको मुग्ध किया।

संगीत और काव्य दोनों के सम्मिश्रण से ही गीत आनंदायक और भावनात्मक बनते है। अपनी गेयता के कारण ही गोकगीत कर्णप्रिय हैं आहुर लोकमानस में संचित, सुरक्षित होते हैं। लोक गीतों में संगीत अपनी पूर्ण सरलता और समरसता के साथ विद्यमान रहता है। प्रत्येक अवसर के गीतों की लय अवसर के उपयुक्त वातावरण के साथ संताल सुनायी पड़ती है। ऋतु गीतों में यदि झूले के गीतों मैं सावनी बहार की भांति मीठी फुहारें हैं तो फाग गीतों की अपनी अलग मस्ती है। विवाह गीतों में हर्ष की प्रतिध्वनि के साथ बेटी की विदाई की मार्मिकता भी है। सोहर गीतों में पुत्र जन्म के उछाह की ध्वनि स्पष्ट सुनी जा सकती है। श्रम गीतों में एसएचआरएम के कारण स्वांस के उतार चढ़ाव का प्रभाव इन गीतों की धुन पर स्पष्ट है।

लोकगीतों में संगीत की दृष्टि से महत्व बताते हुए डॉ॰ चिंतामणि उपाध्याय कहते हैं:- *"संवेदनशील मानव हृदय के भाव सहजतः जब मुख से अभिव्यंजित होते हैं, स्वर एवं लयबद्ध हो जाने के पश्चात एक निश्चित धुन, गेय पद्धति में प्रकट होते हैं। इन लोकधुनों की संख्या अनंत है। भारत के प्रत्येक जनपद में जितने भी लोकगीत प्रचलित हैं, उनकी विशेष धुन है, ये धुनें निसर्ग सिद्ध हैं। इन्हीं लोक धुनों में भारतीय संगीत के प्रत्येक राग छिपे हैं।"*

गीत और संगीत दोनों ही मनुष्य के आदि सहचर हैं जो हमारे हृदयगत भावों को स्पष्ट करने के आदि साधन हैं। भारतीय संगीत में लोक संगीत का विशिष्ट स्थान है। लोकगीतों की लोकप्रियता में वाद्य और नृत्य बहुत सहायक हैं। वाद्य मानव का चिर सहचर है। आदि मानव ने पत्थर, काष्ठ, बाँस के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया। हर्षोद्रेक को अभिव्यक्त करने के लिए उसने जो उछल कूद की उसी से नृत्य कला का जन्म

हुआ। भ्रमरों की गुंजार, कोयल की मीठी कूक तथा मयूरों के मधुर स्वर ने मानव को संगीत प्रेमी बनाया।

संगीत सम्पूर्ण विश्व की भाषा है। कभी-कभी हार्दिक भावनाओं को व्यक्त करने में जब शब्दों की भाषा मूक हो जाती है, तब संगीत या दूसरे शब्दों मीन शुद्धवाद की भाषा नैसर्गिक अभिव्यक्ति का साधन बन जाती है। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ ही गीत और संगीत व्यवस्थित होते गये और गेय जातक, त्रिपिटक आदि प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है।

डॉ धीरेंद्र वर्मा, डॉ बाबुराम सक्सेना, सुनीता कुमार चैटर्जी, ग्रियसेन, ग्रिम आदि भाषा वैज्ञानिकों का कथन है कि भाषा कि उत्पत्ति से पूर्व ही इंगित भाषा एवं कंठ स्वर का जन्म हुआ। यह सती है कि विश्व कि समस्त भाषाओ कि उत्पत्ति से पूर्व गायन कला का जन्म हुआ। इसी गायन कला के लोक संस्कृति के रूप को हम अथर्ववेद में पाते है।

संगीत शब्द कि उत्पत्ति गीत शब्द से हुई है। गीत शब्द कि रचना संस्कृत के “गे” धातु से हुई है। इसी “गे” से गेय और गीत शब्द कि उत्पत्ति मानी गयी है। अर्थात कोई भी शाब्दिक अथवा स्वरित रचना जो गायी जा सके, उसे गीत कहते हैं। इसी आधार पर भारतीय संगीत में गीत शब्द के अवयव, लक्षण गीत, सरगम गीत, चैता, कजरी अथवा अन्य गोकगीत हैं।

गीत के तीन अवयव कहे जा सकते हैं- शब्द, स्वर, लय। इन्हीं तीनों काव्य के बहिर्पक्ष कि समष्टि के साथ-साथ काव्य के अंतरपक्ष अनुभूति के सम्मिश्रण के ही गीत कि उत्पत्ति हुई। यह शिद्ध सत्य है कि शास्त्रीय संगीत कि उत्पत्ति लोक संगीत से हुई है।

लोकगीतों में संगीत के तत्वों का विश्लेषण:

यह सत्य है कि लोक संगीत लोकाचारों और उससे उत्पन्न गीतों का प्राण है। भोले-भाले सरल ग्राम्य जीवन में यही मनोरंजन के साधन हैं, जिनमें ग्राम्य जीवन, उनकी सूझ

बुझ, उनकी चिंतन शक्ति, उनके दैनिक जीवन और सहज व्यक्तित्व कि अमिट छाप मिलती है। लोकसंगीत का मापदंड ही लोक जीवन है जो लौकिक होते हुए भी सरल, आनंदमय, अलौकिक है।

लोकगीतों में समाज, व्यक्ति और वातावरण का इतना प्रभाव पड़ा कि संगीत में स्वरों के ग्रह (जिस स्वर से प्रारम्भ करें) अंश (बीच का स्वर), न्यास (जिस स्वर से अंत करें) की प्रवृति गीत के भावानुकूल ही दिखलाई पड़ती है। यही कारण है की लोकधुनें अपने वातावरण के साथ समरस हैं। ये धुनें सहज एवं प्रकृतिक हैं। इनमें कृत्रिमता लेश मात्र भी नहीं है।

आदिकाल में भारतीय संगीत में तीन स्वरों का प्रयोग था- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। इन स्वरों के पश्चात माध्यम और पंचम स्वरों की परिकल्पना हुई। भारत मुनि के नाती शास्त्र के समय टक सप्त स्वरों की व्यवस्था हो चुकी थी। इस प्रकार हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के समय टक भारतीय संगीत काफी विकसित हो चुका था और इस समय तक गीतों की प्रारम्भिक अवस्था स्वर मुर्च्छनाओं, ग्राम राग, जाति गायन से होता हुआ राग रूप में प्रस्फुटित हो गया। भारतीय संगीत मैं सरगम का विशेष महत्व है।

लोकगीतों में पुरुषों द्वारा गाये गये गीत (श्रमगीत, जाति गीत, चैता आदि) एवं स्त्रियों द्वारा गाये गये (संस्कार गीत, श्रमगीत, ऋतुगीत आदि) की स्वर संयोजना में नितांत भिन्नता दिखाई पड़ती है। पुरुष वर्ग की गंभीर ध्वनि के साथ उनके स्वरों के चयन में भी गंभीरता दिखाई पड़ती है। इसमें ऋषभ और गांधार पर विशेष बल दिया जाता है। जैसे कि चैता, बिरहा, अहीरों का बिरहा धोबियों का, आदि कि स्वर संयोजना से स्पष्ट होता है।

स्त्रियों के गीत कोमल भावनाओं से इतने अधिक प्रभावित होते हैं कि इन द्वार लहरियों में मध्यम स्वर एवं पंचम स्वर के साथ सुद्ध (नि) अथवा कोमल (नि) का प्रयोग प्राप्त होता है। जैसा कि 'उलार', 'विवाह गीत' 'सहाना' आदि की स्वर संयोजन से स्पष्ट होता है। श्री कोमल कोठारी का कथन है-

“लोकतीत के संगीन में लय की सहज प्रवृत्ति की प्रधानता है। यहाँ लय का तलात्मक शास्त्रीय विधान नहीं है। शास्त्रीय संगीत में लय का विकास ताल की मात्राओं के सुनिश्चित गणन एवं गुणन कीग जटिलताओं में विभाजित रहता है किन्तु इसके विपरीत लोक संगीत में लय की सहज प्रवृत्ति माताओं के विशिष्ट भाग में विभाजित रहती है।”

ग्रामीण जनता निरक्षर होते हुए भी ज्ञान के सुनहरे रत्नों से परिपूर्ण है। उनका आदर्श है सार्वभौमिक मानव जीवन का ऐक्य। अनेक प्रान्तों, देशों, जनपदों की सीमाओं में विभक्त होते हुए भी इन लोकगीतों एवं उनकी रचनाओं में यथेष्ट समान्यताएँ प्रपट होती हैं। इन समान्यताओं का संबंध विसभिन्न जातिगत संस्कारों और उनकी आत्मानुभूति से संबन्धित भावों से है। विभिन्न भावों को नैसर्गिक सहजता के साथ व्यक्त करना इन लोकगीतों की शैली है। इन अभिव्यक्ति में शब्द, पंक्ति, छंद, गीत इन चारों को स्वर-रूपी एक सूत्र में गुंफित करने का सफल प्रयास लोकगीतों में मिलता है। लोकगीतों के शब्द और स्वर की सकती में तादात्म्य भाव है। उनका अन्योन्य संबंध है। जीवन की सहज अभिव्यक्ति स्वरों के सरल और सहज चयन के साथ इतनी घुल मिल गयी है कि शब्दों को पृथक नहीं किया जा सकता है। कुछ स्थल तो ऐसे आते हैं जहां इन नैसर्गिक शब्दों और स्वरों को लिपिबद्ध करना भी कठिन हो जाता है।

लोकगीतों में चंद और ताल का समन्वय

ताल: जीवन धरण करने के साथ ही मानव ताल का अभ्यास ग्रहण करने लगता है। श्वास-प्रशवास में एक तालमयता होती है। शरीर के विभिन्न अवयवों की प्रक्रिया मैं भी एक गति है।

“हृदय की धड़कन में भी एक ताल है। बोलने में लय का संतुलन है। हमारी चाल में एक प्रकार की ताल है। वास्तव में देखा जाय तो प्रतीत होगा कि ताल ही संगीत का वह संबल है जो मानुषी के मन को आग्रहपूर्वक संगीत के आनंद में लगाए रहता है। संगीत में साथ सुनने वाले या गाने वाले के तादात्म्य का प्रारम्भ भी ताल कि गति से होना संभव है।”

स्वराघात:- लोकगीतों में गायक अथवा गायिकाएँ जिस वर्ण अथवा स्वर पर ज़ोर देते हैं, उसे ही स्वराघात कहते हैं। छंद एवं ताल विश्लेषण के लिए इन स्वराघातों का विशेष महत्व है। गीतों के चलन और मात्राओं का प्रमाण इन्हीं स्वराघातों से मिलता है। ढोलक अथवा डफ वादक इन स्वराघातों पर विशेष ध्यान रखता है।

लोकगीत और वाद्य यंत्र : भारतीय संगीत में गीत के साथ गीत की गति को प्रदर्शित करने के लिए आवश्यकतानुसार समय-समय पर विविध वाद्य यंत्रों का आविष्कार हुआ पर यह कब और कैसे हुआ, यह भी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

ग्रामीण गीत : शष्ट्रीय संगीत से भिन्न होते हुआ भी इनमें लय, ताल और धुन का इतना सुंदर सहयोग होता है कि किसी एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। लोकगीतों के साथ प्रमुख रूप से ढोलक का प्रयोग होता है।

लोकसंगीत पर बजरवाद निरंतर हावी होता जा रहा है। इससे उसकी सहजता और मौलिकता बहुत तेजी से प्रभावित हो रही है। मूल लोकधुनें लुप्त हो रही हैं, इन विसंगतियों को रोकने हेतु इस पर ध्यान देने और सतर्क रहने कि आवश्यकता है। यह काम सरकारी स्तर पर भी होना चाहिए और लोक संगीत के अध्येताओं को और उसके प्रति समर्पित लोगों को भी व्यक्तिगत प्रयास करने की अपरिहार्यता आज अनुभव की जा रही है।

अध्याय -2

मगही लोकगीत

आदिम काल से लोकजीवन में लोकगीत बनते बिगड़ते और विकसित होते रहते हैं। लोककण्ठ इसे अभिव्यक्त करते रहा है। आनुष्ठाणिक कार्यों में लोकगीतों के गायक की प्रचुरता रही है। इस प्रकार से लोकगीत काल के विकराल अंतराल को बेधते हुए आज भी अपने विशिष्ट रूप में वर्तमान है। इंका मौलिक तत्व और मौखिक परंपरा हजारों-हज़ार वर्ष से कायम है परंतु लेखबद्ध नहीं होने के कारण इसका प्रामाणिक इतिहास-भूगोल नहीं मिलता है। इसके अतीत अस्तित्व की जानकारी के लिए किसी देश के परिनिष्ठित साहित्य का अध्ययन- विश्लेषण अपेक्षित होता है। अन्य देशों की तरह भारतीय लोकगीतों की परंपरा भी मौखिक रही है। अतः इसके अतीत अस्तित्व की जानकारी के लिए प्राचीनतम वैदिक संहिताओं का अवलोकन करना पड़ता है।

भारतीय लोकगीतों की परंपरा की तरह ही मगही लोकगीतों की भी परंपरा रही है। मगही लोकगीत का वेर्गीकरण अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से किया है, जो मुख्य रूप से निम्न है:-

(क) संस्कार गीत;

(ख) क्रिया गीत;

(ग) ऋतु गीत;

(घ) देव गीत;

(ङ) बाल गीत;

(च) विविध गीत।

मगही लोकगीतों के प्रमुख वाहक तत्व उसके (1) गायक; (2) श्रोता; और (3) अभिव्यक्ति की शैली या प्रकार होते है। गीतों का प्रमुख तत्व गायक होता है क्योंकि गायक के आभाव में गीत की अभिव्यक्ति कैसे होगी? ये गायक पुस्तक की तरह हैं जिससे गोकगीत पढ़ा या सुना जाता है। परंतु गायक पुस्तक की तरह सहज प्राप्य नहीं। ऐसे गायक प्रायः दो वर्गों में पाये जाते हैं (1) स्त्री वर्ग और (2) पूरुष वर्ग। मैंने जीतने लोकगीतों का संकलन किया है उनमें स्त्रीवर्ग की प्रधानता रही है। ये स्त्रियाँ अपने घर

की हो सकती है या प्रत्येक गाँव में 1-2 चर्चित गायक स्त्रियाँ है जिसके पास गीतों का भंडार रहता है।

लोकगीतों के निर्माण तंतुओं का दूसरा तत्व श्रोता है। सभी प्रकार के गायकों के लिए श्रोता की आवासयकता होती है, और यक एक अनिवार्य तत्व है।

लोकगीत का तीसरा तत्व है अभिव्यक्ति की शैली या प्रकार। गीतों की अभिव्यक्ति या गायन का ढंग अपना अलग होता है। गीत को गायक से सुनने की सही आनंद आता है, पढ़ने पर वैसा आनंद नहीं आता क्योंकि इनके अपने सुर और लय होते हैं।

मगही लोकगीत के संकलन के क्रम में जो लोकगीत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिला उसे संकलित कर लिया जो निम्न है:-

विषय वस्तु एवं उपयोगिता की दृष्टि से मगही लोकगीतों का विशाल भंडार पूजा-पाठ, देवगीत, संस्कार गीत आदि अनुष्ठानिक गीतों के अंतर्गत आहें है। संस्कार गीत-बालक-बालिकाओं के जन्मोत्सव, मुण्डन, पूजन, जनेउफ तथा विवाह, आदि पर गाये जाने वाले संस्कार गीत हैं-सोहर, खेलौनो, कोहबर, समुझ बनी, आदि।

सोहर घर में संतान होने पर गाया जाने वाला मंगल गीत है। इसको संतान के जन्म और उससे संबंधित अवसरों जैसे सतमासा, इत्यादि अवसरों पर गाया जाता है। इन गीतों में संतान के जन्म, उससे संबंधित कहानियों और उत्सवों के सुंदर वर्णन मिलते हैं। राम जन्म और कृष्ण जन्म की सुंदर कथाएँ भी सोहरों में हैं। राम के जन्मदिन रामनवमी और कृष्ण के जन्मदिन कृष्णाष्टमी के अवसर पर भी भजन के साथ सोहर गाने की परंपरा है।

सोहर गीत

गीत-1

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन धनवन हो
तेहि तर ठाढ़ हिरिनिया त मन अति अनमन हो।।
चरतहिं चरत हरिनवा त हरिनी से पूछेले हो
हरिनी ! की तोर चरहा झुरान कि पानी बिनु मुरझेलु हो।।
नाहीं मोर चरहा झुरान ना पानी बिनु मुरझींले हो
हरिना ! आजु राजा के छठिहार तोहे मारि डरिहें हो।।
मचियहिं बइठल कोसिला रानी, हरिनी अरज करे हो
रानी ! मसुआ त सींझेला रसोइया खलरिया हमें दिहितू नू हो।।
पेड़वा से टाँगबो खलरिया त मनवा समुझाइबि हो
रानी ! हिरीफिरी देखबि खलरिया जनुक हरिना जियतहिं हो
जाहु हरिनी घर अपना, खलरिया ना देइब हो
हरिनी ! खलरी के खँजड़ी मढ़ाइबि राम मोरा खेलिहेनू हो।।
जबजब बाजेला खँजड़िया सबद सुनि अहँकेली हो-
हरिनी ठाढि ढेकुलिया के नीचे हरिन के बिजूरेली हो।।

गीत-2

मचिया बइठल तुहूँ सासु, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
सासु, सपन देखलूँ अजगूत, बालक एक सुन्नर हे॥1॥
चुप रहुँ चुप रहुँ, पुतहू, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
पुतहू सुनि पइँहें गँमवा के लोग करतइ उपहाँस तोरो हे॥2॥
आज हकइ सोने के रात, बबुआ एक जलम लेता हे।
पुतहू, आज चानी केरा रात, होरिलवा जलम लेता हे॥3॥
घड़ी रात बीतल पहर रात, अउरी अधिए रात हे।
ललना, जलम लिहल नंदलाल, महल उठे सोहर हे॥4॥
सासु मोरा उठलन गवइत, ननद बजइवत हे।
ललना, सामीजी त मालिन फुलवरिया, मालिन सँग सारी खेलथ हे॥5॥

ऐहो एहो राजा दुलरइता राजा, सुनहऽ बचन मोरा हे।
राजा, तोहरा के भेलो नंदलाल, महल उठे सोहर हे॥6॥
पसवा त गिरलइ बेल तर, कउरिया बबूर तर हे।
राजा, चलि भेलन अपन महलिया, महल उठे सोहर हे॥7॥
कोठे चढ़ि देखथिन दुलरइतिन, झर रे झरोखे लगी हे।
चेरिया, आज रे उजाड़ी देहीं बगिया, त फूल छितराइ देहीं हे॥8॥
महल में जुमलइ मलिनियाँ, त कर जोड़ी खाड़ा भेलइ हे।
रानी, काहे लागी उजड़हइ बगिया, त काहे लागी फूल छितरहइ हे॥9॥
काहे लागी बाँधहहु मलिया, त काहे लागी लोरझोर हे।
रानी, बरजहु अपन कोठीवाल, बगिया मत सून करूँ हे॥10॥
मैं तोरा पूछूँ मलिनियाँ, त सुनहऽ बचन मोरा गे।
मालिन, कइसे कइसे कयलें बिलास, मोरा के समुझाय देंही गे॥11॥
रसेरसे- बेनियाँ डोलौलूँ, आउ फूल छितराउलूँ हे।
रानी, भउँरे रूपे राजा उहाँ गेलन, सभे रस चूसि लेलन हे॥12॥

गीत-3

पहिला दरद जब आयल सासु के बोलबल हे।
सासु, मिलि लेहु बाड़ा छछन्न से, बाड़ा ललक से हे॥1॥
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी ना पेन्हबो हे।
पिया के सेज न जायबो, पिया के सुध लीहट तूँहीं॥2॥
दूसरा बेदन जब आयल, गोतनी के बोलावल हे।
गोतनी, मिलि लेहु बाड़ा छन्नन से, बाड़ा ललक से हे॥3॥
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी ना पेन्हबो हे।
पिया के मुँह न देखबो, पिया मन बोधिहऽ तूंहीं॥4॥
तेसरा बेदन जब उठल, ननद के बोलावल हे।
ननदो, मिलि लेहु बाड़ा छछन्न से, बाड़ा ललक से हे॥5॥
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी न पेन्हबो हे।
पिया सँग अब न सुतबों, सुतिहऽ अब तूँहीं॥6॥
चउठा दरद जब आयल, जलमल नंदलाल हे।

अब त सासु हम जीली छछन से, जीली ललक से हे॥7॥
अब सोंठ पीपर हम पीबो, पियरी हम पेन्हबो हे।
अब पिया पास हम जयबो, पिया के बोला देहु हे॥8॥

गीत-4

सासु जे गेलन दाल दरे हे, ननद जे गेलन पानी भरे।
हमें प्रभु छेकलन डेउढ़िया, अब धनि असगर हे॥1॥
सासु जे अयलन दाल दर के, ननद जे अयलन पानी भर के हे।
बहुआ, काहे तोर मुँहवा पियरायल, देह दुबराएल हे॥2॥
लाज सरम के बात सासु कहलो न जाय, सुनलो न जाय।
सासुजी, तोहर बेटा छेकलन डेउढ़िया, त बहियाँ मुरूकि गेल हे॥3॥
जब हम जनती धनि कि लउरी बारी, अउरो दुलारी बारी।
लरिके में गवना करइती, बिदेस चलजइती बिरहिआ नहीं सुनती हे॥4॥

गीत-5

कउन बाबू के बगिया लगावल, जलथल हरियर हे।
ललना, कवन बाबू हथि रखवार, कउन चोर चोरी कयलन हे॥1॥
बाबा मोरा बगिया लगावल, जलथल हरियर हे।
ललना, मोरा भइया हथि रखवार, साहेब चोर चोरी कयलन हे॥2॥
एक फर तोड़ले दोसर फर, अउरो तेसर फर हे।
ललना, जागि पड़ल रखवार, दउना डारे बाँधल हे॥3॥
सोबरन के साँटी चोरवा के मारल, रेसमे डोरो बाँधल॥4॥
घरवा से इकसल जचा रानी, इयरी पियरी पेन्हले हे।
गोदिया में सोभइ एगो बालक, नयन बीच काजर हे॥5॥
भइया हमर बीरन भइया, सुनहु बचन मोरा हे।
भइया, चोरवा हइ सुकुमार फुलुक डोरी बाँधिहऽ, सोबरन साँटि छुइह हे॥6॥

गीत-6

पियवा, हो पियवा, तू ही मोरा साहेब हो पियवा।
पियवा, जे बघिया एक लगइत, टिकोरवा हम चखती हो॥1॥
धनियाँ, हे धनियाँ, तूहीं मोरा सुन्दर हे धनियाँ।
धनियाँ, बेटवा जे एक बियइतऽ सोहरवा हम सुनती हे॥2॥
बेटवा जे होअ हे करम से जे ऊ राम बूझथ हे।
बघिया जे होअ हे आदमी से, आउर मानुस से॥3॥
ओरिया काटि नेहयलन, सुरूज गोड़वा लगलन हे।
हमें पर आदित होअ न देआल, पियवा मोरा ओलहन हे॥4॥
आधी राति गइले, पहर राति, होरिल जलम ले ले हे॥5॥
अँगना बहारइत चेरिआ, सुनहु बचन मोरा हे।
चेरिया, प्रभुजी के सेजिया डँसाव त पियवा सुनिहें सोहर हे॥6॥

गीत-7

ननदी भौजइया मिलि पनिया के चलली, जमुन दह हे।
ननद, जब होतो मोरा नंदलाल, बेसर पहिरायब हे॥1॥
देबो मैं देबो तोरा ननदो हे, भइया के पियारी हहु हे।
ननद, जब होतो मोरा नन्दलाल, बेसर पहिरायब हे॥2॥
आधी रात बितलइ पहर रात, होरिला जनम लेलन हे।
भउजो, अब भेलो तोरा नंदलाल, बेसर पहिराबहु हे॥3॥
कहली हल हे ननद, कहली हल, भइया के दुलारी हहु हे।
ननद, नइ देबो तोहरा के बेसर, बेसरिया नइए देबो हे॥4॥
सभवा बइठल तोहें बाबूजी, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
बाबूजी, तोर पुतहू कहलन बेसरिया, बेसरिया दिलाइ देहु हे॥5॥
सउरी पइसल तुहूँ पुतहु न, सुनहऽ बचन मोरा हे।
पुतहु, देइ देहु नाक के बेसरिया, त बेटी घर पाहन हे॥6॥
नइ देबइ, नइ देबइ, नइ देबइ, हम नकबेसर हे।

बाबूजी, बेसर मिलल हे दहेज, बेसरिया नइए देबइ हे॥7॥
पोथी पढ़इते तुहूँ भइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
भइया, तोर धनि कहलन बेसरिया दिलाइ देहु हे॥8॥
सउरी पइसल तुहुँ धनियाँ, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
धनि, देइ देहु अपन बेसरिया, बहिनी घर पाहुन हे॥9॥
नइ देबइ, नइ देबइ, नइ देबइ, नइ नकबेसर हे।
प्रभु हम कहाँ पयबो बेसरिया, बेसरिया हेराय गेलो[8] हे॥10॥
चुप पहु, चुप रहु बहिनी, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
बहिनी, करबो में दोसर बिआह, त बलका पोसाय देहु हे॥11॥
लगे देहीं हाजीपुर बजरिया, बेसर हम लाइ देबो हे।
बहिनी, इनखा के देबइन बनवास, से चुप रहु, चुप रहु हे॥12॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहुँ न पावल हे।
धनि, नकिया से काढ़ि के बेसरिया भुइयाँ फेंकि देलन हे॥13॥
लेइ जाहु, लेइ जाहु, लेइ जाहु मोर नकबेसर हे।
ननदो, बनि जाहु मोर सउतिनियाँ, जे घर से निकासल हे॥14॥
काहे लागी लेबो बेसरिया, बेसरिया तोहरे छाजो हे।
भउजो, जीये मोर भाइ भतीजवा, उगल रहे नइहर हे।
काहे लागी दोसरा बिआह करबऽ, काहे लागी बेसर हे।
भइया, लेइ तोर रोगबलइया- हमहीं जइबे सासुर हे॥16॥

गीत-8

घर घर डोलऽहे नउनियाँ, त हाथ ले महाउर हे।
राजा, मोरा तूँ रँगा दऽ पियरिया महल उठे सोहर हे॥1॥
जसोदा जी नंद के बोलाय के सभे हाल पूछल हे।
राजा, गुनी सभ अधिको न जाँचथि, हिरदा जुड़ाइ देहु ना॥2॥
नंद कयलन धनदान से मन हरखायल हे।
गेयानी गुनी सभ भेलन नेहाल अउरो कुछ चाहिए हे ॥3॥
किया तोरा चाह हउ नउनियाँ, माँगु मुँह खोली खोली गे।
नउनियाँ, देबऊ में अजोधेया के राज, आउरो कछु चाहही गे॥4॥

हँसि हँसि बोलहइ नउनियाँ त सुनहु बचन मोरा हे।
राजा हम लेबो सोने के सिकड़िया, अजोधेया राज की करब हे?॥5॥
जसोदा जी देलकन सिकड़िया, रोहन गल हाँसुल हे।
राजा देलन पाट पिताम्बर, महल उठे सोहर हे॥6॥
आवहु नयना से गोतनी अउरो सभ सुन्नर हे।
गावहु आज बधइया, महल उठे सोहर हे॥7॥
बूढ़ीं सूढ़ी देलकन असिसववा जुअहु पूत पंडित हे।
ललना, सुनरी के नयना जुड़ायल लोग बाग हरखित हे॥8॥
जे इह सोहर गावल, गाइ सुनावल हे
ललना जलम जलम अहियात, पुतर फल पावल हे॥9॥

गीत-9

रामचंदर जलम लेलन चइत रामनमी के॥1॥
डगरिन जे नेग माँगइ, नार के कटाइ।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥2॥
नाउन जे नेग माँगे, पैर के रँगाइ।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥3॥
धोबिन जे नेग माँगे, फलिया के धोबाइ।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥4॥
फूआ जे नेग माँगे आँख के अँजाइ।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥5॥
दाई जे नेग माँगे, सौरी के झोराइ[11]।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥6॥

गीत-10

हम नहीं पूजबइ बरहिया, भइया नहीं अयलन हे॥1॥
अँगना बहारइत चेरिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।

चेरिया, देखि आवऽ हमरो बीरन भइया, कहुँ चलि आवत हे॥2॥
दूरहिं घोड़ा हिंहिंआयल, पोखरिया घहरायल हे।
गली गली इतर धमकी गेल, भइया मोरा आयल हे॥3॥
मचिा बइठल तोहें सासुजी, सुनहऽ बचन मोरा हे।
अब हम पूजबो बरहिया, भइया मोर आयल हे॥4॥
सासुजी, कहँमाहि धरियई दउरिया, कहाँ रे ई सोठाउर हे।
सासुजी, कहाँ बइठइअइ बीरन भइया, देखतो सोहावन हे॥5॥
कोठी काँधे रखिहऽ दउरिया, कोठिल बीच सोठाउर हे।
बहुआ अँचरे बइठइहऽ बीरन भइया, देखत सोहावन हे॥6॥
ओहरी बइठल दुलरइतिन ननदो, मुँह चमकावल हे।
जे कछु कोठिया के झारन, अँगना के बाढ़न हे।
भउजी सेहे लेके अयलन बीरन भइया, देखते गिलटावन हे॥7॥

गीत-11

अँगना में बतासा लुटायम हे, अँगना में॥1॥
सासू जे ऐतन देवोता मनौतन।
उनका के पीरी पेन्हायम हे, अँगना में॥2॥
देवोतो मनावे में कसरमसर- करतन।
धीरे से पीरी उतार लेम हे, अँगना में॥3॥
गोतिनी जे ऐतन पंथ रँधौतन।
उनको के पीरी पेन्हायम हे, अँगना में॥4॥
पंथ रँधावे में कसरमसर करिहें।-
धीरे से पियरी उतार लेम हे, अँगना में॥5॥
ननद जे ऐतन आँख अँजौतन।
उनको के कँगना पेन्हायम हे, अँगना में॥6॥
आँख अँजौनी में कसरमसर करतन।-
धीरे से कँगना उतार लेम हे, अँगना में॥7॥

गीत-12

जसोदा तोहर भाग बड़ा लहबर नंदरानी
देवोकी तोहर भाग बड़ा लहबर हे रानी॥1॥
काहाँ जलमलन हे जदुनन्नन, काहाँ बाजत हे बधावा नंदरानी।
देवोकी घर में जलमलन जदुनन्नन, गोकुला में बाजत बधावा नंदरानी॥2॥
काहे के छूरी से नार छिलायल, काहे के खपर नेहलायल नंदरानी।
सोने के छूरी से नार छिलायल, रूपे के खपर नेहलायल नंदरानी॥3॥
काहे के उजे अँगिया टोपिया, केकरा के तू पहिरयबऽ नंदरानी।
रेसमी के उजे अँगिया टोपिया, केकरा के तू पहिरयबऽ नंदरानी।
रेसमी के उजे अँगिया टोपिया, अपन लाला के पहिरायब नंदरानी॥4॥
केरे लुटवथि अन, धन, लछमी, केरे लुटावथि मोती नंदरानी।
नंद लुटावथि अन, धन, लछमी, जसोदा लुटावथि मोती नंदरानी॥5॥
अइसन जलम लिहल जदुनन्नन, घर बाजे बधावा नंदरानी॥6॥

गीत-13

साड़ी न लहँगा लहरदार लेबो भउजो हे।
चोली न अँगिया बूटेदार लबो भउजो हे॥1॥
कँगना न लेबो, पहुँची न लेबो।
बाला तो लेबो चमकदार, सुनु भउजो हे॥2॥
रुपया न लेबो, अठन्नी न लेबो।
गिन्नी तो लेबो हम हजार, सुनु भउजो हे॥3॥
चानी न लेबो, सोना न लेबो।
हम लेबो गिनि गिनि लाल, सुनु भउजो हे॥4॥
जुग जुग जीओ भउजो, तोहरो होरिलवा।
जुगजुग बढ़ो अहियात-, सुनु भउजो हे॥5॥

गीत-14

परथम गनेस पद बंदि के, कुसल मनावहु हे।

ललना, बिघन हरन गननायक, सोहर गावहु हे॥1॥

परथम मास जब बीतल, दोसर नियरायल हे।

ललना, तेसर मास जब आयल, चित फरियाल हे॥2॥

चउठा मास चढ़ि आयल, पचमा बितिये गेल हे।

ललना, छठे मास निरायल, गरम जनायल हे॥3॥

सतमा मास जब आयल, अठमा नियरायल हे।

ललना, नवमा मास जब आयल, होरिला जलम भेल हे॥4॥

भादो के रइनी भेयामन, बिजुली चमक उठे हे।

ललना, तेहि छन परगटे नंदलाल, महल उठे सोहर हे॥5॥

चन्नन लकड़ी कटायम, मंगल गायम हे।

ललना, अरबे से दरबे लुटायम, सभ सुख पायम हे॥6॥

सासु के देम तीसी तेलवा, ननद केरा गड़ी तेल हे।

गोतनी के तेलफुलेत-, गोतिनियाँ के देललेल- हे॥7॥

सासु के देम खटोलवा, ननदी मचोला देम हे।

ललना, गोतनी के लाल पलँगिया, हमहुँ पइँचा लेम हे॥8॥

सासु के देम इयरिपियरि- ननदिया के साड़ी देम हे।

ललना, गोतनी के लहँगापटोर-, हमहुँ कबहुँ पइँचा लेम हे॥9॥

गीत-15

साँवन के सहनइया भदोइया के किचकिच- ए।

सुगासुगइया- के पेट, बेदन कोई न जानये हे।

सुगासुगइया के पेट-, कोइली दुख जानये हे॥1॥

अँगना बहारइत चेरिया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।

चेरिया, मोरा परभु बइठल बँगलवा, से जाइके बोलाइ देहु हे॥2॥

जुगवा खेलइते तोंहों बबुआ, त सुनहऽ बचन मोरा हे।

बबुआ, रउरे धनि दरदे बेयाकुल, रउरा के बोलाहट हे॥3॥

पसवा त गिरलइ बेल तर, अउरो बबूर तर हे।

ललना, धाइ पइसल गजओबर, कहऽ धनि कूसल हे॥4॥
डाँड़ मोरा फाट हे कसइली जाके, ओटिया चिल्हकि मारे हे।
परभुजी, बारह बरिसे मइया रूसल, सेहो बउँसी लाबह हे॥5॥
मचिया बइठल तोहें मइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
मइया, तोर पुतहू दरद बेयाकुल, तोरा के बोलाहट हे॥6॥
तुहूँ त हऽ मोर बबुआ, त रउरो बंसराखन हे।
बबुआ, तोर धनि बचन कुठार, बोलिया करेजे साले हे॥7॥
सउरिया बइठल तोहें धनिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
धनि, बारह बरिस मइया रूसल, कहल नहिं मानये हे॥8॥
लेहु परभु नाक के बेसरिया त मइया के समद दहु हे।
परभुजी, बारहे बरिस चाची रूसल, उनखे समद दहु हे॥9॥
मचिया बइठल तोहे चाची, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चाची, तोर पुतहू दरद बेयाकुल, तोरा के बोलाहट हे॥10॥
सामन के समनइया तो, भादो के किचहे। किच-
बबुआ, वह हकइ पुरबा से पछेया, जड़इया मोरा लागये हे॥11॥
घड़ी रात गेलइ पहर रात होरिला जलम लेल हे।
ललना, बज लगल अनन्द बधावा, महल उठे सोहर हे॥12॥
अँगना बहारइत चेरिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चेरिया, झट दए बाँटऽन सोंठउरा से होरिला जलम लेल हे॥13॥

गीत-16

रुनुक झुनुक बिछिया बाजल, पिया पलँग पर हे।
ललना, पहरि कुसुम रँग चीर, पाँचो रँग अभरन हे॥1॥
जुगवा खेलइते तोंहे देवरा त, सुनहऽ बचन मोरा हे।
देवरा, भइयाजी के जलदी बोलावऽ, हम दरदे बेयाकुल हे॥2॥
जुगवा खेलइते तोंहे भइया त, सुनहऽ बचन मोरा हे।
भइया, तोर धनि दरद बेयाकुल, तोरा के बोलावथु हे॥3॥
पसवा त गिरलइ बेल तर, अउरो बबूर तर हे।
ललना, धाइ के पइसल गजओबर, कहु धनि कूसल हे॥4॥
डाँर मोर फाटहे करइली जाके, ओटिया चिल्हकि मारे हे।

राजा, का कहूँ दिलवा के बात, धरती मोर अन्हार लागे हे॥5॥
घोड़ा पीठे होबऽ असवार त डगरिन बोलवहु हे॥6॥
हथिया खोलले हथिसरवा, त घोड़े घोड़सार खोलल हे।
राजा, घोड़े पीठ भेलन असवार, त डगरिन बोलावन हे॥7॥
के मोरा खोले हे केवड़िया त टाटी फुरकावय हे।
कउन साही के हहु तोही बेटवा, कतेक राते आयल हे॥8॥
हम तोरा खोलऽ ही केवड़िया त टाटी फुरकावहि हे।
डगरिन, दुलरइता साही के हम हीअइ बेटवा, एते राते आयल हे॥9॥
किया तोरा माय से मउसी सगर पितियाइन हे।
किया तोरा हथु गिरिथाइन कते राते आयल हे॥10॥
न मोरा माय से मउसी, न सगर पितिआइन हे।
डगरिन, हथिन मोर घर गिरिथाइन एते राते आयल हे॥11॥
हथिया पर हम नहीं जायब, घोड़े गिरि जायब हे।
लेइ आबऽ रानी सुखपालक, ओहि रे चढ़ि जायब हे॥12॥
जवे तोरा होयतो त बेटवा, किए देबऽ दान दछिना हे।
जबे तोरा होयतो लछमिनियाँ, त कहि के सुनावह हे॥13॥
डगरिन, जब मोरा होयतो त बेटवा, त कान दुनु सोना देबो हे।
डगरिन, जब होयत मोरा लछमिनियाँ, पटोर पहिरायब हे॥14॥
सोने के सुखपालकी चढ़ल डगरिन आयल हे।
डगरिन बोलले गरभ सयँ, सुनु राजा दसरथ ए॥15॥
राजा, तोर धनि हथवा के साँकर, मुहँवा के फूहर हे।
नहीं जानथू दुनियाँ के रीत, दान कइसे हम लेबो हे॥16॥
काहेला डगरिन रोस करे, काहेला बिरोध करे हे।
डगरिन हम देबो अजोधेया के राज, लहसि घर जयबऽ हे॥17
इयरी पियरी पेन्हले डगरिन, लहसि घर लउटल हे।
जुगजुग जियो तोर होरिलवा-, लबटि अँगना आयब हे॥18॥

गीत-17

कहँमा हि लेमुआ के रोपब, कहमा अनार रोपब हे।
कहँमाहि रोपब नौरंगिया, से देखिदेखि जीउ भरे हे॥-1॥
अँगनाहि रोपबइ से लेमुआ, खिरकी अनार रोपब हे।
दरोजे पर रोपबइ नौरंगिया, से देखिदेखि जीउ भरे हे॥-2॥
लटकल देखलूँ लेमुआ त, पकल अनार देखलूँ हे।
गोले गोले देखलूँ नौरंगिया, जचा रे दरद बेयाकुल हे॥3॥
समना भदोइया केरा रतिया, त हारिला जलम लेलन हे।
बजे लागल अनन्द बधाबा त महल उठे सोहर हे॥4॥
कउन बन फूलहइ गुलबवा त कउन बन कुसुम रँग हे।
कउन देइ के रँगतइ चुनरिया, त देखते सोहावँन हे॥5॥
कुंज बन फूलहइ गुलबवा त कुरखेत कुसुम फूलइ हे।
सुगही के रँगब चुनरिया, त देखत सोहावँन हे॥6॥

गीत-18

पाँचपाँच पनवाँ के बिरवा- त बिरवा सोहामन जी।
अजी ननद, एहो बिरवा भइया जी के हाथे त मैया के मनावहु जी॥1॥
कि अजी भउजी, नाउन, कि अजी भउजी, भाँटिन।
कि अजी भउजी, तोरा बाप के चेरिआ जी॥2॥
न एजी ननद, नाउन, न एजी ननद, भाँटिन।
न एजी ननद, मोरा बाप के चेरिया जी।
अजी ननद, मोरा प्रभु जी के बहिनी, ननद बलु लगबऽ जी॥3॥
जुगवा खेलइते भइया, बेलतेरे, अउरो बबुरतरे जी।
अजी भइया, प्राण पेयारी मोर भउजिया, त केसिया भसमलोटे जी॥4॥
जुगवा छोरलन राजा बेलतरे, अउरो बबुरतरे जी।
कि अरे लाला, भाई चलले, गजओबर, कहू जी धनि कूसल हे॥5॥
लाज सरम केरा बात, कहलो न जाय, सुनलो न जाय।
कि अजी प्रभु, मरलों करमवा के पीरा त ओदर चिल्हकि मारे हे॥6॥
कहितऽ त अजी धनियाँ, जिरवा के बोरसी भरइतों, लवँगिया के पासँघ जी।

कहितऽ त अजी धनियाँ, अपन अम्माँ के बोलइतों, रतिया सोहानन जी॥7॥

कहितऽ त अजी धनियाँ, सोए रहूँ, अउरो बइठि रहूँ।

अजी धनि, मानिक दीप बरएबों त रतिया सोहावन जी॥8॥

न कहुँ अजी प्रभुजी, सोए रहु, न कहुँ बइठि रहु।

अजी प्रभु, बुति जइहें मानिक दीप, रतिया भेयावन जी॥9॥

बुति जइहें जीरवा के बोरसी, लवंगिया के पासँघि जी।

अजी प्रभु, सोए जइहें तोहर अम्माँ, त रतिया भेयावन जी॥10॥

हम त जनति धनि, बिरही बोलित, अउरो बिरही बोलित जी।

अजी धनि, लरिके मैं गवना करइती, विदेस चलि जइती, बिरही नहीं सुनती जी॥11॥

गीत-19

लिपि पोति अयलो कोठरिया, चननवाँ छिरकि अयलों हे।

ए ललना, घुमि फिरि अयलन रघुनन्नन, सेजिया मोहि डँसि देहु हे॥1॥

सोनहिं के मोरा नइहर, ओरियनि,ओलती चुए हे।

ए ललना, सातहिं भइया के हम बहिनियाँ, सेजियवा हम कइसे डाँसब हे॥2॥

एतना बचन राजा सुनलन, सुनहुँ न पवलन हे।

ए ललना, चढ़ि गेलन घोड़े असवार, मधुबन जायब हे॥3॥

एतना बचन धनि सुनलन, सुनहुँ न पवलन हे।

ए ललना, धरि लेलन घोड़े के लगाम, हमहुँ जोउरे जायब हे॥4॥

सोनहिँ के तोरा नइहर, ओरियनि मोती चुए हे।

ए धनि, सातहिँ भइया के तुहूँ बहिनियाँ, कइसे तुहूँ बन जयबो सेजिया डाँसब हे॥5॥

फिरहुँ फिरहुँ ए राजा जी, फेनुकै सेजिया डाँसब हे॥6॥

लिपि पोति अयलो कोठरिया, चननवा छिरकि अयलों हे।

ए ललना, डाँसि जे देलो लाली पलँगिया, सोवहु राजा रघुनन्नन हे॥7॥

गीत- 20

पिपरी लेके सासु खड़ी, पिपरिया पीले बहू।
हो जयतो होरिलवा ला दूध, पिपरिया पीले बहू॥1॥
पिपरी पीते मोरा होठ हरे, मोरा कंठ जरे हे।
हिरदय कमलवा के फूल पिपरिया मैं न पिऊँ॥2॥
पिपरी जेके भउजी खड़ी, चाची खड़ी।
पुरतो होरिलवा के साध, पिपरिया पीले बहू॥3॥
पिपरी पीते मोरा आँख जरे, नयना लोर ढरे।
पिपरी न कंठ ओल्हाय पिपरिया मैं न पिऊँ॥4॥

गीत- 21

किसुन जलम अब भेल, बधावा अब लेके चलऽ।
गावत मंगलचार, सभे मिलि लेके चलऽ॥1॥
तेलिन लयलक तेल, तमोलिन बीरवा।
मालिन लौलक गुथि हार, जसोदा जी के आँगनऽ॥2॥
धनधन पंडित लोग-, धने जोग रोहिनी।
धन भादों के रात, कन्हइया जी के जलम भेलइ॥3॥
धन जसोदा तोर भाग, कन्हइया तोरा गोद खेले।
हरखहि बरखहिं देओ, आनन्द घरे घर मचल।
लुटवत अनधन धान, निहुछि के निछावर॥4॥
कउची के लगल पलना, कउची लागल हे डोर।
के रे डोलाबे बउआ पलना, के रे झूलनहार॥5॥
अगरचनन केरा पलना-, रेसम लागल हे डोर।
जसोदा डोलाबथि पलना, किसुन झूलनहार॥6॥
सले सले झूलहइ पलना, मइया देखथि रूप।
नंद लुटावथि संपति, सभ भेलन नेहाल।
गावथि सुर मुनि कीरति, सिव नाचथ दे ताल॥7॥

जे इह सोहर गावथि, गाइ देथिन सुनाय।
अनधन बाढ़थि लछमी, बाढ़े कुल, अहियात॥8॥
बाँझ के मिलइ पुतर फल, भरइ मरछि के गोद।
जलम जलम फल पावहिं, पूरइ सभ मनकाम॥9॥

गीत- 22

साड़ी न लहँगा लहरदार लेबो भउजो हे।
चोली न अँगिया बूटेदार लबो भउजो हे॥1॥
कँगना न लेबो, पहुँची न लेबो।
बाला तो लेबो चमकदार, सुनु भउजो हे॥2॥
रुपया न लेबो, अठन्नी न लेबो।
गिन्नी तो लेबो हम हजार, सुनु भउजो हे॥3॥
चानी न लेबो, सोना न लेबो।
हम लेबो गिनि गिनि लाल, सुनु भउजो हे॥4॥
जुग जुग जीओ भउजो, तोहरो होरिलवा।
जुगजुग बढ़ो अहियात-, सुनु भउजो हे॥5॥

गीत- 23

मचिया बइठली तोंही मइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
मइया, हमहूँ लीपलियइ त सउर, हमहूँ कछु दान चाही हे॥1॥
सउरी पइसल तोंहे बहुआ, त सुनहऽ बचन मोर हे।
बहुआ, देइ देहु नाक के बेसरिया, दुलारी धिया पाहुन हे॥2॥
एतना बचन जब सुनलन, सासु से अरज करे हे।
सासुजी हम कहाँ पयबो बेसरिया, बेसरिया हेराइ गेल हे॥3॥
जुगवा खेलइते तोंहे भइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
भइया हमरा के दान किछु चाही, सउर हम लीपलि हे॥4॥
एतना बचन जब सुनलन, धनि से कहे लगलन हे।

धनि देइ देहु नाक के बेसरिया, बहिन घर पाहुन हे॥5॥
एतना बचन जब सुनलन, परभु से अरज करे हे।
परभुजी, कहाँ हम पायब बेसरिया, बेसरिया भुलाई गेल हे॥6॥
चुप रहु, चुप रहु बहिनी, त बहिनी दुलारी बहिनी हे।
कर लेबो दोसर बिआह, बेसर पहिरायब हे॥7॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पावल हे।
परभुजी, मत करू दोसर बिआह, बधइया हम देइ देवइ हे॥8॥

गीत- 24

घरवा से इकसल जसोदा रानी, सुभ दिन सामन हे।
ललना, जमुना के इरि झिरि पनियाँ सोहामन हे॥1॥
सात पाँच मिलल‍न सँघतिया से सोने घइला माथे लेलन हे।
गावहिं मंगल गीत, देखत सुर मोहहिं हे॥2॥
केउ सखी मुँह धोवे, केउ सखी हँसि हँसि पानी भरे हे।
ललना, केउ एक पार तिरियवा कपसि लोर ढारइ हो॥3॥
नइ हकइ नावोड़िया अउरो मलहवा भइया हे।
ललना, केहि विधि उतरब पार, तिरिया एक रोवइ हे॥4॥
बाँधि के काँछ कछौंटा अउर छाती घइला लेइ हे।
जाइ जुमल जमुना पार, काहे गे तिरिया रोवहिं गे॥5॥
की तोर नइहर दूर कि सासुर दुख पड़ल हे।
तिरिया, की तोर कंत बिदेस कवन दुख दुखित हे॥6॥
नइ मोरा नइहर दूर, न सासुर दुख पड़ल हे।
नइ मोरा कंत विदेश, कोख दुख दुखित हे॥7॥
सात पुतर दइब देलन, कंस सभ हर लेलन हे।
ललना, अठवें गरभ नगिचायल सेकरो भरोसा नइ हे॥8॥
चुप रहुँ, चुप रहुँ देवोकी, त सुनह बचन मोरा हे।
अपना बलक मोरा दींहऽ त हम पोसपाल देबो हे॥-9॥
नौन, चाउर तेल पइँचा भेल, सभे, चीज पइँचा भेल हे।
कोखवा उधार नइ सुनली, कइसे धीरजा बाँधव हे॥10॥

किया साखी सुरजवा त किया साखी गंगा माता हे।
ललना, किया साखी सुरुज के जोत, धरम मोर साखी हथि हे॥11॥
हो गेल कौलकरार- बचन हम पालब हे।
लाख देतन मोरा कंस तइयो नई मानब हे॥12॥
आयल भादो के रात, किसुन पख अठमी हे।
लिहलन किसुन अवतार, सकल जग जानहु हे॥13॥
खुल गेल बजर केवाँड़, पहरु सभ सूतल हे।
देवोकी ले भागलन जसोदा के द्वार, महल उठे सोहर हे॥14॥
जो एहि मंगल गाबहिं गाइ सुनावहिं हे।
जलमजलम- अहियात पुतर फल पावहिं हे॥15॥

गीत- 25

बहुआ जे चलली नहाय, तो सासू निरेखइ हे।
बहुआ, कवन मरद चित लायल, गरभ जनावल हे॥1॥
सासू आधी राति जा हइ, अउरो पहर राति हे।
सासू, राती के आव हइ भँरवा, तो होइ के खिड़की से हे॥2॥
बोलवहऽ गाँव के पठेरिया, तो रेसम के जाल बुनऽ हे।
ओहि जाल बुझयबइ भँवरा, अछरँग मोरा छुटि जइहें हे॥3॥
मचियाहि बैठल सासू बढ़यतिन, चिन्ही लेहु अपना बेटा के हे।
सासु, अछरँग मोरा छोरि देहु हे॥4॥

गीत-26

राम के मथवा लुटिरिया, देखत नीक लागय हे।
ललना, ब्ररह्मा जे दिहले लुटुरिया, अधिको छबि लागय हे॥1॥
राम के माथे तिलकवा, तिलक भल सोभय हे।
ललना, चन्नन दिहले बसिट्ठ, अधिको छबि लागय हे॥2॥
राम के अँखिया रतनारि, काजर भल सोभय हे।
ललना, काजर दिहले सुभदरा, देखत नीक लागय हे, अधिको छबि लागय हे॥3॥

राम के पाँव पैजनियाँ, पाँव भल सोभय हे।
ललना, ठुमुकि चलले अँगनवाँ, देखत नीक लागय हे॥4॥

गीत-27

जसोदा तोहर भाग बड़ा लहबर नंदरानी।
देवोकी तोहर भाग बड़ा लहबर हे रानी॥1॥
काहाँ जलमलन हे जदुनन्नन, काहाँ बाजत हे बधावा नंदरानी।
देवोकी घर में जलमलन जदुनन्नन, गोकुला में बाजत बधावा नंदरानी॥2॥
काहे के छूरी से नार छिलायल, काहे के खपर नेहलायल नंदरानी।
सोने के छूरी से नार छिलायल, रूपे के खपर नेहलायल नंदरानी॥3॥
काहे के उजे अँगिया टोपिया, केकरा के तू पहिरयबऽ नंदरानी।
रेसमी के उजे अँगिया टोपिया, केकरा के तू पहिरयबऽ नंदरानी।
रेसमी के उजे अँगिया टोपिया, अपन लाला के पहिरायब नंदरानी॥4॥
केरे लुटवथि अन, धन, लछमी, केरे लुटावथि मोती नंदरानी।
नंद लुटावथि अन, धन, लछमी, जसोदा लुटावथि मोती नंदरानी॥5॥
अइसन जलम लिहल जदुनन्नन, घर बाजे बधावा नंदरानी॥6॥

गीत-28

भइया के घर में भतीजा जलम भेल, हम तो बधइया माँग अयलो॥1॥
अगिला हर के बरदा माँगही, पिछला हर हरवाहा।
हो भइया, हम तो बधइया माँगेअयली॥2॥
दूधदही ला- सोरही माँगही,
धीया लागी भँइसिया हो भइया, हम तो बधइया माँगे अयली॥3॥
बाहर के हम नोकर चाहही, घरवा बहारन के दाइ, हो भइया।
गोड़ धोमन के चेरिया चाहही, पैर दामन के लौंड़िया, हो भइया॥4॥
तीरथ बरत के डोली चाहही, सामी चढ़न के हाथी, हो भइया।
हम तो बधइया माँगे अइली, हो भइया॥5॥

गीत-29

कत दिन मधुपुर जायब, कत दिन आयब हे।
ए राजा, कत दिन मधुपुर छायब, मोहिं के बिसरायब हे॥1॥
छव महीना मधुपुर जायब, बरिस दिन आयब हे।
धनियाँ, बारह बरिस मधुपुर छायब, तोहे नहिं बिसरायब हे॥2॥
बारहे बरिस पर राजा लउटे दुअरा बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, चेरिया बोलाइ भेद पूछे, धनि मोर कवन रँग हे॥3॥
तोर धनि हँथवा के फरहर, मुँहवा के लायक हे।
ए राजा, पढ़ल पंडित केर धियवा, तीनों कुल रखलन हे॥4॥
उहवाँ से गनिया उठवलन, अँगना बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, अम्माँ बोलाइ भेद पुछलन, कवन रँग धनि मोरा हे॥5॥
तोर धनि हँथवा के फरहर, मुँहवा के लायक हे।
ए बबुआ, पढ़ल पंडित केर धियवा, तीनों कुल रखलन हे॥6॥
उहवाँ से गनिया उठवलन, ओसरा बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, भउजी बोलाइ भेद पुछलन, धनि मोरा कवन रँग हे॥7॥
तोरो धनि हँथवा के फरहर, मुँहवा के लायक हे।
बाबू, पढ़ल पंडित केर धियवा, तीनों कुल रखलन हे॥8॥
उहवाँ से गनिया उठवलन, सेजिया बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, धनियाँ बोलाइ भेद पुछलन, तुहूँ धनि कवन रँग हे॥9॥
अँगना मोरा लेखे रनबन दुअरा कुँजनबन
ए राजा, सेजिया पर लोटे काली नगिनिया, रउरे चरन बिनु हे॥10॥

गीत-30

सभवा बइठल तोहे बाबू साहेब, अउरी सिर साहेब हे।
साहेब, मोर नइहर लोचन पठइती, तो बाबू जी अनन्द होइतन हे॥1॥
बाबूजी होयथीं अनदंे मन, मइया हरखि जयतइ हे।
बहिनी के जुड़ा जयतइ छतिया, भइया मोर हुलसि जायत हे॥2॥

मोर पिछुअरवा नउआ भइया तोही मोर हित बसे हे।
नउआ, चली जाहु हमर ससुररिया, दुलरइतिन देइ के नइहर हे॥3॥
कहाँ के हहु तोंहि हजमा, त केकर पेठावल हे।
ललना, कउन बाबू के भेल नंदलाल, लोचन लेइ आवल हे॥4॥
कवन पुर के हम हीअइ नउआ, कवन बाबू पेठावल हे।
ललना, कवन बाबू के भेलइन नंदलाल, लोचन लेइ आवल हे॥5॥
लेहु हो नउआ, तूं साल अउ दोसाला लेहु हे।
नउआ, लेहु तोंहि पटुका पटोर लहसि घर जाहुक हो॥6॥
मइया, जे हमर दुलरइतिन मइया, सुनहट बचन मोर हे।
मइया, अइसन भेजिहऽ पियरिया, कि देखि के हिरदय साले हे॥7॥
भउओ, जे हमरो दुलरइतिन भउजो, सुनहट वचन मोरा हे।
भउजो, अइसन भेजिह सोंठउरवा,
जे गोतनी के हिरदय साले हे॥8॥

गीत-31

भँगिया पिसयते महादेओ, सुनहऽ बचन मोरा हे।
देओ, तोरा धनी दरद बेयाकुल, तोरा के बोलावथु हे॥1॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पओलन हे।
बुढ़उ बैल पीठी भेलन असवार, कहाँ रे धनी बेआकुल हे॥2॥
सउरी में से बोलथी गउरा देई, सुनहऽ बचन मोरा हे।
देओ, लाज सरम केरा बतिया, तोरा से कहियो केता हे॥3॥
मारहे पँजरवा में पीर से डगरिन बोलाइ देहु हे॥4॥
एतना बचन जब सुनलन, बुढ़वा दिगम्बर हे।
बुढ़उ बैल पीठ भेलन असबार, कहाँ रे बसे डगरिन हे॥5॥
बाट जे पूछहथ बटोहिआ त कुइआँ पनिहारिन हे।
इहाँ त सहरबा के लोग, काहाँ रे बसे डगरिन हे॥6॥
ऊँची चउपरिया पुर पाटन आले बाँस छावल हे
दुअरे चननवा के गाछ, उहाँ रे बसे डगरिन हे॥7॥
डगरिन डगरिन पुकारथि, डगरिन अरज करे हे।
के मोरा खोलहे केवरिया त रतन जड़ल हकइ हे॥8॥

हम हिअइ देओ महादेओ, हम तोरा टाटी खोली हे॥9॥
की तोरा माय कि मउसी, कि सगर पितिआइन हे।
की तोरा घर गिरथाइन दरद बेआकुल हे॥10॥
नइ मोरा माय से मउसी, से सगर पित्‌िआइन हे।
मोरा धनि दरद बेयाकुल, तोंहि के बोलावथु हे॥11॥
पैरे ही पैरे नहीं जायब, पैर दुखायत हे।
आनि देहु मोरा सुखपाल, ओहि रे चढ़ि जायब हे॥12॥
एतना बचन जब सुनलन बुढ़वा दिगंबर हे।
चलि भेलन बैल असवार, घरहि घुरि आयल हे।
एक त जाति के डगरिन, बोलऽहइ गरब सयँ हे।
माँग हकइ संझा सुखपाल ओहि रे चढ़ि जायब हे॥14॥
एक त सिवजी दलिद्दर, जलम के खाके भाँड़े हे।
सिव, लेइ जाहु संझा सुखपाल, ओहिरे चढ़ि आवत हे॥15॥
डड़ियहि आवथी डगरिन, चाउँर डोलत आवे हे।
चनन से अँगना लिपायल सुघर डगरिन पग धरे हे॥16॥
घड़ी रात बीतल, पहर रात, अउरो आधिए रात हे।
लेलन गनेस औतार, महल उठे सोहर हे॥17॥

गीत-32

रूक्मिन बिपर के बोलौउलन, आँगन बइठवलन हे।
हमरा सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥1॥
उलटि पुलटि बिपर देखलन मन मुसकयलन
रूक्मिन, बिधी नइ लिखलन लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रूक्मिन, देबी जी हथुन दयामान, सँपति तोरा ओहि देथुन हे॥2॥
उहँऊ रूक्मिन चललन, देबी से अरज करे हे।
देबीजी हमरो सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥3॥
उलटि पुलटि देबीजी देखथिन बड़ी मुसकयलन हे।
रूक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रूक्मिन, गंगा जी हथुन दयामान, सँपति तोरा देइ देथन हे॥4॥

उहँउ से रूक्मिन चललन, गंगा से अरज करे हे।
गंगाजी, मोरा सँपतिया के चाह सँपति हम चाहही हे॥5॥
उलटि पुलटि गंगाजी देखलन, मन मुसकयलन हे।
रूक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रूक्मिन, बिसुन जी हथुन दयामान, सँपति तोरा देइ देथुह हे॥6॥
उहँउ से रूक्मिन चलि भेलन, बिसुन से अरज करे हे।
बिसुन, मोरा सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥7॥
उलटि पुलटि बिसुन देखलन, मन मुसकयलन हे।
रूक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रूक्मिन, सिबजी हथुन दयामान, वोही सँ देथुन हे॥8॥
उहँउ से रूक्मिन चलि भेलन, सिब से अरज करे हे।
सिबजी, मोरा सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥9॥
उलटि पलटि सिब देखलन, मन मुसकयलन हे।
रूक्मिन, बिधि नहीं लिखलन लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रूक्मिन, बरमाँजी हथुन दयामान, ओही सँपति देथुन हे॥10॥
उहँउसे रूक्मिन चललन, बरमाँ से अरज करे हे।
बरमाँजी हमरो सँपतिया के चाह, सँपति कहाँ पायब हे॥11॥
उलटि पलटि बरमाँ देखलन, मन मुसकयलन हे।
रूक्मिन, बिधि नहीं लिखलन लिलार, सँपति कहाँ पायब हे॥12॥
बरमाँजी बलका के बोलौउलन जाँघे बइठवलन हे।
बलका, छठिया राते तोरा होयते, घुरिए चलि अइह हे॥13॥
एतना सुनयते त बलका त बलका अरज करे हे।
बरमाँ जी, हम न जायब अबतार बहुत दुख होयत हे॥14॥
घर ही रोवत मोरा अंबा बाहर मोरा पिता रोइतन हे।
बरमाँ जी, हम नहीं लेबो अबतार, बहुत दुख पायब हे॥15॥
बरमाँ जी, बलका के बोलवलन, जाँघे बइठवलन हे।
बलका सदियाबिआह- तोरा होयतो, तबहि चलि अइह हे॥16॥
बलका बरमाँ से अरज करे अउरो मिनती करे हे।
बरमाँ जी, हम न लिहब अवतार, बहुत दुख होवत॥17॥
घरे जे रोबे मोरा भइया बाहर मोरा पिता रोइतन हे।

सेजिया बइठल रोवे घरनी, बहुत दुख होयत हे॥18॥
बरमाँ जी बलका के बोलवलन, जाँघे बइठवलन हे।
बलका, अजर अमर होई रहिह, बहुत सुख होयत हे॥19॥

गीत-33

सीकिया चीरिए चीरिए बँगला छवावल।
ठोपे ठोपे चुअहे गुलाब, से ठोपे ठोपे॥1॥
सेहो अरक के पगड़ी रँगाबल।
पेन्हें जी होरिलवा के बाप, उनखा के होरिला भयले॥2॥
हम त एहो परभु, गरभ से बेयाकुल।
तूँ चढ़ि पलँगा बइठबऽ मन मार॥3॥
तूँ त चलिए जयबऽ राजा कचहरिआ।
हम हीं बुझब, सभ लोग॥4॥

गीत-34

चलूँ चलूँ डगरिन भवन मोर, हम राजा दसरथ हे।
डगरिन, मोर घर अयलन भगमान, भेलन नंदलाल मोरा हे॥1॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहुँ न पयलन हे।
राजा लेइ आहु डोलिया कहार, बुलइत नहीं जायम हे॥2॥
एतना सुनइते राजा दसरथ, डोलिया फनावल हे।
डगरिन चढ़ि चलूँ मोर महलिया, बालक नहबावहु हे॥3॥
हम लेबो हँथिया से घोड़वा अउरी गजमोतीए हे।
तमकि के बोलहकइ डगरिन, तबे नहबायब हे॥4॥
एतना सुनत राजा दशरथ, डगरिन अरज करे हे।
डगरिन ले लेहु सहन भंडार, बालक नहबावहु हे॥5॥
धन धन धन राजा दसरथ, धन कौसीला माता हे।
ललना, धन धन डगरिन भाग, ले राम नेहबावल हे॥6॥

गीत-35

सासु हमर रहे पक्का महल में, उनखा देहु बोलाइ।
हमरा भेलइ नंदलाल, सुने ना कोई रे॥1॥
गोतनी हमर रहे सीस सहल में, उनखा देहु बोलाइ।
हमरा भेलइ हे गोपाल, जगे ना कोई रे॥2॥
ननद हमर हे महल अटारी में, उनखा देहु बोलाय।
हमरा के भेल हे होरिलवा जगे ना कोई, सुने ना कोई रे॥3॥
सामी हमर हथ मालिन के सँग, उनखा देहु बोलाय।
हमरा के भेल नंदलाल जगे न कोइ, सुने ना कोई रे॥4॥

गीत-36

ढेरिया जे सोभले गेहमा केरा, चउखट चनन केरा हे।
ए ललना, बहुआ जे सोभले गोदी में, होरिलवा लेले हे॥1॥
दुअरे ही बाजे बजनियाँ, अँगना मदागिन बेटी हे।
ए ललना, ओबरी में नाचे ननद रानी, कँगनवाँ हम बधइआ लेबो हे॥2॥
बजनियाँ के देबइ सोने बजवा, मदागिन बेटी कंचनथारी हे।-
ए ललना, ननद रानी ला बेसरि गढ़इबो, कँगनवसाँ नहीं बधइया देबो हे॥3॥
सासु के देबइन करुआ तेल, ननदी के तीसी के तेल हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन चमेली तेल, हम गोतनी पाँइच हे॥4॥
सासु के देबइन खटोलवा, त ननदो के मचोलवा देबइन हे।
ए ललना, गोतनी देबइन पलँगवा, हम गोतनी पाँइच हे॥5॥
सासु के देबइन धनइया भारत, ननदो के कोदइया भात हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन बसमतिया भात, हम गोतनी पाँइच हे॥6॥
सासु के देबइन रहरी दाल, ननदो अँकटी दाल हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन मूँग दाल, हम गोतनी पाँइच हे॥7॥
सासु के देबइन सोंठउरा, ननदो के धँधउरा हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन लड्डू, हम गोतनी पाँइच हे॥8॥

सासु के देबइन चाउर के हलुआ, ननदी खँखोरी देबो हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन सुज्जी के हलुआ, हम गोतनी पाँइच हे॥9॥
सासु जे उठलन गावइत, ननद बजावइत हे।
ए ललना, गोतनी उठलन बिसमादल, गोतिया घरवा सोहर हे॥10॥
सासु लुटवलन रुपइया, त ननदो असरफी हे।
ए ललना, गोतनी लुटवलन छेदमवाँ, हम मुरछाइ गिरली हे॥11॥
सभवा बइठल रउरा परभुजी, सुनहऽ बचन मोरा जी।
परभुजी, गोतनी लुटवलन छेदमवाँ, त हम मुरछाइ गिरली हे॥12॥
चुप रहु, चुप रहु धनियाँ, तुहूँ चधुराइन हे।
ए धनियाँ, उनको जे होतइन होरिलवा, छेदमवाँ उनका फेर दीह हे॥13॥

गीत-37

पलंग सुतल तोहे पियवा, और सिर साहेब हे।
पियवा बगिया तू एगो लगइत, टिकोरवा हम चिखती हे॥1॥
पलंग सुतल तोंहे धानी, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
धानी, तुहुँ एगो बेटवा बियतऽ सोहर हम सुनती हे॥2॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पवलन हे।
धनि, सुतलन गोड़ेमुड़े- तान सुतल गज ओबर हे॥3॥
मोर पिछुअरबा सोनार भइया, तोही मोरा हित बसे हे।
भइया, धनियाँ ला गढ़ि देहु कँगना, धनि के पहिरायब हे॥4॥
काँख जाँति लिहले कँगनमा, त धनि के मनावल हे।
धनिया के जाँघ बइठावल, हिरदय लगावल हे॥5॥
धनि हे, छाँड़ि देहु मन के बिरोध, पहिर धनि काँगन हे॥6॥
एही कँगना रउरे माई पेन्हथ अउरी बहिन पेन्हथ हे।
पिया ओहे दिन सेजरिया के बात, करेजा मोरा सालए हे॥7॥
मारलहऽ ए पियवा, मारलहऽ तीखे कटरिया से हे।
पियवा रउरे बात साल हे करेजवा, कँगनमा कइसे पहिरी हे॥8॥

गीत-38

पलँगा बइठल हथ महादेओ, मचिया गउरा देई हे।
हमरा पुतरवा के साध, पुतर कइसे पायब हे॥1॥
करबइ मैं छठ एतवार, सुरुज गोड़ लागब हे।
मिलिजुलि पारथि- बनायब, पुतर फल पायब हे॥2॥
कुरखेत मटिया मँगायब गंगाजल सानब हे।
काँसे कटोरिया पारथि बनायब, फल फूल लायब हे॥3॥
देबइन हम अछत चन्नन, अउरो बेल पातर हे।
देबइन धतुरबा के फूल, भाँग घोंटि लायब हे॥4॥
करबइन मैं बरत परदोस पुतर फल पायब हे॥5॥
एक पख पूजल, दोसर पख, तेसरे चढ़ि आयल हे।
पुरि गेल गउरा के मनकाम, पुतर फल पायब हे॥6॥

जन्मोत्सव सम्बन्धी

गीत-1

राजा बोया गरिया छोहरवा रे।
बदमवाँ मोरा मन भावे रे॥
अँगना में लेमु बोया, दुअरे अनार बोया जी, राजा बोया गरिया॥1॥
अँगने में लेमु फला, दुअरे अनार फला जी।
राजा फला है छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥2॥
अँगने का लेमु पका, दुअरे अनार पक्का।
पका है गरिया, छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥3॥
अँगने का लेमुआ तोड़ा, दुअरे अनार तोड़ा।
राजा तोड़ा है गरिया, छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥4॥
गैलूँ मैं बिंदाबने, हुँएँ हैं नंदलाल।
होरिलवा मोरा मन भावे रे॥5॥

गीत-2

मेरे तो पीर उठे ननदी हँसत फिरे॥1॥
बाहर बैठे ससुर हमारे, ससुर, तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही बिदा करो॥2॥
बाहरे बैठे भैंसुर हमारे, भैंसुर तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही बिदा करो॥3॥
बाहर बैठे सइयाँ हमारे, सइयाँ तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही बिदा करो॥4॥
कंगन सोनार घरे, चुनरी रँगरेज घरे।
गंगा जमुना बाढ़ आई, कैसे बिदा करूँ॥5॥
मेरे से कंगन ले लो, मेरे से चुंदरी ले लो।
नइया चढ़ा ननदी बिदा करो॥6॥

गीत-3

लूँगी भावज मैं वही कँगना।
मुझे कँगने को शौक मेरी भाभी॥1॥
माँगो का टीका ले री ननदिया, ले री झलाही।
एक नहीं दूँगी यही कँगना॥2॥
लूँगी मैं भावज वही कँगना।
मुझे कँगने की शौक मेरी भाभी, लूँगी मैं वही कँगना॥3॥
नाको का बेसर ले री ननदिया, ले री झलाही।
एक नहीं दूँगी, यही कँगना॥4॥

गीत-4

आँगन में बतासे लुटा दूँगी, आँगन में।
सासु जी अइहें, चरुआ चढ़इहें।
भला उनको चुनरिया पेन्हा दूँगी, आँगन में॥1॥
चरुआ चढ़ावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे चुनरिया छिना लूँगी, आँगन में॥2॥
गोतिनी जे अइहें, पलँग बिछइहें।
भला उनको तिलरिया पेन्हा दूँगी, आँगन में॥3॥
पलँगा बिछावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे तिलरिया छिना लूँगी, आँगन में॥4॥
ननद जो अइहें, आँख लगइहें।
भला उनको कँगनवाँ पेन्हा दूँगी, आँगन में॥5॥
आँख लगावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे कँगनवाँ छिना लूँगी, आँगन में॥6॥

गीत-5

अच्छी बूबू टीका लेंगी, अच्छी बूबू मोतिया लेंगी जी।
मेरे आरजु का है ननदोइया ओभी जरा देखेगा जी॥1॥
नहीं भाभी टीका लूँगी, नहीं भाभी मोतिया लूँगी जी।
भाभी, ऐसे ऐसे टीके बहुत हैं, संदूकचा भरा होगा जी॥2॥
अच्छी बूबू बेसर लेंगी, अच्छी बूबू चुनिया लेंगी जी।
मेरे आरजू का है ननदोइया, ओभी जरा देखेगा जी॥3॥
अरे नहीं भाभी बेसर लूँगी, नहीं भाभी, चुनिया लूँगी।
ऐसे ऐसे बेसर बहुत हैं जी, संदूकचा मेरा भरा होगा जी॥4॥
अच्छी बूबू कँगना लेंगी, अच्छी बीबी कड़वा लेंगी।
मेरे आरजू का है ननदोइया, ओभी जरा देखेगा जी॥5॥
नहीं भाभी कँगना लूँगी, नहीं भाभी कड़वा लूँगी।
शाद रहे मेरा नन्हा होरिलवा, यही बहुत है जी॥6॥

गीत-6

निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी।
सँवरिया लाल बड़ी दरदे उठी॥1॥
मेरे पेटारे में कपड़ा बहुत सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी॥2॥
मेरे पेटारे में गहने बहुत सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
माय बहन को पेन्हा सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी॥3॥
मेरे पेटारे में मेवा बहुत खइयाँ।
माय बहन को खिला सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़े दरदे उठी॥4॥

गीत-7

हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
कमरे में दाई काहेको आई,
राजा जी, मेरी नाफे टली थी॥1॥
हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
हाँ, हाँ, हाँ मेरा सुरमा सिपाही।
रानी पीली साड़ी काहे को पेन्हे थी।
राजा जी, मैं तो न्योते गई थी॥2॥
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
रानी कमरे में कौन रोया था।
राजा जी, दो ये बिल्ले लड़े थे।
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
राजा जी, मेरा सीधा है राजा॥3॥

गीत-8

भइया किरिया बेसरिया हम लेबो।
भइया किरिया बेसरिया हम ना देबो॥1॥
जब तुम ननदो, बधावा लेने अइहो।
भइया किरिया, हम भी किवाड़ हनी देबो॥2॥
जल तुम भाभी, किवाड़ हनी देबो
भइया किरिया, हम भी दीवार फाँदी ऐबो॥3॥
जब तुम ननदो, दीवार फाँदी अइहो।
भइया किरिया, हमहु नइहर चलि जैबो॥4॥
जब तुम भाभी, नैहर चलि जइहो।
भइया किरिया, हम भी हलकारा भेज देबो॥5॥

गीत-9

हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
कमरे में दाई काहेको आई,
राजा जी, मेरी नाफे टली थी॥1॥
हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
हाँ, हाँ, हाँ मेरा सुरमा सिपाही।
रानी पीली साड़ी काहे को पेन्हे थी।
राजा जी, मैं तो न्योते गई थी॥2॥
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
रानी कमरे में कौन रोया था।
राजा जी, दो ये बिल्ले लड़े थे।
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
राजा जी, मेरा सीधा है राजा॥3॥

गीत-10

आँगन में बतासे लुटा दूँगी, आँगन में।
सासु जी अइहें, चरुआ चढ़इहें।
भला उनको चुनरिया पेन्हा दूँगी, आँगन में॥1॥
चरुआ चढ़ावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे चुनरिया छिना लूँगी, आँगन में॥2॥
गोतिनी जे अइहें, पलँग बिछइहें।
भला उनको तिलरिया पेन्हा दूँगी, आँगन में॥3॥
पलँगा बिछावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे तिलरिया छिना लूँगी, आँगन में॥4॥
ननद जो अइहें, आँख लगइहें।
भला उनको कँगनवाँ पेन्हा दूँगी, आँगन में॥5॥
आँख लगावे में कसरमसर करिहें।-
भला उनसे कँगनवाँ छिना लूँगी, आँगन में॥6॥

गीत-11

इस होरिलवे की दादी बडैतिन दान बाँटे रे।
मेरा छोटासा होरिला-, पलना झूले रे।
पलना झूले रे, झुनझुना खेले रे॥1॥
इस रे होरिलवे की नानी बड़ैतिन, दान बाँटे रे।
मेरा छोटासा होरिला-, पलना झूले रे।
पलना झूले रे, झुलझुना खेले रे॥2॥
इस रे होरिलवे की अम्माँ बड़ैतिन, दान बाँटे रे।
मेरा छोटाहोरिलवा सा-, पलना झूले रे॥3॥

मुण्डन गीत

गीत-1

गोचर हे नगर के बराम्हन, पोथिया बिचारहु हे।
आजु कन्हइया जी के मूँड़न नेओता पेठाएब हे॥
अरिजनि नेओतब, बरिजनि अउरो देआदिन लोग हे।
नेओतब कुल परिवार, कन्हइयाजी के मूंड़न हे॥2॥
काहे लागि रूसल गोतिया लोग, अउरो गोतिनी लोग हे।
काहे लागि रूसले ननदिया, मँड़उआ नहीं सोभले हे॥3॥
का ले मनएबो गोतिया, का ले गोतिनी लोग हे।
अहे, का ले मनएबो ननदिया, मँड़उआ मोर सोभत हे॥4॥
बीरा मनएबो गोतिया, सेनुर ले गोतिनी लोग हे।
अहे, बेसरि ले मनएबो ननदिया, मँड़उआ मोर सोभत हे॥5॥

गीत-2

अहे बाम्हन के पड़ले हँकार बरुअवा के मूंड़न हे।
बाम्हन अइले वेद भनन हे॥1॥
अहे गोतिया के पड़ले हँकार, बरुअवा के मंूड़न हे।
गोतिया अइले माँड़ो छावन हे॥2॥
अहे गोतिनी के पड़ले हँकार, बरुअवा के मंूड़न हे।
गोतिनी अइले मंगल गावन हे॥3॥
अहे कुम्हरा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूड़न हे
कुम्हरा अइले कलसा लिहले हे॥4॥
अहे हजमा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।
हजमा अइले छुरवा लिहले हे॥5॥
अहे बढ़ही के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।
बढ़ही अइले पिढ़वा लिहले हे॥6॥
अहे फूआ के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।

फूआ अइले अँचरा पसरले हे॥7॥
अहे, बाबा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।
बाबा जे अइले गेंठी खोलले हे॥8॥
अहे भइया के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।
अहे भइया गइले रिसिआय बहिनी घरलूटन- हे॥9॥
अहे, भउजी के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूंड़न हे।
अहे, ननद अइले घरलूटन-, बरुअवा के मूंड़न हे॥10॥
अहेबाम्हनकेपड़लेहँकार बरुअवा केमूंड़नहे।

गीत-3

ओखरी में चउरा छँटाएब हे, चकरी में दाल दराएब हे,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे।
बराम्हन के नेओता पेठाएब, पोथिआ समेत चलि आवऽ
कन्हइआजी के मूंड़न हे।
बराम्हन अलुरी पसारे, हम लेबौ पोथिया के मोल,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे॥1॥
ओखरी में चउरा छँटाएब हे, चकरी में दाल दराएब हे,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे।
हजमा के नेओता पेठाएब, छुरबा समेत चलि आवऽ,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे।
हजमा अलुरी पसारे, हम लेबो छुरबा के मोल,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे॥2॥
ओखरी में चउरा छँटाएब, चकरी में दाल दराएब,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे।
कुम्हारा के नेओता पेठाएब, कलसा समेत चलि आवऽ,
कन्हइआ जी के मूंड़न हे।
कुम्हरा अलुरी पसारे, हम लेबो कलसा के मोल,

गीत-4

पाँच सुपारी बाँटु री, अब नेवतब कुलपरिवार-, लालजी के मूरन हे।
पाँच सुपारी बाँटु री, मोरे अलख हुलरुए के मूरन हे॥1॥
अब बम्हना बसे जे बनारस, अब हजमा कुरखेत लालजी के मूरन हे।
ए सवासिन बसे ससुर घर, अब किन रे परिछेबाल लालजी के मूरन हे॥2॥
अब बम्हना के चिठिया पेठाइय, अब हजमा के पकरि मँगाइय, लालजी के मूरन हे।
ए सवासिन के डोलिया फनाइय उहे रे परिछेबाल, लालजी के मूरन हे॥3॥
नव मन गेहुँमा मँगाइय, अब नेवतब कुल परिवार, लालजी के मूरन हे।
नव मन घिआ मँगाइय, अब नेवतब कुल परिवार, लालजी के मूरन हे॥4॥
नव थान कपड़ा मँगाइय, हम नेवतब सब परिवार, लालजी के मूरन हे।
पहिला अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय लालजी के मूरन हे॥5॥
दूसरा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे।
तीसरा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे॥6॥
चउथा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे।
हजमा के लुलुहा कटाइय, नउनिया के देहु बनवास, लालजी के मूरन हे॥7॥
पँचमा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे।
हजमा के सोनवा गढ़ाइय, नउनिया के लहरापटोर लालजी के मूरन हे॥8॥

जनेऊ गीत

गीत-1

गँगा रे अरार कवन बरूआ करे असनान।
करे असननियाँ रे बरूआ, निरखे आठो अँग॥1॥
बिनु हो जनेउआ हो बाबा, ना सोभे कान।
अप्पन जनेउआ हो बाबा हमरा के दऽ॥2॥
हमरो जनेउआ हो बरूआ, भे गेल पुरान।
तोहरो जनेउआ हो बरूआ, देबो बजना बजाए॥3॥
गँगा के अरार कवन बरूआ करे असनान।
करे असननियाँ रे बरूआ, निरखे आठो अँग॥4॥
बिनु हो जनेउआ हो चाचा, ना सोभे कान।
अप्पन जनेउआ हो चाचा, हमरा के दऽ॥5॥
हमरो जनेउआ हो बरूआ, भे गेल पुरान।
तोहरो जनेउआ हो बरूआ, देबो बजना बजाए॥6॥

गीत-2

सभवा बइठल रउरा कवन बाबा, दहु बाबा हमरो जनेउ गे माई।
बेदिया बइठल हो बरुआ, रतन के जोत के माई॥1॥
केई देबे मूँज जनेउआ केई मिरिग छाल गे माई।
केई देवे पियर जनेउआ, बेदिया के बीच गे माई।
रतन के जोत गे माई॥2॥
बराम्हन देलन मूँज जनेउआ, नउआ मिरिग छाल गे माई।
बाबा देलन पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई।
रतन के जोत गे माई॥3॥
सभवा बइठल रउरा कवन चच्चा, दहु चच्चा हमरो जनेउ गे माई।
बेदिया बइठल हो बरुआ, रतन के जोत गे माई॥4॥
केई देवे मूँज जनेउआ, केई मिरिग छाल गे माई।

केई देवे पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई
रतन के जोत गे माई॥5॥
बराम्हन देलन मूँज जनेउआ, नउआ मिरिग छाल गे माई।
चच्चा देलन पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई।
रतन के जोत गे माई॥6॥

गीत-3

जेहि बन सिंकियो ना डोलइ, बाघ सिंह गरजइ हे।
तेहि बन चललन, कवन चच्चा, अँगुरी धरि कवन बरुआ हे॥1॥
पहिले जे कटबउ मूँजवा मूँज के डोरी चाहिला हे।
तब कय कटबउ परसवा, परास डंडा चाहिला हे।
तब कय मारबउ मिरगवा, गिरिग छाल चाहिला हे॥2॥
जेहि बन सिंकियो न डोलइ, बाघ सिंह गरजइ हे।
तेहि बन चललन कवन भइया, अँगुरी धरि कवन बरुआ हे॥3॥
पहिले जे कटबउ मूँजवा, मूँज के डोरी चाहिला हे।
तब कय कटबउ परसवा, परास डंडा चाहिला हे।
तब कय मारबउ मिरिगवा, मिरिग छाल चाहिला हे॥4॥

गीत-4

बराम्हन नेवतब बराम्हनी नेवतब।
नेवतब, पोथिया सहिते चलि आवऽ, माई हे।
कब हम देखमरामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्नजनेउआ, माई हे॥1॥
कुम्हरा नेवतब, कुम्हइनियाँ नेवतब।
नेवतब, कलसा सहिते चलि आवऽ, माई हे।
कब हम देखम रामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्न जनेउआ, माई ह॥2॥

हजमा नेवतब, हजमिनियाँ नेवतब।
नेवतब, छुरवा समेते चलि आवऽ, माई हे।
कब हम देखम रामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्न जनेउआ, माई हे॥3॥

गीत-5

कहाँ के तूँ तो बराम्हन बरुआ।
कहँवाँ बिनती तोहार, माई हे॥1॥
कवन साही सम्पत सुनि आएल हो बरुआ।
कवन देइ दुआर धरि टाड़ माई हे॥2॥
माँगले बरुआ धोती से पोथी, माँगले पीयर जनेऊ, माई हे।
माँगले बरुआ हो चढ़न के घोड़वा, माँगले कनिया कुआँर माई हे॥3॥
तिरहुत के हम बराम्हन बरुआ, कवन पुर में विनती हमार माई हे।
कवन साही सम्पत सुनि अइली हो बरुआ,
कवन देइ दुआर धइले ठाड़ हे॥4॥
देबों में बरुआ हो धोती से पोथी, देबों में पियर जनेऊ, माई हे।
देबों में बरुआ हो चढ़न के घोड़वा, एक नहीं कनियाँकुआँर-, माई हे॥5॥

गीत-6

बेदियनि बोलले बरुअवा, जनेऊ-जनेऊ करे हे ।
बाबा, के मोरा बेदिया भरावत जनेउआ दियावत हे॥1॥
हँसिहँसि बोलथिन- बाबा, बोली भितराएल
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे॥2॥
बेदियनि बोलले बरुअवा, जनेऊजनेऊ करे हे।-
चच्चा, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउआ दियावत हे॥3॥
हँसिहँसि बोलथिन चच्चा-, बोली भितराएल हे।
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे॥4॥

बेदियन बोलले बरुअवा, जनेऊजनेऊ करे हे।-
भइया, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउवा दियावत हे॥5॥
हँसिहँसि बोलथिन भइया-, बोली भितरायल हे।
बबुआ, हम तोर बेदिया भराएब जनेउआ दियाएब हे॥6॥

गीत-7

कुइयाँ असथान पर मुँजवा के थलवा।
मूँज चीरे चललन, बरुआ कवन बरुआ॥1॥
चिरथिन कवन चच्चा मूँज के हे थलवा।
मूँज चीरे चललन बाबा हो कवन बाबा॥2॥
तहाँ कवन बरुआ लोटिपोटि रोवलन।-
भुइयाँ लोटि रोवलन, दहु बाबा हमरो जनेऊ हो॥3॥
झरलनझुरलन- जाँघ बइठवलन।
देबो बाबू तोहरो जनेऊ हो॥4॥

गीत-8

गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया मोतिया उपजायब हे।
गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया, सोनवाँ उपजायब हे॥1॥
जब मैं जनतों कवन बरूआ, तुहूँ पंडित होयबऽ हे।
तुहूँ बराम्हन होयबऽ हे।
कंचन थाल भराइ के, सोनवाँ भीखी देयब हे।
मोतिया भीखी देयब हे॥2॥

गीत-9

चइत में बरूआ बिदा भेल, बैसाख पहुँचल हे॥1॥
जइबो में जइबो ओहि देस, जहाँ दादा अप्पन हे।
उनखर चरन पखारी के, हम पंडित होयब हे।
हम बराम्हन होयब हे॥2॥

जइबो में जइबो ओहि देस, जहाँ नाना अप्पन नाना हे।
उनखर चरन पखारी के, हम पंडित होयब हे।
हम बराम्हन होयब हे॥3॥

गीत-10

जेहि देस सिकियो न डोलय साँप ससरि गेल हे।
ललना, ओहि देस गयलन दादा रइया अँगुरी धरि कवन बरूआ हे॥1॥
पहिले जे मरबो साहिल काँटा चाहिला हे।
ललना, तबे हम मरबो मिरिगवा, मिरिगछाल चाहिला हे।
ललना, तबे हम कटबो परसवा परास डंटा चाहिला हे॥2॥
ललना, तबे हम कटबो मुँजिअबा, मुँजिअ डोरि चाहिला हे।
ललना, आज मोरा बाबू के जनेउआ, जनेउआ पीला चाहिला हे॥3॥

गीत-11

बेदियनि बोलले बरुअवा, जनेऊजनेऊ करे हे।-
बाबा, के मोरा बेदिया भरावत जनेउआ दियावत हे॥1॥
हँसिहँसि बोलथिन- बाबा, बोली भितराएल
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे॥2॥
बेदियनि बोलले बरुअवा, जनेऊजनेऊ करे हे।-
चच्चा, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउआ दियावत हे॥3॥
हँसिहँसि बोलथिन चच्चा-, बोली भितराएल हे।
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे॥4॥
बेदियन बोलले बरुअवा, जनेऊजनेऊ करे हे।-
भइया, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउवा दियावत हे॥5॥
हँसिहँसि बोलथिन भइया-, बोली भितरायल हे।
बबुआ, हम तोर बेदिया भराएब जनेउआ दियाएब हे॥6॥

सगुन गीत

गीत-1

अहो सगुनि अहो सगुनि, सगुने बियाह।
मैं तो जनइति गे सगुनी, होयतो बियाह॥1॥
अरे काँचे बाँसे डलवा गे सगुनी, रखती बिनाय।
अरे आपन बेटा दुलरइता दुलहा, रखती चुमाय॥2॥
मैं तो जनइति गे सगुनी, होयतो बियाह।
अरे अपन बेटी दुलरइतिन बेटी रखती छिपाय॥3॥
रखे के न रखलऽ जी बाबा, लड़िका से बारी।
अरे अब कते रखबऽ जी बाबा, सुबुधि सेयानी।

गीत-2

पहिला सगुनमा तिलचार हे-, तब कय डटारेवो पान हे।
देहु गन दुलरइते बाबा के हाथ, सगुनमा भल हम पयलूँ हे।
लगनियाँ भेलइ उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥1॥
कानीकानी- चिठिया लिखथिन दुलरइते बाबू, अहे भाँमर नदिया अइलइ तूफान हे।
लंगनियाँ अलइ उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥2॥
सुपती खेलइते तूहें दुलरइते बहिनों हे, बहिनी भाँमर
नदिया देही न मनाई हे।
लगनियाँ मोर उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥3॥
पुजबो में भाँवर नदिया, सेनुरे पिठार अहे भइया भउजी
उतरे देहु पार हे।
लगनियाँ अलइ उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥4॥

गीत-3

मलिया के अँगनवाँ चननवाँ केरा गाछ।
ताहि तर सुगवा सगुनवा ले ले ठाढ़॥1॥
पहिला सगुनवाँ माइ हे, मलिया के देल।
सोने के मउरिया लाइ मड़वा धराय॥2॥
दूसरे सगुनवाँ माइ हे, कुम्हरा के देल।
सोने के कलसवा लाइ मड़वा धराय॥3॥
तीसरे सगुनवाँ माइ हे, बम्हनवाँ के देल।
सोने के पतरबा लाइ मड़वा धराय॥4॥
चउथे सगुनवाँ माइ हे, बेटी के बाबा के देल।
अपनी दुलहिनियाँ आनि चउका बइठाय॥5॥
पँचवाँ सगुनवाँ माइ हे, बेटा के बाबा के देल।
अपन दुलहवा आनि चउका बइठाय॥6॥
गरजे लागल कारी बदरिया, बरसे लागल मेघ।
भीजे लागल दुलहा दुलहिन, जोड़ले सनेह॥7॥
दुलहिन पुछये दुलहवा साधु बात।
कइसेकइसे- सजल जी परभु अपन बरियात॥8॥
धोयले धोयले कपड़ा रँगलत।रँगल दाँ-
छयले छयले गभरू सजल बरियात॥9॥
दुलहा जे पूछये दुलहिनियाँ साधु बात।
कइसे कइसे सीखल धानि राम रसोई॥10॥
बतिसो हँड़ियवा जी परभू, छप्पन परकार।
बाबा घरे सिखली जी परभू राम के रसोई।

गीत-4

पहिला सगुनवाँ तिलचाउर हे बाबू-, तब कए डटारेबो पान।
लगनियाँ अइले उताहुल सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥1॥
ससुर बोलएबो कवन दुलहा हो बाबू।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥2॥
कइसे में आएब ससुर बढ़इता हे, ससुर राउर नदिया झिलमिल पानी।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥3॥
काल्ह कटएबो चन्नन गछिया हे बाबू, परसों बनएबो डेंगी नाव,
ताहि रे चढ़ि आवहु हे।
सगुनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥4॥
धीरे खेवऽ मधुरे खेवऽ, मलहवा भइया हे, बाबू, भिजले कवन दुलहा सिर पगिया।
कवन सुगइ सिर सेनुर नयनवाँ भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥5॥
कथिय सुखयबऽ सिर सेनुर, नयनवा भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥6॥
रउदे सुखाएब झिलमिल पगिया हे बाबू।
छँहिरे सुखाएब सिर सेनुर, नयनवाँ भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥7॥

गीत-5

लिपिपोति देलूँ अँगनमा- अँगनमा सोहामन हे।
गजमोती चउका पुरावल सोने कलस धरी हे॥1॥
आजु हे रामजी के बियाह, चलहुँ मंगल गामनहे।
जुगजुग जीथिन- सीतादेइ अवरो सीरीराम दुलहा हे॥2॥
भोगथिन अजोधेया के राज, तीनों लोक सुन्नर हे।
जुगजुग बढ़े अहिवात-, जे मंगल गावत हे॥3॥

लगन गीत

अमवा के डाढ़ चढ़ि बोलेले कोइलिया।
लगन लगन डिँड़ियाय हे॥1॥
एहो नगरिया माइ हे, कोई नहीं जागथिने।
लगन न माँगथिन लिखाइ जी॥2॥
एहो नगरिया माइ हे, जागथिन कवन बाबू,
हमें लेबइ लगन लिखाइ हे॥3॥
घर से बाहर भेलन दुलरइता दुलहा,
आजु बाबू लगन लिखाहु जी॥4॥
अइसन लगन लिखिह जी बाबू,
ओहे लगन होइतो बियाह जी॥5॥

चुमावन गीत

गीत-1

चनन काटिए काटि, पिढ़वा बनयबइ सिवसंकर हे।
से पिढ़वा रामजी बइठयबइ, सुनहु सिवसंकर हे॥1॥
सोना के पइलवा में सेनुरा धरबहइ सिवसंकर हे।
सीता के मँगिवा भरयबइ, सुनहु सिवसंकर हे॥2॥
सोना के परियवा में अछत धरबवइ सिवसंकर हे।
सेहु अछत रामजी चुमयबइ, सुनहु सिवसंकर हे॥3॥
घुमावे चखली में सासु मनाइन सिवसंकर हे।
चुमिचुमि देल असीस-, सुनहु सिवसंकर हे॥4॥
जुगजुग जियजिन रामचंदर सिवसंकर हे।-
होइहो अजोधेया के राजा, सुनहु सिवसंकर हे॥5॥

गीत-2

मिलीजुली चलहु चुमावन-, सुनहु सिवसंकर हे।
आजु हुइ राम के बियाह, सुनहु सिवसंकर हे॥1॥
दसपाँच सखिया बारिय भोरे- अउरो बड़ सुन्नर हे।
हाथ लेले सोने के थार सुनहु सिवसंकर हे॥2॥
चुमवल मइया कोसिला मइया, अवरो तीनों मइया हे।
आज अजोधेया में उछाह सुनहु सिवसंकर हे॥3॥

गीत-3

घुमवन बइठलन कउन मइया सिवसंकर हे।
बहमाँहि भेल अनंद, कहहु सिवसंकर हे॥1॥
चुमवन बइठलन कोसिला रानी, सुनु सिवसंकर हे।
अजोधाहिं भेगेलइ अनंद, कहहु सिवसंकर हे॥2॥
मोतियनि अँजुरी भरावल, सुनहु सिवसंकर हे।
जवरे जनइया रीखी बेटी, सुनहु सिवसंकर हे॥3॥
भँटवा हे गरजइ दरोजे बइठी, सुनहु सिवसंकर हे।
भँटीनियाँ मँड़ोवा धइले ठाढ़, सुनहु सिवसंकर हे॥4॥
नउबा जे हँस हइ निछावर लागी, सुनहु सिवसंकर हे।
नउनियाँ जे रूसलइ पटोर ला सुनहु सिवसंकर हे॥5॥
देबो गे नउनियाँ से सोने रूपे पीत पटम्मर हे।
देबो हम अजोधा के राज, सुनहु सिवसंकर हे॥6॥

उबटन गीत

गीत-1

ऊ जे जब रे गोहुम केरे ओबटन राई सरसो के तेल, अउरो फुलेल।
से बेटा बइठल ओबटन दुलरइता बइठल ओबटन॥1॥
लगवलऽ मइयो सोहागिन, हाँथ कँगन डोलाय, नयना घुमाए।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन॥2॥
लगवल चाची सोहागिन, हाँथ कँगन डोलाय, नयना घुमाय।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन॥3॥
लगवल फूआ सोहागिन, हाँथ कँगना डोलाए, नयना घुमाए।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन॥4॥

गीत-2

कहमाँहि दुभिया जनम गेलइ जी बाबूजी,
कहमाँहि पसरल डाढ़ हो।1॥
दुअराहिं दुभिया जनम गेलउ गे बेटी,
मड़वाहिं पसरल डाढ़ हे॥2॥
सोनमा ऐसन धिया हारल जी बाबा।
कारकोचिलवा- हथुन दमाद हे॥3॥
कारहिंकार- जनि घोसहुँ गे बेटी,
कार अजोधेया सिरी राम हे॥4॥
कार के छतिया चननमा सोभइ गे बेटी।
तिलक सोभइ लिलार हे॥5॥
कार के हाथ बेरवा सोभइ गे बेटी।
मुखहिं सोभइ बीरा पान हे॥6॥
मथवा में सोभइ चकमक पगड़िया।
गलवा सोभइ मोतीहार हे॥7॥
ऐसन बर के कार काहे कहलऽ।
कार हथिन सिरी राम हे॥8॥

गीत-3

राई सरसों के तेल अवरो फुलेल, सो बेटा बइठल हइ उबटन।
दादी सोहागिन, हाथ कँगना डोलाय, लुलुहा घुमाय, नयना लड़ाय,
सो बेटा बइठल हइ उबटन॥1॥
राई सरसों के तेल, अवरो फुलेल, सो बेटा बइठल हइ उबटन।
उनकर मइया सोहागिन, हाथकँगना डोलाय-, लुलुहा घुमाय,
नयना लड़ाय, सो बेटा बइठल हइ उबटन॥2॥
राई सरसों के तेल, अवरो फुलेल, सो बेटा बइठल हइ उबटन।
उनकर चाची सोहागिन, हाथ कँगना डोलाय, लुलुहा घुमाय,
नयना लड़ाय, सो बेटा बइठल हइ उबटन॥3॥

गीत-4

सोना के ढकनी में हरदी परोसल।
उपरे लहलही दूभ हो, सिरवा हरदी चढ़ावे॥1॥
पहिले चढ़ावे बराम्हन अप्पन।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे।
सोना के ढकनी में हरदी परोसन।
उपरे लहलही दूभ हो, सिरवा हरदी चढ़ावे॥2॥
पहिले चढ़ावे बाबा जे अप्पन।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे॥3॥
पहिले चढ़ावे चच्चा जे अप्पन।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे॥4॥

गीत-5

कवने रइया हरदी बेसाहल हे।
कवने देई पिसतन लगतउ गे बेटी उबटन॥1॥
दादा रइया हरदी बेसहलन, दादी देइ पिसलन,
लगतउ गे बेटी उबटन, लगतउ गे बेटी तेलफुलेल॥-2॥

कवने रइया हरदी बेसाहल हे।
कवने देइ पिसतन, लगतउ गे बेटी उबटन॥3॥
बाबू रइया हरदी बेसहलन, मइया देइ पिसलन।
लगतउ गे बेटी उबटन, लगतउ गे बेटी तेल फुलेल॥4॥

गीत-6

कहमाँहि हरदी जलम लेले कहमाँहि लेले बसेर
हरदिया मन भावे।
कुरखेत हरदी जलम लेले, मड़वा में लेलक बसेर,
हरदिया मन भावे॥1॥
पहिले चढ़ावे बराम्हन लोग, तब चढ़ावे सभलोग,
हरदिया मन भावे॥2॥

कलसा गीत

गीत-1

कय गुने कलसा हे, कय गुने भार
बोल हे कलसवा हे, के लेत भार॥1॥
छव गुने कलसा हे, नव गुने भार।
बोलथि जनइया रिखी हम लेबो भार॥2॥
गंगाजल पानी देबो-, पुंगीफल धान।-
चउमक बराय देबो, सगरो इँजोर॥3॥
धन अनपुरना देइ, धन रउरा भाग।
कलसा धराइ गेल जनइया रिखी के मड़वा॥4॥

गीत-2

चीकन मटिया कोड़ि मँगाएल, ऊँची कय मँड़वा छवाएल।
जनकपुर जय जय हे॥1॥
सोने कलस लय पुरहर धरब, मानिक लेसु फहराय
जनकपुर जय जय हे॥2॥
लाल लाल सतरंजी अँगन को बिछाएल।
जनकपुर जय जय हे॥3॥
जय जय बोले नउअवा से बाम्हन, जय जय बोले सब लोग।
जनकपुर जय जय हे॥4॥
धन राजा दसरथ, धन हे कोसिलेया।
धन हे सीता देई के भाग, रामे बर पायल हे॥5॥

गीत-3

कहमाँहि किसुन जी जलम लेलन, कहमाँहि बाजत बधावा
सुनहु जदुनन्नन हे।
मथुराहिं किसुनजी जलम लेलन, गोखुला में बाजत बधावा,

सुनहु जदुनन्नन हे॥1॥
कयराहिं काटी कुटी-खँम्हवा गड़ावल छोटेमोटे-
मँड़वा बनावल, सुनहु।
खरही काटीकुटी- मड़वा छवायबइ मँड़वा में कलसा
धरयबइ सुनहु॥2॥
ओकरा में भरबई गंगा पानी, ओकरा में धरबइ कसइलिया सुनहु।
ओकरा में धरबइ पलबिया ओकरा में धरबइ पनफूलवा- सुनहु॥3॥
बारबइ हम मानिक दियरा झलमल करतइ दियरा, सुनहु जदुनन्नन हे।
मँड़वहिं रखबइ हरदिया, पूजबइ हम गउरीगनेसवा- सुनहु जदुनन्नन हे॥4॥
उपरे अनंद पितर लोग, अब बंश बाढ़ल मोर, सुनहु जदुनन्नन हे।
मँड़वहिं हो गेल इँजोर सुनहु जदुनन्नन हे॥5॥

गीत-4

‘‘आगि लागे परभु चुनरिया, वलकवा के हाँसुल हे।
बजर पड़े चढ़न के घोड़वा, नइहर कइसे तेजब हे॥’’
अँगना जे लिपली दहादही माड़ो छावली हे।
ताहि चढ़ि भइया निरेखे बहिनी चलि आवल हे॥1॥
मचिया बइठल मोरा धनिया त धनिया सुलच्छन हे।
धनिया, आवऽ हथिन बाबा के दुलारी, गरब जनि बोलहु हे॥2॥
आवहु हे बहिनी, आवहु, मोरा चधुराइन हे।
बहिनी, बइठहु बाबा चउपरिया मंगल दस गावह, गाइके सुनावहु हे॥3॥
गाएब हो भइया गाएब, गाइ के सुनाएब हे।
भइया, हमरा के का देवऽ दान, लहसि धरवा जायेब हे॥4॥
गावहु, ए ननद गावहु, गाइके सुनावहु हे।
ननदो, जे तोरा हिरदो में समाए लेइके घरवा जाहुक हे॥5॥
हमरा के दीहऽ चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
भउजी, प्रभु के चढ़न के घोड़वा, लहसि घर जाएब हे॥7॥
कहाँ पाएब लाली चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
ननदो, कहवाँ पाएब चढ़न के घोड़वा, लउटि घरवा जाहु हे॥7॥

रोइत जाइह ननदिया, बिलखइत जाहइ भगिनवाँ न हे।
हँसइत जाहइ ननदोसिया, भले रे मान तोड़ल हे॥8॥
चुप रहु चुप रहु, धनिया, मोर चधुराइन हे।
हम जएबो राजा के नोकरिया, दरब लेइ आएब हे॥9॥
तोहरा ला लएबो चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
अपना ला चढ़न के घोड़वा, नइहर बिसरावहु हे॥10॥
आगि लागे परभु चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
बजर परे चढ़न के घोड़वा, नइहर कइसे तेजब हे॥11॥

घिउढारी गीत

गीत-1

अगे अगे चेरिया कवन चेरिया गे।
चेरिया अँगना बहारि देखूँ, भइया नहीं आयल हे॥1॥
केकरा सँघ बइठम चनन पीढ़वा।
केकरा से सोभे मोर माँड़ो भइया नहीं आयल हे॥2॥
सामी सँघे बइठम चनन पीढ़वा।
गोतिया से सोभे मोर माँड़ो, भइया नहीं आयल हे॥3॥
कइसे पेहरब इयरी पियरिया से कइसे रँगायब गोड़।
मोरा लेखे माँड़ो हे बिजुबन बिनु भइया न सोभे घीउढार॥4॥
चमकि के बोलहइ जे चेरिया।
झमकइते आवे तोरा भाइ, रखूं कोठीकान्हे- अँजवार॥5॥
दुअरहिं घोड़े हिंहियायल डोला धमसायल हे।
आगे आगे आवथिन दुलरइता भइया, सँघ भउजी मोर हे॥6॥
डँड़िया ही आवल पोखर कान्हें देखूँ चेरी भइया केर सान।
भइया मोरा लखिया हजरिया।
लौलन इयरी पियरिया, भउजी सिर सेनुर हे॥7॥
चउका चनन हम बइठम, इयरी पियरी पेन्हिके हे॥8॥
अब हमरमाँड़ो राज गाजल होवे घिउढार बिधि हे।
बेदे बेदे भेल घिउढार, सुमंगल गावल हे॥9॥

गीत-2

हरियर लेमुआ हे हरियर जोवा केरा खेत॥1॥
एक अचरज हम सुनलूँ, दुलरइते बाबू के मड़वा जनेऊ।
मड़वहिं बैठल दुलरइते बाबू, गेंठ जोड़ि दुलरइते सुहवे हे॥2॥
बेदिअहिं घीउ हे ढारिये गेल, सगरो भेइ गल इजोर।
सरग अनंद भेल पितर लोग, अबे बंस बाढ़ल मोर॥3॥

गीत-3

मड़वा डगमग खरही बिनु, कलसा पुरहर बिनु हे।
मन मोरे डगमग नइहर बिनु, अप्पन सहोदर बिनु हे॥1॥
मड़वहिं बइठल गोतिया लोग, भनसा गोतिनिया लोग हे।
तइयो नहीं मन मोरा हुलसल अप्पन नइहर बिनु हे॥2॥
इयरी पियरी कइसे पेन्हब, अप्पन नइहर बिनु हे।
चउका चनन कइसे बइठब, अप्पन जयल बिनु हे।
अरप दरप कइसे बोलब, अप्पन पुरुख बिनु हे॥3॥

गीत-4

मड़वा न सोभले कलसवा बिनु, अवरो पुरहरवा बिनु हे।
मड़वा न सोभले गोतियवा बिनु, अवरो सवासिन बिनु हे॥1॥
चउका चनन कइसे बइठब, अपना पुरुखवा बिनु हे।
अरबे दरबे कइसे लुटायब, अपना पुतरवा बिनु हे॥2॥
लाल पियर कइसे पेन्हब, अपन धिया बिनु हे।
इयरी पियरी कइसे पेन्हब, अपना नइहरवा बिनु हे॥3॥

पैरपूजी गीत

चउका चढ़ि बइठलन कवन साही, राजा रघुनन्नन हरि।
पूजहऽ पंडित जी के पाओ सुनहु रघुनन्नन हरि॥1॥
पाओं पुजइते सिर नेवले राजा रघुनन्नन हरि।
देहऽ पंडितजी हमरो असीस, सुनहु रघुनन्नन हरि॥2॥
दुधवे नहइह बाबू पुतवे पझइह रघुनन्नन हरि।
चउका चढ़ि बइठलन कवन साही, राजा रघुनन्नन हरि।
पूजहऽ चाचा जी के पाओं सुनहु रघुनन्नन हरि॥4॥
पाओं पुजइते सिर नेवले, राजा रघुनन्नन हरि।
देहऽ चच्चा जी हमरो असीम, सुनहु रघुनन्नन हरि॥5॥
दुधवे नहइह बाबू, पुतवे पझइह, रघुनन्नन हरि॥6॥
चउका चढ़ि बइठलन कवन साही राजा रघुनन्नन हरि।
पूजहऽ चाची जी के पाओं, सुनहु रघुनन्नन हरि॥7॥
पाओं पुजइते सिर नेवले, राजा रघुनन्नन हरि।
दुधवे नहइह बाबू पुतवे पझइह, रघुनन्नन हरि॥9॥

बेटा-विवाह गीत

गीत-1

बाबू सिर जोगे टोपी त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका सुनहु लोगे॥1॥
बाबू देह जोगे कुरता त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका, सुनहु लोगे॥2॥
बाबू गोड़ जोग धोती त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका, सुनहु लोगे॥3॥

गीत- 2

मलिया के अँगना कसइलिया के डरवा।
लचकि लचकि भेल डार हे॥1॥
घर के बाहर भेलन, दुलरइता दुलहा।
तोड़लन कसइलिया के डार हे॥2॥
घर के बाहर भेलन, दुलरइता दादा।
मालिन ओरहन देइ हे॥3॥
बरजहुँ हो बाबू, अपन दुलरुआ।
तोड़ल कसइलिया के डार हे॥4॥
जनु कुछु कहऽ मालिन, हमरा दुलरुआ।
हम देबो कसइलिया के दाम हे॥5॥

गीत- 3

बारह बरीस के नन्हुआँ कवन दुलहा, खेलत गेलन बड़ी दूर।
उहवाँ से लइलन हारिले सुगवा तिहलन हिरदा लगाय॥1॥
सब कोई पेन्हें अँगिया से टोपिया, सुगवाहिं अलुरी पसार।
हमरा के चाहीं मखमल चदरिया, हमहूँ जायब बरियात॥2॥
सब कोई चढ़लन हथिया से घोड़बा, हमरा के चाहीं सोने के पिंजड़वा।
हमहूँ जायब बरियात॥3॥
सब कोई खा हथी पर पकवनवाँ, हमरा के चाहीं बूँट के झँगरिया।
हमहूँ जायब बरियात॥4॥
सब कोई देखे बर बरियतिया, सासु निरेखे धियवा दमाद।
अइसन लाढ़ी रे बर कतहूँ न देखलूँ, सुगवा लिहलन बरियात॥5॥
आहि जे माई पर परोसिन, सुगवा के डीठि जनि नाओ।
बन केइ सुगवा बनहिं चली जइहें, संग साथी अइले बरियात॥6॥

गीत- 4

बाबू के मउरिया में लगले अनार कलिया।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया॥1॥
बाबू सरहज से बोलिहऽ अमीर बोलिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया॥2॥
बाबू के दोरवा में लगले अनार कलिया।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया॥3॥
बाबू के अँगुठी में लगले अनार कलिया।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया।4॥

गीत -5

हम तोरा पूछिला कवन अलबेलवा।
के रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल मउरिया॥1॥
मलिया के जलमल बँगाली बहनोइया।
ओहीरे सम्हारे बाबू के एहो रँगल मउरिया॥2॥
हम तोरा पूछिला कवन अलबेलवा।
के रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जोड़वा॥3॥
दरजिया के जलमल बँगाली बहनोइया।
ओही रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जोड़वा॥4॥
हम तोरा पूछिला कवन अलबेलवा।
के रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जुतवा॥5॥
चमरा के जलमल बँगाली बहनोइया।
ओही रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जुतवा॥6॥

गीत -6

सभवा बइठल तोहें दादा, सभे दादा उठिकर।
हे साजहु बरियतिया उठिकर, हे साजहु
बरियतिया उठिकर॥1॥
मचिया बइठली तोहें दादी, सभे दादी उठिकर।
हे साजहु डाला दउरवा उठिकर, हे साजहु
डाला दउरवा उठिकर॥2॥
ससुरा से आयती बहिन सभे, बहिनी उठिकर।
हे आँजहु भइया अँखिया उठिकर॥3॥
कथि लाय मुहँमा उगारब कथिलाय।
हे आँजहु भइया के अँखिया उठिकर॥4॥
तेल रे उबटन लाए मुहँमा उगारब।
कजरवा लाय हे आँजब भइया के अँखिया उठिकर॥5॥

गीत- 7

हमरो कवन बाबू बिरीछ तर खाड़ा गे माइ।
थर थर काँपइ गे माइ॥1॥
हथिया पियासल आवइ, सुढ़ँवा उनारइ गे माइ।
घोड़वा भूखल आवइ लगमियाँ चिबावइ गे माइ॥2॥
लोगवन रउदाइल आवइ, पैरवो न धोवइ गे माइ।
दुलहा झउराहा आवइ, सिरबो न नेवावइ गे माइ॥3॥
हथिया के पोखरा देवइ, सुँढ़वो न उनारइ गे माइ।
घोड़वा के दाना देबइ, लहलह दुभिया गे माइ॥4॥
लोगवन के पटुर देवइ, पैरवा जे धोवइ गे माइ।
दुलहा के कनिया देबइ, सिरवा नेवावइ गे माइ॥5॥

गीत- 8

टिकवा ओलरि गेल माँग से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गीभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से॥1॥
कंठवा ओलरि गेल गल्ला से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से॥2॥
बलवा ओलरि गेल लिलुहा से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से॥3॥
छागल ओलरि गेल पाँव से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से॥4॥

गीत- 9

अँखिआ त हवऽ दुलरू रतन के जोतवा ओठवनि चुअले गुलाब हे।
अतिना सुरति तोरा हलवऽ दुलरू, कउना बिधि रहलऽ कुआँर हे।
बाबा जे हमर दर रे देवनियाँ पितिया जोतले कुरखेत हे।
भइया जे हमर जिरवा लदनिया ओहे बिधि रहली कुआँर हे॥2॥
बाबा जे छोड़लन दर रे देवनियाँ, पितिया छोड़लन कुरखेत हे।
भइया जे छोड़लन जिरवा लदनियाँ, अब मोरा होएत बियाह हे॥3॥
केकर नदिया हे झिलमिल पनियाँ, केकर नदिया में बहले सेवार हे।
केकर नदिया में चेल्हवा मछरिया, कउन दुलहा नावे जाल हे॥4॥
सासु के नदिया में झिलमिल पनियाँ, ससुर के नदिया बहले सेवार हे।
सरवा के नदिया चेल्हवा मछरिया, कवन दुलहा नावे जाल हे॥5॥
एक जाल नवलऽ दुलहा दुइ जाल नवलऽ, बझि गेलबऽ घोंघवा सेवार हे।
तीसरहिं जलवा जब नवलऽ दुलरू, बझि गेल कनिया कुआँर हे॥6॥
कउना रिखइया के हहु तुहूँ नाती परनाती हे, कउना रिखइया के हहु तुहूँ पूत हे।
कउने भरोसे तुहूँ जलवा लगवलऽ, कहवाँहिं बेख तोहार हे॥7॥
कवन सिंह के हीं हम नाती परनाती, कवन सिंह के हम पूत हे।
जँघिया भरोसे हम जलावा लगवली, कवन पुर बेख हमार हे॥8॥

गीत-10

चललन कवन साही बजना बजाइ हे।
दहकि चिरइया सब उठलन चेहाइ हे॥1॥
का तुहूँ चिरइया सब उठलऽ चेहाइ हे।
हमरा कवन पुता बियाहल जाइ हे॥2॥
बइठलन कवन साही जाजिम डसाइ हे।
जँघिया कवन पुता कचरल पान हे॥3॥
बइठलन कवन भँडुआ खरइ डसाइ हे।
जँघिया दुलारी बेटी लट छटकाइ हे॥4॥
फेंकलन कवन दुलहा बिरवा पचास हे।

बिड़बो न लेवे सुगइ मुखहूँ न बोले हे॥5॥
केकरा दिमागे हे सुगइ, बिरवो न लेवे हे।
केकरा दिमागे हे सुगइ, मुखहूँ न बोले हे॥6॥
बाबा के दिमागे जी परभु, बिरवो न लेवीं हे।
भइया के दिमागे जी परभु, मुखहूँ न बोली हे॥7॥
ऊँचे चउरा नीचे चउरा, कवन पुर नगरिया हे।
हुएँ तोरा देखब हे सुगइ, बाबा के दिमाग हे॥8॥
हुएँ तोरा देखब हे सुगई, भइया के गुमान हे।
चलु चलु बरियतिया सब, अपनो दुआर हे।
भरले मजलिसवे सुगइ, देलन जबाब हे।
चलु चलु बरियतिया सब, अपनो दुआर हे॥9॥
हमरा कवन बहिनी, छेंकलेदुआर हे।
छोड़ू छोड़ू अगे बहिनी, हमरो दुआर हे॥
अवइथथुन दुलारी भउजो, लीहऽ खोइँछा झार हे॥10॥
भउजी के भइया बाप, निपटे गँवार हे।
खोइँछा में देलन हो भइया, एहो दुभि धान हे॥11॥
छोड़ू छोड़ू अगे बहिनी, हमरो दुआर हे।
तोहरा के देबो में बहिनी, कंठा गढ़ाय हे।
पाहुन के देबो गे बहिनी, चढ़ेला घोड़बा हे॥12॥

गीत-11

बरसय जी बाबू, रिमझिम बुँदवा, बरसय जी॥1॥
हाथी साजूँ, घोड़ा साजूँ, साजूँ बरियतिया।
साज देहु जी बाबा, दँड़िया सवरिया, साज देहु॥2॥
हाथी के पाँव घइले मामा खड़ी है, सुन लेहु जी।
बाबू हमरी बचनियाँ, सुन लेहु जी॥3॥
कइसे में सुनिओ मामा, तोहरी बचनियाँ।
जा हियो जी मामा, धनि के उदेसवा।
बियाहन को मामा, राजा बंसी बेटिया॥4॥

गीत-12

अपनी महलिया से मलिया मउरी गुथहइ।
जहाँ कवन बाबू खाड़ जी॥1॥
मैं तोरा पूछूँ मलियवा हो भइया।
केते दूर बसे ससुरार जी॥2॥
तोर ससुररिया, बाबू, मउरिया से खैंचल।
चुनमें चुनेटल तोर दुआर जी॥3॥
मोतिया चमकइ बाबू, तोहर ससुररिया।
चारो गिरदा गड़ल हो निसान जी॥4॥
अपनी महलिया में दरजी जोड़ा सियइ।
जहाँ कवन बाबू खाड़ जी॥5॥
मैं तोरा पूछूँ दरजियवा हो भइया।
केते दूर बसे ससुरार जी॥6॥
तोर ससुररिया बाबू, जोड़वा से खैंचल।
चुनमें चुनेटल तोर दुआर जी॥7॥
मोतिया चमकइ बाबू, तोहर ससुररिया।
चारो गिरदा गाड़ल हइ निसान जी॥8॥

गीत-13

उगि गेल चँदवा, छपित भेल हे सुरूजा।
बइठहू न दुलरइता दुलहा, फूल केर हे सेजिया॥1॥
कइसे हम बइठू हे सासु, फूल केर हे सेजिया।
मोर दादा साहेब भींजत होइहें, चारो पहर रे रतिया॥2॥
दादा के देबो रे दुलहा, सोनामूठी रे छतवा।
छतबे इड़ोते रे दादा, चलत बरियतिया॥3॥

गीत-14

नीमिया रे कड़ुआइन सीतल बतास बहे हे।
ताहि तरे ठाढ़ दुलरइता दुलहा, नयना दुनो लोर ढरे हे॥1॥
घर से बाहर भेलन दुलरइता दादा, काहे बाबू लोर ढरे हे।
किया बाबू आजन बाजन थोड़ा भेल, साजन घुमइला भेल हे॥2॥
माइ के जनमल दुलरइता भइया, सेहु न जोरे जयतन हे।
पाँचो भइया पाँचो दहिन बहियाँ जइहें, जौरे बहनोइया जइहें हे॥3॥

गीत-15

सभवा बइठल तोहें दादा, सभे दादा उठिकर।
हे साजहु बरियतिया उठिकर, हे साजहु
बरियतिया उठिकर॥1॥
मचिया बइठली तोहें दादी, सभे दादी उठिकर।
हे साजहु डाला दउरवा उठिकर, हे साजहु
डाला दउरवा उठिकर॥2॥
ससुरा से आयती बहिन सभे, बहिनी उठिकर।
हे आँजहु भइया अँखिया उठिकर॥3॥
कथि लाय मुहँमा उगारब कथिलाय।
हे आँजहु भइया के अँखिया उठिकर॥4॥
तेल रे उबटन लाए मुहँमा उगारब।
कजरवा लाय हे आँजब भइया के अँखिया उठिकर॥5॥

बेटी-विवाह गीत

गीत-1

हाथ सिन्होरबा गे बेटी, खोंइछा दुब्भी पान।
चली भेली दुलारी गे बेटी, दादा दरबार॥1॥
सुत्तल हला जी दादा, उठला चेहाय।
किया लोभे अइला गे बेटी, दादा दरबार॥2॥
अरबो न माँगियो जी दादा, दरब दुइ चार।
एक हम माँगियो जी दादा, दादी के सोहाग॥3॥
मचिया बइठली जी दादी, दहिन लटा झार।
लेहु दुलरइते गे बेटी, अँचरा पसार॥4॥
अँचरा के जोगवा गे दादी, झुरिये झुरि जाय।
मँगिया सेनुरबा गे दादी, जनम अहियात॥5॥

गीत- 2

सियाजी बाढ़ऽ हथिन अँगना, माता निरखै हे।
माइ हे, अब सीता बियाहन जोग सीता जोग बर चाही हे॥1॥
हाँथ काय लेहु बराम्हन धोबिया, काँखे पोथिया हे।
चलि जाहो नगर अजोधेया, सीता जोग बर चाही हे॥2॥
काहाँ से बराम्हन बाइला काहाँ घाइला हे।
कउन रिखी कनेया कुआँरी, कउन बर चाही हे॥3॥
जनकपुर से हम बराम्हन आइलूँ अजोधेया घायलूँ हे।
जनक रिखी कनेया कुआँरी, राम बर चाही हे॥4॥
केरे उरेहल सिर मटुका तिलक चढ़ावल हे।
अहे, केरे सजत बरियात, कउन सँग जायत हे॥5॥
जनक उरेहल सिर मुटुका, तिलक चढ़ावल हे।
अहे, दसरथ सजत बरियात, भरथ सँग जायेता हे॥6॥

गीत- 3

बेरहिं बेरी कोइल रे, तोहिं बरजों हे।
कोइल रे, आज बनवाँ चरन जनि जाहु।
अहेरिया रजवा चलि अयतन हे॥1॥
अयतन तऽ आवे दहुन अहेरिया रजवा हे।
अहे सोने के पिंजरवा चढ़ि बइठम हे।
अहेरिया रजवा का करतन हे?॥2॥
बेरहिं बेरी बेटी तोहिं बरजों हे।
बेटी दुअरे खेलन जनि जाहु।
कवन दुलहा चलि अयतन हे॥3॥
अयतन तऽ आवे दहुन कवन दुलहा हे।
अहे सोने पलकिया चढ़ि बइठम हे।
कवन दुलहा का करतन हे?॥4॥
एक कोस गेल डाँड़ी दुइ कोस हे।
अहे अम्मा रोवथि छतिया फाड़ि हे।
गोदिया बेटी, आजु सुन्ना भेल हे॥5॥
दुइ कोस गेल डाँड़ी, तीन कोस हे।
अहे चाची रोवथि छतिया फाड़ि हे।
सेजिया आजु बेटो, सुन्ना भेल हे॥6॥
तीन कोस गेल डाँड़ी, चार कोस हे।
अहो भउजी रोवथि छतिया फाड़ि हे।
भनसा ननदी आजु सुन्ना भेल हे॥7॥
चार कोस गेल डाँड़ी, पाँच कोस हे।
अहे सखी सब रोयथिन छतिया फाड़ि हे।
सलेहर आज सखी सुन्ना भेल हे॥8॥

गीत- 4

सींकी के बढ़निया गे बेटी, सिरहनमा लाइ गे रखिहऽ।
भोरे भिनसरवा गे बेटी, अँगनमा बाढ़ी गे लइहऽ॥1॥
सेहो बढ़नमा गे बेटी, करखेतवा जाइऽ गे बिंगिह।
सेहू जनमतइ गे बेटी, कदम जुड़ी छँहियाँ॥2॥
सेहू तरे उतरइ गे बेटी, सतपँचुआ के जनमल दमदा।
लँगटवा के जनमल दमदा॥3॥

गीत- 5

हमरो बाबाजी के चारों खंड अँगना, चहुँ दिसि लगल केबार हे।
ओहि खंभ ओठँगल बेटी दुलरइती बेटी, बाबा से मिनती हमार हे॥1॥
काहाँ तोंहे बाबा पयलऽ गजदाँत हथिया, काहाँ पयलऽ गजमोती हार हे।
काहाँ तोंहे पयलऽ डँटहर पनमा, काहाँ पयलऽ राजकुमार हे॥2॥
राजा घर पयली बेटी गजदाँत हथिया, पैसारी घर गजमोती हार हे।
बरियाहि पइली डँटहर पनमा, देस पइसी राजकुमार हे॥3॥
कइसे के चिन्हबऽ बाबा गजदाँत हथिया, कइसे के गजमोती हार हे।
कइसे तों चिन्हबऽ बाबा डँटहर पनमा, कइसे के राजकुमार हे॥4॥
खरग से चिन्हब गजदाँत हथिया, झलक से गजमोती हार हे।
डंटिया से चिन्हब डँटहर पनमा, पोथिया पढ़इते राजकुमार हे॥5॥

गीत- 6

जोगवा बेसाहन चलल मोर भइया रे टोनमा।
भइया चलले सँगे साथ रे टोनमा॥1॥
घुरि फिरि देखथिन बेटी दुलरइतिन बेटी रे टोनमा।
अँखियन से ढरे लोर रे टोनमा॥2॥
आगे आगे अवथिन भइया दुलरुआ भइया रे टोनमा।
पाछे पाछे भउजी चली आवे रे टोनमा॥3॥
भउजी के हाथ में सोने के सिंघोरबा रे टोनमा।
भइया हाथे तरवार रे टोनमा॥4॥

गीत- 7

बैठल सिया मनमारी से रामे रामे।
अब सिया रहली कुमारी, से रामे रामे॥1॥
गाइ के गोबर अँगना नीपल।
मोतियन चौका पुराइ से रामे रामे।
धनुस देलन ओठगाँइ से रामे रामे॥2॥
दसहिं देस के भूप सब आयल।
धनुसा देखिये मुरझाइ, से रामे रामे॥3॥
अजोधा नगरिया से राम लछुमन आयल।
धनुसा देखिये मुसकाइ, से रामे रामे॥4॥
गुरु अगेयाँ पाइ के रामजी धनुसा उठयलन।
धनुस कइलन तीन खंड, से रामे रामे।
अब सिय होयतो बियाह, से रामे रामे॥5॥
मुनि सब जय जय बोले, से रामे रामे।
सखी सब फूल बरसाये, से रामे रामे॥6॥

गीत- 8

ऊँच तोरा लिलरा गे बेटी, मनि बरे जोत।
दँतबा के जोत गे बेटी, बिजुली चमके॥1॥
एक तो सुनली गे बेटी, मएभा सासु।
दोसरे सुनली के बेटी, करिया दमाद।
खयबो में माहुर बिरवा लगयबो में फाँसी,
येही धिया लागी॥2॥
जनि खाहु माहुर बिरवा, जनि लगाबहु फाँसी।
भइया के लिखल हे अम्मा, बाबा चउपरिया।
हमरो लिखल हे अम्मा, जयबो दूर देसवा॥3॥
जाहि दिन हे अम्मा, भइया के जलमवाँ[

सोने छूरी कटइले नार हे।
जाहि दिन अहे अम्मा, हमरो जलमवाँ,
हँसुआ खोजइते हे अम्मा, खुरपी न भेंटे;
झिटकी कटइले मोरो नार हे॥4॥

गीत- 9

काहे बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे।
हम तो रे बाबुल बेले की कलियाँ, घर घर माँगी जायँ रे।
लखिया बाबुल मोरे॥1॥
हम तो रे बाबुल खूँटे की गइया।
जिधर हाँको हँक जाय रे, लखिया बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे॥2॥
ताको भरी मैंने गुड़िया न छोड़ी।
छोड़ा सहेला साथ रे, सुन बाबुल मोरे॥3॥
भइया को दिए हो बाबू, महला दुमहला।
हमको दिए हो बिदेस रे, लखियाबाबुल मोरे॥4॥
कोठे के नीचे पलकिया जो निकली।
बीरन ने खाई पछार रे, सुन बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, सुन बाबुल मोरे॥5॥

गीत- 10

अब कैसे जाऊँ लाड़ो सामने खड़ी रे लाल।
माँगो टीका पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो दिल में बसी रे लाल॥1॥
नाको बेसर पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥2॥
कानो बाली पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।

अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥3॥
हाथों कँगन पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखिया लड़ी रे लाल॥4॥
गले माला पहन लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखिया लड़ी रे लाल॥5॥
हाथों पहुँची पेन्ह लाडो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥6॥
जान सूहा पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो सामने खड़ी रे लाल॥7॥

गीत- 11

मेरी डोलिया लगी दरवाजे,
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥1॥
छोड़ू दादू बीबी अँचला दादा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥2॥
छोड़ू अम्माँ बीबी अँचला, अब्बा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥3॥
छोड़ू चच्ची बीबी अँचला, चच्चा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥4॥
छोड़ू खाला बीबी अँचला, खालू मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥5॥

गीत -12

माँग लाड़ो टीका सोभे, मोतिये की बहार।
लाड़ो हवले चलि आओ।
ए बोलवे दिलवर जान, लाड़ो हवले चलि आओ॥1॥
नाक लाड़ो बेसर सोभे, चुनिये की बहार।

हवले चलि आओ, देखे दिलबर जान॥2॥
कान लाड़ो बाली सोभे, झुमके की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥3॥
गले लाड़ो माला सोभे, सिकड़ी की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे दिलबर जान॥4॥
साँवली सलोनी लाड़ो, सर के लम्बे बाल।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखें दिलवर जान॥5॥
जान लाड़ो सूहा सोभे, छापे की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥6॥

गीत -13

लाड़ो को लाल बुलावे यह बाजूबन झूमता।
सहाना लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता।
हजरिया लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता॥1॥
माँगो टीका पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ो को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥2॥
नाको बेसर पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
सहाना लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥3॥
कानो बाली पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
हजरिया लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥4॥
गले हार पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ो को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥5॥
हाथों कँगन पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ों को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥6॥

नहछू गीत

जबे पग छुअलक नउनियाँ जयजय कहु सिय के।-
लछमी बिराजे हिरदा द्वार जय जय कहु सिय के॥1॥
एक नोह छिलले दूसर नोह छिलले, जय जय कहु सिय के॥2॥
टुके टुके सिय मुँह ताके, जय जय कहु सिय के॥2॥
रानी सुनयना देलन हाँथ के कगनमा, जय जय कहु सिय के।
आउरो देलन गलहार, जय जय कहु सिय के॥3॥
हँसत खेलइते घर गेलइ नउनियाँ, जय जय कहु सिय के।
दुअरे पर नवबत झारबजने से है।
जय जय कहु सिय के॥4॥

जोग-मँगाई गीत

गीत-1

लेहऽ दुलरइता भइया कँधवा कोदरिया।
परबत से जड़ी ला देहु भइया॥1॥
तोड़िए काटिए भइया बाँहलन मोटरिया।
लऽ न दुलरइतिन बहिनी जोग के जड़िया॥2॥
पिसिए कुटिए बहिनी भरल कटोरिया।
पीअऽ न दुलरइता दुलहा जोग के जड़िया॥3॥
हमें न पीबो सुघइ जोग के जड़िया।
हम भागी जायबो बाबा के पासे॥4॥

गीत- 2

हम त माँगली आजन बाजन, सिंघा काहे लाया रे।
परिछन के बेरिया बनूक काहे लाया रे॥1॥
हम त मँगली हाथी घोड़ा, मोटर काहे लाया रे।
भोंपू भोंपू मोटर बोले, कान घबराया रे॥2॥
हम त रहली दुलहा परिछत, जियरा ललचाया रे।
घुर फुर कर गोला छोड़े, जियरा घबराया रे॥3॥
परिछन के बेरिया पिहतौल काहे लाया रे।
लाजो न लागे समधी, नाम को हँसाया रे॥4॥

गीत- 3

कहाँ से जोग आयल, कहाँ जोग घुरमई गे माई॥1॥
दुलरइता दुलहा ही से जोग आयल।
तेलिया दुहरिया जोग घुरमइ गे माई।
दुलरइता देइ के जाके जोग लग गे माई॥2॥

गीत- 4

छोटा टोना बड़ा लोना गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
टोनवा बाबुल जी के देस गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना॥1॥
अपने बने से मैं पनियाँ भरइहों रे।
बिन ऊभन बिन डोल गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
टोनवा बाबुल जी के देसे गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना॥2॥
अपने बने से मैं भात पकइहों रे।
बिन हाँड़ी बिन डोइ गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
सासु को काहे का मलोल गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना॥3॥
अपने बने से मैं धान कुटइहों रे।
बिन उखली बिन मूसल गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना॥4॥

गीत- 5

गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना।
सुन बेटी के दादा, सुन बेटी के नाना।
दादा गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना।
नाना गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना॥1॥
सुन बेटी के बाबा, सुन बेटी के चच्चा।
बाबा, गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना।
चाचा, गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना॥2॥
गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना।
सुन बेटी के भइया, सुन बेटी के मामा।
भइया गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना॥
मामा गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना॥
गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना॥3॥

गीत- 6

तुमको मैं टोना करूँगी रे, बाली भोली का दुलहा॥1॥

सेहरे में टोना भेजा, सेहरा बाँधि आया रे, मेरा असला दमदवा।

तुझको मैं टोना करूंगी रे, बाली भोली का दुलहा।

तुझको मैं टोना करूंगी रे, मेरा नेवता दमदवा।

तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा झुकता दमदवा॥2॥

जोड़े में टोना भेजा पेन्हि आया रे, मेरा असला दमदवा।

तुझको मैं टोना करूंगी रे, मेरा भोला दमदवा॥3॥

मोजे में टोना भेजा, मोजा पेन्हि आया रे, मेरा नेवता दमदवा।

तुझको मैं टोना करूँगी रे, बाली भोली का दुलहा।

तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरी लाड़ो का दुलहा।

तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा दुलरा दमदवा॥4॥।

गीत- 7

दादा हमारे नयना जोगी हैं री मइया।

दादी हमारी मनमोहिनी री मइया।

बलदी लदाये जोग लाद लायें जी॥1॥

नाना हमारे नयना जोगी हैं री मइया।

नानी हमारी मन मोहिनी री मइया।

छकड़े लदाये जोग लाईं री मइया॥2॥

अब्बा हमारे नयना जोगी हैं री मइया।

अम्माँ हमारी मन मोहिनी री मइया।

छकड़े लदाये जोग लाई री मइया॥3॥

भइया हमारे नयना जोगी हैं री मइया।

भाभी हमारी मन मोहिनी री मइया।

गाड़ी लदाये जोग लाई री मइया॥4॥

गीत- 8

रँगीला टोना दुलहे को लगेगा, छबीलाटोना दुलहे को लगेगा।

यह रे टोना दादी बीबी करेंगी, यह रँगीला टोना, सेहरे में लगेगा॥1॥

यह रे टोना नानी बीबी करेंगी, रँगीला टोना जोड़े में लगेगा।

छबीला टोना दुलहे को लगेगा॥2॥

यह रे टोना अम्माँ बीबी करंेगी, रँगीला टोना बीड़े में लगेगा।

छबीला टोना दुलहे को लगेगा॥3॥

यह रे टोना भाभी बीबी करेंगी, रँगीला टोना मोंढ़े में लगेगा।

छबीला टोना पलकों में लगेगा, रिझौना रिझौना टोना, दुलह को लगेगा॥4॥

परिछन गीत

गीत-1

रामचन्दर चललन बियाह करे, रिमिझिमि बादल हे।
अरे रिखियन खबरि जनावउ कहाँ दल उतरत हे॥1॥
परिछे बाहर भेली सासु त, सोना के डलनि लेले हे।
अहे, किनकर आरती उतारू, कउन बर सुन्नर हे॥2॥
साम बरन सिरीराम, त गोरही लछुमन हे।
सिरी रामचन्दर के आरती उतारूँ, ओहि बर सुन्नर हे॥3॥

गीत- 2

अवध नगरिया से अयले बरियतिया हे।
परिछन चलु मिली जुली साजु सब सखिया हे॥1॥
साजी लेहु डाली डुली बारी लेहु बतिया हे।
पान फूल दूध दही अछत भरी लुटिया हे॥2॥
मकुनी जे हथिया के जरद अमरिया हे।
ताही चढ़ी आवल हमर अलबेलवा हे॥3॥
हथिया वो घोड़वा के बनवल हइ सिंगरबा हे।
ताही चढ़ी चारो दुलहा सोभत असवरबा हे॥4॥
जामा साजे जोड़ा साजे साजल गले हरवा हे।
हथवा रूमाल सोभे माथे मनिन मउरिया हे॥5॥
सासु के अँखियाँ लगल मधुमछिया हे।
कइसे में परिछों दमाद अलबेलबा हे॥6॥
आरती करइतो सुधि बुधि नहीं आवे हे।
आनन्द मंगल तेही छन सब गावे हे॥7॥
राम रूप छकिछकि पावे दरसनमा हे।-
उँटवा नगाड़ा बाजे बाजे सहनइया हे॥8॥

गीत- 3

अवध नगरिया से अइलय बरियतिया हे, परिछन चलु सखिया।
हथिया झुमइते आवे, घोड़वा नचइते सोभइते आवे ना।
सखि रघुबर बरियतिया हे, सोभइते आवे ना॥1॥
बजन बजइते आवइ, कसबी नचइते हे।
उड़इत आवे न चवदिस से निसान हे, उड़इते आवे ना॥2॥
लेहू लेहू डाला डुली बारी लेहू बतिया हे।
परिछन चलु रघुबर बरियतिया हे, देखन चलु ना॥3॥
ढोल वो नगाड़ा बाजइ, बजइ सहनइया हे।
देखन चलु न सखि रघुबर बरियतिया हे॥4॥

गीत- 4

हम त माँगली आजन बाजन, सिंघा काहे लाया रे।
परिछन के बेरिया बन्नूक काहे लाया रे॥1॥
हम त मँगली हाथी घोड़ा, मोटर काहे लाया रे।
भोंपू भोंपू मोटर बोले, कान घबराया रे॥2॥
हम त रहली दुलहा परिछत, जियरा ललचाया रे।
घुर फुर कर गोला छोड़े, जियरा घबराया रे॥3॥
परिछन के बेरिया पिहतौल काहे लाया रे।
लाजो न लागे समधी, नाम को हँसाया रे॥4॥

वैवाहिक झूमर गीत

गीत- 1

कँगना भी बदलूँ, पहुँची भी बदलूँ, पिया बदल कोई लेवे।
चदरिया न बदलूँ हमर हरिअर चद्दर बुटेदार, चदरिया न बदलूँ॥1॥
झाँझ भी बदलूँ, लरछा भी बदलूँ, पिया बदल कोई लेवे
चदरिया न बदलूँ, हमर हरिअर चद्दर बुटेदार, चदरिया न बदलूँ॥2॥
कंठा भी बदलूँ, हयकल पिया बदल कोई लेवे।
चदरिया न बदलूँ, हमर हरिअर चद्दर बुटेदार, चदरिया न बदलूँ॥3॥

गीत- 2

अगे, अगे चेरी बेटी, तोँहु देखि आहु गे माइ।
कइसन समधी बाबू, महला उठावे गे माइ।
इँटवा चुनिए चुनि महला उठावे गे माइ।
चुनमे चुनेटल चारों घटिया बनावे गे माइ॥1॥
अरे, अरे हजमा, तोंहुँ देखि आहु गे माइ।
कइसन समधी भँडुआ, सजे बरियात गे माइ।
धोइले धोइले कपड़ा, रँगल बतीसो दाँत गे माइ।
छैले छैले गभरू सजल बरियात गे माइ॥2॥
बइठल समधी बाबू जाजिम बिछाय गे माइ।
जँघिया दुलरइतिन बेटी लट छिटकावे गे माइ।
बीड़वा जे फेंकलन दुलहा, बीड़वो न लेथिन गे माइ।
हँसथिन न बोलथिन, दुलहिन मुँहमो न खोलथिन गे माइ॥3॥
किनकर गुमानी धनि, मुँहमो न बोले गे माइ।
किनकर गुमानी बेटी, बीड़वो न लेइ गे माइ।
परभु के गुमानी धनि, मुँहमो न बोले गे माइ।
बाबा के दुलरइतिन बेटी, बीड़बो न लेइ गे माइ॥4॥

बाबा तोर देखलूँ दुलहा, टट्टर घर खाड़ा गे माइ।
भइया तोर देखलूँ लोकदिनियाँ सँघे साथे गे माइ।
चाचा तोर देखलूँ तमोलिन के पास गे माइ।
कइसे के करियो दुलहा तोहर बिसवास गे माइ।
तुहूँ त हकहु दुलहा बड़ रँगरसिया गे माइ॥5॥

गीत- 3

टिकवा जे लइह राजा, बचवा लगाइ हो।
टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो।
जलदी लउटिह राजा, जड़वा के दिनवाँ हो॥1॥
हँथवा के फरहर धनि, मुँहवाँ के लाएक हो।
से हो कइसे तेजब धनि, जड़वा के दिनवाँ हो।
से हो कइसे तेजब धनि जड़वा के रतवा हो॥2॥
कंठवा जे लइह राजा, सिकड़ी लगाइ हो।
टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो।
जलदी लउटिह राजा, जड़वा के दिनवाँ हो॥3॥
हँथवा के फरहर, धनि मुँहवाँ के लाएक हो।
से हो कइसे तेजब धनि जड़वा के रतवा हो।
से हो कइसे तेजब धनि जड़वा के रतवा हो॥4॥

गीत- 4

सामन भदोइया क निसि अधिरतिया, मलका मलके सारी रात हे।
बिजली चमके चहुँ ओर हे।
खाट छोड़िए भुइयाँ सुतली दुलरइतिन बेटी, रोइ रोइ कयल बिहान हे।
दुअरे से अयलन दादा दुलरइता दादा, बेटी से पूछे साधु बात हे।
कउन संकटिया तोरा आयल गे बेटी, रोइ रोइ कयल बिहान हे॥2॥
हमरा सुरतिया जी दादा तोरे न सोहाये, खोजी देलऽ लड़िका दमाद हे।

हमर करम बराबर गे बेटी, जानो धरम तोहार हे॥3॥
उतम कुल बेटी तोहरा बिआहलूँ देखलूँ छोट न बड़ हे।
पूरब खेत बेटी ककड़ी जे बुनलूँ ककड़ी के भतिया सोहामन हे॥4॥
न जानू बेटी गे तीता कि मीठा, कइसन ककड़ी सवाद हे।
सोनमा रहइत बेटी तोहरा डहइती रूपवा डहलों न जाय हे॥5॥
कुइयाँ रहइत बेटी फिनु से उढ़ाहती समुदर उढ़ाहलो न जाय हे।
बेटा रहइत बेटी फिनु से बिवाहती, बेटी कियाहलो न जाय हे॥6॥

बेटी-बिदाई गीत

गीत- 1

खेलते रहली सुपलो मउनिया आइ परल कवन लाल दुलहा।
किए धानि खेलब हे सुपली मउनिया, किय धानि चलब हे हमर देसवा॥1॥
कवन हटिया कवन बटिया, कवन नगरिया लिआइ जयबऽ।
जहाँ नहीं हटिया, जहाँ नहीं बटिया, पटना नगरिया लिआइ जयबो॥2॥
केकरा सँगे उठबइ हे, केकरा सँगे बइठबइ, केकरा ठेहुनिया लगाइ देबऽ।
दीदी सँगे उठिहऽ हे भउजी सँगे बैठिहऽ, मइया ठेहुनिया लगाइ देबो॥3॥
जैसन जनिहे मइया अपन धियवा, ओयसहिं जनिहे मइया हमर धनिया।
ओलती के पनिया बड़ेड़ी नहीं जइहें, धिया के दुलार दुतोह नहीं पइहें॥4॥

गीत- 2

कहवाँ के डँड़िया कुनली अही डँड़िया कुनली।
कहवाँ में लगले ओहार चढ़हु धनि डाँडि, चेतहु गिरहि आपन हे॥1॥
कवन पुर के डँड़िया कुनली, अहो डँड़िया कुनली।
कवन पुर में लगले ओहार, चढ़हु धनि डाँरि, चेतहु गिरहि आपन हे॥2॥
गोड़ लागों, पइयाँ परों, अजी सइयाँ ठाकुर हे।
बाबा के पोखरवा डाँड़ि बिलमावहु अम्मा से भेंट करम हे॥3॥
कइसे में डाँरि बिलमायब, अहे धनि सुन्नर हे।
तोर बाबा दहेजवा के सोंच में, अम्मा बिसमादल हे॥4॥
रँचिएक डाँडि बिलमावहु, अजी सइयाँ ठाकुर हे।
भेंटे देहु चाची हमार, सासु जे आपन हे॥5॥
कइसे में डाँड़ि बिलमाऊँ, अहें धनि सुन्नर हे।
बरवा पकवइत चाची बिसमादल हे।
तिलक गिनइते चच्चा बिसमादल हे॥6॥
रँचिएक डाँड़ि बिलमावहु, अजी सँइया ठाकुर हे।

भेंटे देहु भउजी हमार, सरहज आपन हे॥7॥
कइसे में डाँड़ि बिलमाऊँ, अहे धनि सुन्नर हे।
पटवा फड़इते भउजी बिसमादल हे।
भँउरिया घुमइते भइया बिसमादल हे॥8॥

गीत- 3

बाबा हो धन लोभित धनवे लोभाइ गेल।
सातो नदिया पार कयलऽ।
केहि अइहें केहिं जइहें, सनेस पहुँचइहें।
कउन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से भेंट होयतन हे॥1॥
नउआ अयतन, बरिया जयतन, सनेस पहुँचयतन हे।
कवन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से मिलन होयतन हे॥2॥

गीत- 4

बेरहिं बेरहिं तोरा बरजों कवन दुलहा, बन बिरिदा जनि जाहु हे।
बन बिरिदा एक देव बरिसल भींजि जइहें चन्नन तोहार हे॥1॥
हाँथी भींजल, घोड़ा भींजल, भींजल लोक बरियात हे।
हँथिया उपरे भींजल कवन दुलहा, चन्नन भरले लिलार हे॥2॥
डाँड़ी भींजल, डोरी भींजल, भींजल सबजी ओहार हे।
डँड़िया भीतरे भींजल कवन सुगइ, सेनुर भरले लिलार हे॥3॥
झिहिर झिहिर नदिया बहतु हैं, ओहि में कवन सुगइ नेहाय हे।
हँथिया उपर बोलल कवन दुलहा, हरवा दहि मति जाय हे॥4॥
ई हरवा मोरा ऐरिन बैरिन, ई हरवा मोरा परान के अधार हे।
ई हरवा मोरा बाबा के हलइ ई हरवा मोरा परान के अधार हे॥5॥
अपन मउयिा सम्हारहु ए दुलहा, घामा लगत कुम्हलाए हे॥6॥

गीत- 5

सिमरी के दिअरी हे झलमल लउकल दुनियाँ संसार हे।
सेहो सुनि बेटी के बाबा मनहिं बेदिल भेलन, ठोकि देलन बजर केवार हे॥1॥
अपना रसोइया से बाहर भेलि कवन बेटी, सुनऽ बाबा बचन हमार हे।
खोलु, खोलु बाबा हो बजर केवँरिया, अहो बाबा, साजन छेकले दुआर हे॥2॥
कइसे में खोलूँ बेटी बजरा केवँरिया हे, आजु मोरा अकिल हेरायल हे।
बहिआँ धरइते जी बाबा, कुइयाँ भँसिअइतऽ छुटि जाइल धिआ के संताप हे॥3॥
जँघिया भरोसे गे बेटी धिआ जलमवली, मुँह सूखे कइली दुलार हे।
बहियाँ धरइते गे बेटी, छाती मोरा फाटल, कुइआँ भँसवलो न जाय हे॥4॥

गीत- 6

काहे बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे।
हम तो रे बाबुल बेले की कलियाँ, घर घर माँगी जायँ रे।
लखिया बाबुल मोरे॥1॥
हम तो रे बाबुल खूँटे की गइया।
जिधर हाँको हँक जाय रे, लखिया बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे॥2॥
ताको भरी मैंने गुड़िया न छोड़ी।
छोड़ा सहेला साथ रे, सुन बाबुल मोरे॥3॥
भइया को दिए हो बाबू, महला दुमहला।
हमको दिए हो बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे॥4॥
कोठे के नीचे पलकिया जो निकली।
बीरन ने खाई पछार रे, सुन बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, सुन बाबुल मोरे॥5॥

गीत- 7

माँग लाड़ो टीका सोभे, मोतिये की बहार।
लाड़ो हवले चलि आओ।
ए बोलवे दिलवर जान, लाड़ो हवले चलि आओ॥1॥
नाक लाड़ो बेसर सोभे, चुनिये की बहार।
हवले चलि आओ, देखे दिलबर जान॥2॥
कान लाड़ो बाली सोभे, झुमके की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥3॥
गले लाड़ो माला सोभे, सिकड़ी की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे दिलबर जान॥4॥
साँवली सलोनी लाड़ो, सर के लम्बे बाल।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखें दिलवर जान॥5॥
जान लाड़ो सूहा सोभे, छापे की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥6॥

गीत- 8

अब कैसे जाऊँ लाड़ो सामने खड़ी रे लाल।
माँगो टीका पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो दिल में बसी रे लाल॥1॥
नाको बेसर पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥2॥
कानो बाली पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥3॥
हाथों कँगन पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखिया लड़ी रे लाल॥4॥
गले माला पहन लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखिया लड़ी रे लाल॥5॥
हाथों पहुँची पेन्ह लाडो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल॥6॥

जान सूहा पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो सामने खड़ी रे लाल॥7॥

गीत- 9

मेरी डोलिया लगी दरवाजे,
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥1॥
छोडू दादू बीबी अँचला दादा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥2॥
छोडू अम्माँ बीबी अँचला, अब्बा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥3॥
छोडू चच्ची बीबी अँचला, चच्चा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥4॥
छोडू खाला बीबी अँचला, खालू मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे॥5॥

गीत-10

लाड़ो को लाल बुलावे यह बाजूबन झूमता।
सहाना लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता।
हजरिया लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता॥1॥
माँगो टीका पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ो को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥2॥
नाको बेसर पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
सहाना लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥3॥
कानो बाली पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
हजरिया लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥4॥
गले हार पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ो को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥5॥
हाथों कँगन पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आबो।
लाड़ों को लाल बुलावे, यह बाजूबन झूमता॥6॥

बेटा-पतोह परिछन

गीत-1

अयलन रूकमिन जदुराई हे, परछों बर नारी।
नगरी में पड़लो हँकार हे, परछों बर नारी॥1॥
कंचन थारी सजाऊँ हे, परछों बर नारी।
मानिक दियरा बराऊँ हे, परछों बर नारी॥2॥
दस पाँच आगे पाछे चललन परिछे, गीत मधुर रस गावे हे।
रूकमिन हथिन चान के जोतिया बाल गोबिंदा सुकुमार हे॥3॥
काहे तों हहु हरि नीने अलसायल, काहे हहु मनबेदिल हे।
का तोर सासू नइ किछ देलन, का सरहज तोर अबोध हे॥4॥
नइ मोरा सासु हे नइ किछु देलन, नइ मोर सरहज अबोध हे।
मोर सासु हथिन लछमिनियाँ, सरहज मोर कुलमंती हे।
मोर ससुरार न भोराय हे, परिछों बर नारी॥5॥

गीत -2

सोने के पालकी छतर ओढ़इले।
ताहि चढ़ि बहुआ आयो, सुलच्छन आयो॥1॥
धनधन भाग तोरा कवन साही।-
बेटा पुतोह घर आयो, बहुआ सुलच्छन आयो॥2॥
काँचहिं बाँस के डाला बिनवलों।
बहुआ के पावों ढरायो बहुआ सुलच्छन आयो॥3॥
धन धन भाग तोरा कवन साही।
बेटा पुतोह घर आयो, बहुआ सुलच्छन आयो॥4॥
कोरे नदियवा में दहिया जमवलों।
बहुआ के सिर धरायो, बहुआ सुलच्छन आयो॥5॥
धनधन भाग तोरा-, कवन साही।
बेटापुतोह घर आयो-, बहुआ सुलच्छन आयो॥6॥

गौना के गीत

गीत-1

कहमाँ गमोलँ तोहूँ एता दिन सिवजी, पियरी जनेउआ कहाँ पावल हे।
गेलियो हम गेलियो गउरा तोहरो नइहरवा, बराम्हन रचल धमार हे।
एता दिन हमें गउरी सासुर गमउली सुखे सुखे गेल ससुरार हे॥1॥
तुहूँ गमौलऽ सिउजी अइसे से ओइसे, नयना काजर कहाँ पाव जी।
गेलियो हम गउरा हे तोहरो नइहरवा, सरहजवा रचल धमार हे।
ओहु जे सरहोजिया हे उमिर के काँचल दिहलन कजरा लगाय हे॥2॥
तोहूँ जे हकऽ सिउजी अइसे से ओइसे, पियर धोतिया कहाँ पाव जी।
गेलियो से गेलियो गउरी तोहरो नइहरवा, सरवा रचल धमार हे।
सरहजवा हथी गउरी काँचे से बुधिया देलन धोतिया रँगाय हे॥3॥
कहमाँ गमवलऽ सिउजी मास पखवरवा पउआँ कहाँ भराव जी।
गेलियो हम गेलियो गउरा तोहरो नइहरवा, नउआ रचल धमार हे।
नउआ जे हकइ गउरा ओहु छोट जतिया भरि देलक हमरा के पाँव हे॥4॥
कहमाँ से अयलऽ सिउजी एता मोटरी लेके कहमाँ पयलऽ कलेउ हे।
गेलियो जे हम गउरा तोहरो नइहरवा से, सासुजी देलन सजाय हे।
एक खइँचा देलन गउरा पुआ पकमनमा, दुइ खइँचा लाइ मिठाइ हे॥5॥
एतना जे सुनलन गउरा गेंठरी उठवलन, धरि देलन कोठिया के साँधे कंधे पर हे।
हमर नइहरवा सिउजी सब दिन उरेहल काहे गेलऽ ससुरार हे॥6॥
सास ससुरवा गउरा हथी गँगाजलिया सार सरहज कमल फूल हे।
ससुरा के लोग हथी लाइ मिठइया, रोज जायब ससुरार हे॥7॥

गीत -2

सोरही गइया के गोबरे आँगन गहागहो लीपल हे।
गजमोती चउका पुरायम त राम अइहें दोंगा करे हे॥1॥
लालिय पट केर जाजिम, झारि बिछायम हे।
काटब खरही के बाँस त कोहबर बनायम हे॥2॥

चनन खाट बिनायम झालर लगायम हे।
मानिक दियरा बरायम, राम अइहें दोंगा करे हे॥3॥
केकर सोभहे पगड़िया, त केकर चुनरिया सोभे हे।
रामजी के सोभहे पगड़िया, त सिया के चुनर सोभे हे॥4॥
जोड़े जोड़े होवहे मिलान लगन अगुआयल हे॥4॥

गीत -3

कहाँ के चँदवा कहाँ चलल जाय, मोरे परान हरी।
कहाँ के दुलहा गवन कयले जाय, मोरे परान हरी॥1॥
पुरुब के चँदवा पछिम चलल जाय, मोर परान हरी।
कवन पुर के दुलहा गवना कयले जाय, मोर परान हरी॥2॥
सभवा बइठल बाबा मिनती करे, मोर परान हरी।
दिन दस रहे देहु धियवा हमार, मोर परान हरी॥3॥
जब तोरा अहो ससुर धियवा पियार, मोर परान हरी।
काहे लागि तिलक चढ़वलऽ हमार, मोर परान हरी॥4॥

गीत -4

पुरुबा के अबलन एक गो मोसाफिर से, बइठी गेलन हमरो अँगना, रे गोरिया।
कउन तूँ हहु सुन्नर, कहमाँ तूँ जाहु से, केकर तूँ खोजहूँ मकनमा, रे गोरिया॥1॥
हम हिओ तोहर सरहज, बारे ननदोसिया से, करि दहु ननद के गमनमा, रे गोरिया।
हमर ननद हथिन बारी सुकमरिया से, कइसे करियो तोहरो गमनमा रे गोरिया॥2॥
रहु रहु मोरा ननदोसिया पहुनमा से, होवे दहु ननद जुवनिया रे गोरिया।
करि देबो तोरा ननदोसिया गबनमा से, होवे दहु छतिया नवरँगिया रे गोरिया॥3॥
आवे दहु, आवे दहु मास रे फगुनमा से, करि देबो तोहरो गमनमा, रे गोरिया।
एकारसी अइहऽ ननदोसिया जे हमरा से, दोआरसी के करब मरजदबा रे गोरिया।
तेरोदसी के करबो बिदइया रे गोरिया॥4॥
एक कोस गेलइ डारी दोसर कोस गेलइ से, तेसरे डँड़िया पइसी पूछे एक बतिया रे गोरिया।
बघिया में डँड़िया के भेलइ दुपहरिया से, रसे रसे गरमी गँवावहु रे गोरिया॥5॥

दोंगा के गीत

गीत-1

अरजी बरजी करइ छोटकी ननदिया।
आइ रे गेलइ इहमा मास रे फगुनमा॥1॥
जो तोंहे जइहऽ भउजी, अपन कोहबरवा।
भइया से कहि मोरा, रखिहऽ नेअरबा॥2॥
नहीं माँगू थारी लोटा, नहीं माँगू धनमा।
एक हम माँगू भउजी, सिर के सेनुरबा।
एक हम माँगू भउजी, तोहरो सोहगबा॥

गीत -2

लाल सूइ लाल डोरा, लाल दरजी बोलाइ के।
जुग जुग जियथी दुलहा दुलरइता दुलहा।
जिनकर जामा सिलामहिं॥1॥
लाल सूइ लाल डोरा, लाल दरजी बोलाइ के।
जुग जुग जियथिन दुलहिन दुलरइतिन दुलहिन।
जिनकर लहँगा सिलामहिं॥2॥

शिव विवाह गीत

गीत-1

फूल लोढ़े चलली हे गउरा बाबा फुलवारी।
बसहा चढ़ल महादेव, लावले दोहाई॥1॥
लोढ़ल फफलवा हे गउरा देलन छितराए।
रोवते कनइते हे गउरा, घर चलि आवे॥2॥
मइया अलारि पूछे, बहिनी दुलारि पूछे।
कउने तपसिया हे गउरा, तोरो के डेरावे॥3॥
लाज के बतिया हे अम्मा, कहलो न जाए।
भउजी जे रहित हे अम्मा, कहिति समुझाए॥4॥
पूछु गल सखिया सलेहर कहिहें समुझाए।
बड़े बड़े जट्टा हे अम्मा, सूप अइसन दाढ़ी॥5॥
ओही तपसिया हे अम्मा, हमरो डेरावे।
ओही तपसिया हे अम्मा, पड़ले दोहाई॥6॥
बुद्धि तोरा जरउ हे गउरा, जरउ गेयान।
ओही तपसिया है गउरा, पुरुख तोहार॥7॥

गीत-2

बन के करिखा सिउजी, बने धधकवलन।
ओहे करिखा सिउजी, भभूति चढ़वलन॥1॥
कहवाँ नेहयलऽ सिउजी, कहवाँ छोड़लऽ झोरी
कउने अमलिए सिउजी, मोतिया हेरवलऽ॥2॥
जमुना नेहइली गउरा देइ, गंगा छूटल झोरी।
भँगिए अमलिए गउरा देइ, मोतिया हेरइली॥3॥
देखलों में देखलों गउरा देइ, तोहरो नइहरा।

फूटल थारी गउरा देइ, चुअइत लोटा।
लाजे न परसे गउरा देइ, तोहरो महतारी॥4॥
जब तुहूँ उकटलऽ सिउजी, हमरो नइहरा।
हमहूँ उकटबो सिउजी, तोरो बपहरा॥5॥
सातो कोठिलवा सिउजी, सातो में पेहान।
हाँथ नावे चलली सिउजी, एको में न धान॥6॥
छनियाँ एक देखली सिउजी, ओहो तितलउका।
चेरिया एक देखलीं सिउजी, सबुजी सेयान।
बावाँ गोड़ लँगड़ी, दहिना आँख कान॥7॥
बएला एक देखली सिउजी, गोला रे बरधवा।
कउआ मारे ठोकर सिउजी, दँतवा निपोरे॥8॥

गीत-3

मिनती से बोलले गउरा देइ, सुनहु महादेव हे।
मोरा नइहरवा में जग होले, जग देखे जायम हे॥1॥
मिनती से बोलथिन महादेव, सुनहु गउरा देइ हे।
बिना रे नेवतले गउरा जनि जाहु, तोहरो आदर नाहिं हे॥2॥
केकरो कहलिया गउरा नाहिं कएलन अपने चलि गेलन हे।
नाहिं चिन्हे माए बाप, नाहिं चिन्हे नगर के लोगवा हे॥3॥
एक त चिन्हले बहिनी गाँगो उठि अँकवार कइले हे।
बिना रे नेवतले बहिनी आएल, तोहरो आदर नाहिं हे॥4॥
कने गेल, किया भेल बराम्हन, अगिनी कुंड खानहु हे।
जब रे बराम्हन कुंड खनलन गउरा कूदि पड़लन हे॥5॥
जब रे गउरा कूदि पड़लन, महादेव धावा चढ़लन हे।
मिनती से बोललन सासु, सुनहु महादेव हे॥6॥
मोरा घर आजु जग होले जग जनि भाँड़हु हे।
गउरा के बदल गउरा देहब, फिनु शिव परिछब हे॥7॥

गीत-4

मथवा जे आयल महादेव बड़े बड़े जटा।
कँधवा जे आयल महादेव बघिनी के छला॥1॥
घर से बाहर भेली सासु मनाइन।
गोहुमन सरप छोड़ल फुफकारी॥2॥
किया सासु किया सासु गेल डेराइ।
तोरा लेखे अहे सासु गेहुमन साँप।
मोरा लेखे अहे सासु गजमोती हार॥3॥
कथिकेरा दियवा, कथिकेरा बाती।
कथिकेरा तेलवा, जरेला सारी राती॥4॥
जरु दीप जरु दीप चारो पहर राती।
जब लगि दुलहा दुलहिन खेले जुआसारी ॥5॥
जर गेल दियवा सपुरन भेल बाती।
खेलहुँ न पयलऽ दुलरुआ चारो पहर राती॥6॥
तोरहिं जँघिया हो परभु, निंदो न आवे।
बाबा के जँघिया हो परभु, निंद भल आवे॥7॥
बाबा के जँघिया हे सुघइ दिन दुइ-चार।
मोरा जँघिया हो सुघइ, जनम सनेह॥8॥

गीत-5

सिउजी जे चललन पुरबी बनीजिआ गउरा देइ भेलन संघ साथ हे।
फिरु फिरु गउरा हे, हमरी बचनियाँ, मरि जइबऽ भुखवे पियास हे॥1॥
भुखवे पियसवे सिउजी तोर पर तेजम भँगवा धतुरवा के लगि जइहें निसवा हे।
गउरा सुन्नर रस बेनियाँ डोलइहें हे॥2॥
सिउजी के भींजले जमवा से जोड़वा गउरा पर एक बुनियो न परे हे।
सासु लिपलका सिउजी धँगहूँ न पवली, ननदिया जी के एको उतरबो न देली हे।
ओहे गुने ना एको बुनियो न परे हे॥3॥

श्रम गीत

गीत-1

अँगना बटोरली भउजी हो बढ़इतिन हो ना।
लचिआ गोबरवा बिनि लिअवतू हो ना।
एक बन गइली हो लाची अवरू दुसरवा हो ना।
लचिआ तीसर बनवाँ गइआ चरवहवा हो ना।
गोबराहि बीनि ये लचिआ खाँची समुअवली हो ना।
राम लगिहों गइली तड़की पिअसिआ हो ना।
एक बन गइली हो लचिआ अवरू दूसरवाँ हो ना।
लचिआ तीसर बनवाँ ताके पोखरवा हो ना।
लउकहि के लउके हो लचिया गउवाँ के अरड़ियाँ हो ना।
लचिया चलि हो भइली गउवाँ के अरड़ियाँ हो ना।
एक चिरुवा पिअली हो लचिआ अवरू दूसरवाँ हो ना।
लचिआ तीसर चिरुआ रहि गइलय गरभवा हो ना।
गोबरहिं लेइ हो लचिआ घर के लवटली हो ना।
लचिआ जाइ सुतेली रंग महलिआ हो ना।
हरि जोति अइलय कुदारि मारी अइलय हो ना।
रामा बइठयल डेवढ़िआ मनवाँ मारी हो ना।
सबके त देखों ये धनियाँ भर से अँगनवाँ हो ना।
धनियाँ नाहीं रे लउकय लाची मोर बहिनियाँ हो ना।
लाची तोर बहिनियाँ ये राजा गरभे मातल हो ना।
राजा जाइ के सुतेली रंग महलिआ हो ना।
एतनी बचनियाँ हो धनियाँ से सुनहीं ना पवलय हो ना।
भइआ बसवा हो पइठी काँटे कइनियाँ हो राम।
एक सिटकुन मरलय ये भइआ अवरू दुसरवाँ हो ना।
लचिआ तीसरे में घूमें करवटिआ हो ना।
किआ तुहूँ भुललू ये बहिनी भइआ से भतिजवा हो ना।

बहिनी किआ तुहूँ भुललू गउवाँ के गोइड़वाँ हो ना।
नाहीं हम भुलली हो भइआ, भइआ से भतिजवा हो ना।
भइआ नाहीं भुलली गउवाँ के गोइड़वाँ हो ना।
अगना बटोरती भउजी बढ़इतिन हो ना।
लचिआ गोबरवा हो बिनि लेअवतू हो ना।
एक वन गइली हो भइआ अवरु दुसरवाँ हो ना।
भइआ तीसरे बनवाँ गइआ चरवहवा हो ना।
गोबरा हि बीनी हो भइआ खाँची समुअवती हो ना।
भइआ लागी गइली तड़की पिअसिआ हो ना।
पोखरा के भीटे भइआ तकली ताल पोखरवा हो ना।
भइआ कतहूँ ना लउकय ताल पोखरवा हो ना।
लउकहि के लउकय भइआ गउवाँ के अरड़ियाँ ना।
भइआ चली हो भइली गउवाँ के अरड़ियाँ हो ना।
एक चिरुआ पिअली हो भइआ अवरू दुसरवाँ हो ना।
भइआ तीसर चिरुआ रहि गइलय गरभवा हो ना।
जऊँ तोरे लचिआ हो बछरू जनमिहय हो ना।
लचिआ सोनवाँ के मढ़इबय उनकर खुरवा हो ना।
जऊँ तोरे लचिआ रे बेटवा जनमिहैं हो ना।
लचिआ लुगरी पहिराई घर निसरबय हो ना।
जब तोरे लचिआ रे बछरू जनमिहय हो ना।
लचिआ सोनवाँ के बनवइबय उनकर पगहा हो ना।
लचिआ सोनवाँ के गड़इबय उनकर खुटवा हो ना।
जऊँ तोरे लचिआ रे बेटवा जनमिहय हो ना।
लचिआ देसवा से तोहके निसरबय हो ना।

गीत-2

जइसे तलवा में लड़ेइआ चमकय ननदी।
अरे ओइसे चमकय घरवाँ में ससुरुआ हमरी ननदी।
जइसे बदरवा में बिजुलिआ चमकय ननदी,
अरे ओइसे चमके घरवा में भसुरुआ हमरी ननदी।
जइसे जंगलवा में हरिनवाँ छरके ननदी।
अरे ओइसे छरके घरवाँ में देवरवा, छोटी ननदी।
तीसिआ के तेलवा जरे हो छोटी ननदी,
अरे ओइसे जरे घरवाँ में ससुइआ, छोटी ननदी।
जइसे तउवा पर रोटिआ फुले ननदी,
अरे ओइसे फूले घरवाँ में जेठनियाँ, छोटी ननदी।
जइसे जंगलवा में बिछिआ टुपके ननदी,
अरे ओइसे टुपके घरवाँ में ननदिआ, छोटी ननदी ।।

गीत-3

खोरी में कटोरी रस बोरी छोटी ननदी।
ससुरू जी अइलय अनवइवा छोटी ननदी।
ससुरू के संगवाँ नाहीं जाबय छोटी ननदी।
अरे घुंघटा कढ़त दिनवाँ बितिहय छोटी ननदी।
खोरी में कटोरी रस बोरी छोटी ननदी।
अरे भसुरू जी अइलय अनवइवा छोटी ननदी।
अरे भसुरू के संगवाँ नाहीं जाबय छोटी ननदी।
अरे घुंघटा कढ़त दिनवाँ बितिहय छोटी ननदी।
खोरी में कटोरी रस बोरी छोटी ननदी।
अरे देवरू जे अइलय अनवइवा छोटी ननदी।
देवरू के संगवाँ नाहीं जाबय छोटी ननदी।
चिकारिआ करत छिनवाँ बितिहय छोटी ननदी।
खोरी में कटोरी रस बोरी छोटी ननदी।
सइयाँ जी अइलय अनवइवा छोटी ननदी।
सइयाँ जी के संङवाँ हम जाब छोटी ननदी।।

गीत-4

पातर बेलना पातर बेलवइवा दिल घवराई हो गइलय।
पातर ससुरू बइठय जेवनरवाँ दिल घबराई हो गइलय।
दस ही खास पाँच भगई चोरावई दिल घवराई हो गइलय।
पातर भसुरू बइठय जेवनरवाँ दिल घबराई हो गइलय।
दस ही खास बीस भगई चोरावई दिल घबराई हो गइलय।
पातर देवरू बइठय जेवनरवाँ दिल घबराई हो गइलय।
बीस ही खास पचीस भगई चोराबई दिल घबराई हो गइलय।
पातर सइयाँ बइठल जेवनरवाँ दिल घबराई हो गइलय।
पचास ही खास पचहत्तर भगई चोरावई दिल घबराई हो गइलय।
पातर वेलना पातर बेलवइया दिल घवराई हो गइलय।।

गीत-5

कोरी दहेड़िआ ये सासु दहिआ रे जमवली,
अमृत नावेली जोरनवाँ ये मुरली।
अपने त खाली सासु झूरी-झुरी दहिआ,
हमके परोसे पानी पातर ये मुरली।
अपने त जाली सासू गउवाँ के गोइड़वाँ।
हमके भेजावे जमुना पार ये मुरली।
जात की बेरियाँ घुठिआ भर पनियाँ,
आवत के जमुनवाँ अवगाहैं मुरली।
तोहके हम देबय केवटा हाथ के कंगनवाँ,
तोहरे सुहइआ जोगे हार मुरली।
हमके उतारा जमुना पार मुरली।
अगिआ लगइबय सँवरो हाँथ के मुनरिआ,
समुन्नर बहइबय तोहरो हार मुरली।
तोहके खिअइबय सँवरों रोहुआ मछरिआ,
रतिआ खेलइबय झंझीर मुरली।

अगिआ लगइबय केवटा रोहुआ रे मछरिआ,
गंगा बहइबय तोर झंझीर मुरली।
जाहू न केवटा कटोरी लेइ आअरे,
जब तक केवटा कटोरी आने गइले मुरली।
कछड़वाँहि मारि पार उतरली मुरली।
जऊँ मईं जनती सँवरो एतना बुधिआ छेरबू,
पकड़ी इजतिआ तोहरी भड़ती मुरली।।

गीत-6

हमके जाये दो नइहरवाँ, हमरे बारे बलमुआँ ना।
छठे लड़िका हो लिअइबय, हमरे बारे बलमुआँ ना।
कइसे-कइसे हो लिअइबू, हमरी बारी धनिअवाँ ना।
दुई के गोदिआँ हो लेअइबय, दुइ के अँगुरी हो धरइबय।
दुई के कन्हवाँ हो बइठइबय, हमरे बारे बलमुआँ ना।
हमके जाये दा हो नइहरवाँ, हमरे वारे बलमुआँ ना।
कइसे-कइसे हो खिअइबू, हमरी बारी धनिअवाँ ना।
दुई दुधवा हो पिअइबय, दुई के भतवा हो खिअइबय,
दुई के रोटिआ हों खिअइबय, हमरे बारे बलमुआँ ना।
कहवाँ-कहवाँ हो रखबू हमरी बारी धनिअवाँ ना।
दुई के कोठवा हो उठइबय, दुई के खपड़ा हो छवइबय,
दुई के मड़ई हो छवइबय हमरी बारी धनिअवाँ ना।
कइसे करबू हो बिअहवा हमरी बारी धनिअवाँ ना।
दुई के उढ़री हो लिअइबय, दुइ के करबय हो सगइया,
दुई के करबय हो बिअहवा हमरी बारी धनिअवाँ ना।।

गीत-7

खटिआ ले उठि रे सासु मचिआ रे बइठली हो राम।
उठू-उठू सरधा हो झारा घर-अंगनवाँ हो राम।
अंगना झारत सरधा छूटेला अचरवा हो राम।
छाती तोर देखों ये सरधा मारे ले हिलोरवा हो राम।
सावन महिनवाँ ये सासू होत बा कजरिआ हो राम।
ओही धहवाँ ये सासू मरेले संवरिआ हो राम।
एतनी बचनियाँ ये सासू सुनहीं ना पवली हो राम।
पुतवा ही आगे लइआ हो लगवली हो राम।
तोहरी तिरिअवा ये बचवा करेले जबबवा हो राम।
एतनी बचनियाँ हो राजा सुनहीं ना पवलय।
बसवा पइसी काटे सिटकुनियाँ हो राम।
जिनी हमके मारा राजा जिनि गरिआवा हो राम।
देसवा पइसी भिखिआ मंगबय हो राम।
एक हाथे लिहली सरधा गोदी के बलकवा हो राम।
एक हाथे फटही लुगरिआ हो राम।
एक वन गइली सरधा अवरु दुसर वन हो राम।
तीसर बनवाँ लागेले पिअसिआ हो राम।
ललना सुताई सरधा पानी लेवे गइली हो राम।
जलवा में से निसरेले राघो मछलिआ हो राम।
ललना लीली जल पइठली हो राम।
रोवेली सरधा रे लट धुनि केसिआ हो राम।
हमरो ललनवाँ रे काई होइ गइलय हो राम।
जिनि रोवा सरधा लट धुनि केसिआ हो राम।
तोहरो ललनवाँ ये सरधा राधो लीलि गइली हो राम।
एक वन गइली सरधा अवरु दुसरवाँ हो राम।
तीसर वनवाँ भेटे ननद गऊँवाँ हो राम।
गलिआँ की गलिआँ रोवेले सरधवा हो राम।
केहू रे रखि चेरिआ केहू लउड़िआ हो राम।

घर में से निसरेली पतरी ननदिआ हो राम।
हक रखब चेरिआ से अवरू लउड़िआ हो राम।
खाये के देबय चेरिआ कनवाँ से खुदिआ हो राम।
पहिरे के देबय चेरिआ फटही लुगरिआ हो राम।
सुतहीं के देबय चेरिआ टुटही खटिअवा हो राम।।

गीत-8

मचिआँ बइठल नरसिंह के भाई हो ना।
हम हो जइबय अपने ससुररिआँ हो ना।
बोलला त बोलला नरसिंह फिर मत बोलिहा हो ना।
गजवाँहि बजवाँ करबय तोर बिअहवा हो ना।
मचिआँहि बइठल नरसिंह के भउजी हो ना।
हम हो जइबय अपने ससुररिआँ हो ना।
कहला त कहला नरसिंह फिरि जिनि कहिहा हो ना।
नरसिंह गजवाँहिं तोर बजवाँ करबय बिअहवा हो ना।
मचिआँहि बइठल नरसिंह के बहिनी हो ना।
बहिनी हम जइबय अपने ससुररिआँ हो ना।
कहला त कहला नरसिंह फिरि जिनि कहिहा हो ना।
नरसिंह गजवाँ बजवाँ करबय तोर बिअहवा हो ना।।

गीत-9

एक ही रजवा के सात ठे बिटिअवा,
तिनके पीछे चनना बहिनियाँ हो राम।
सात भइआ मिलि -जुलि चलले वन अहेरवाँ हो राम।
तिनके पीछे लगलीं चनना बहिनियाँ हो राम।
फिरि-फिरि चला तू चनना बहिनियाँ हो राम।
तोहके लिअइबय सुरुजू हरवा हो राम।
एतनी बचनियाँ चनना सुनहीं ना पवली हो राम।
चनना घर के लवटी गइली हो राम।
अंगना बटोरत चनना बिटिअवा हो राम।

परि गइली सासू के नजरिआ हो राम।
किआ तू लुबुधलू चनना गउवाँ के गोइड़वाँ हो राम।
किआ लुबुधलू गउवाँ के गोइड़वाँ हो राम।
नाहीं लुबुधली ये सासू गउवाँ के गोइड़वाँ हो राम।
तोहरी बचनियाँ चनना हम नाहीं मनबय हो राम।
तोसे लेबय धरमी किरिअवा हो राम।
बाटे के चलत बटोहिआ हित भइआ हो राम।
अरे हमरो सनेस लेले जइहा हो राम।
अरे हमरो सनेस हमरे बाबा समुझइहा हो राम।
तोरी बेटी परल धरम किरिअवा हो राम।
एतनी बचन बाबा सुनहीं ना पवलय हो राम।
धावल धूपल अइलय कोहरा दुअरवाँ हो राम।
सूतल बाड़ा कि जागल कोहरा भइआ हो राम।
अरे गढ़ी देता धरमी करहिआ हो राम।
बाटे के चलत बटोहिआ हित भइआ हो राम।
अरे हमरो सनेस हमरे भइआ समुझइहा हो राम।
अरे तोरी बहिनी धरम किरिअवा हो राम।
एतनी बचन भइआ सुनहीं ना पवलय हो राम।
धावल धूपल गइलय तेलिआ घरवाँ हो राम।
अरे देई देता धरम के तेलवा हो राम।
ऊपराहि बइठलय नरहर सब लोगवा हो राम।
अरे नीचवाँ ससुर सब लोगवा हो राम।
तेही बीचे बोझल धरमी करहिआ हो राम।
जस-जस करहिआ के ऊपर अइली हो राम।
तस-तस भाई सुरुजू के दुधवा चढ़वली हो राम।
जऊँ चनना हो धरम हारी जइबू हो राम।
अरे काटी-कूटी फेंकब दरिअउवा हो राम।
जऊँ तुहुँ चनना धरम जीति जइबू हो राम।
डोलवा फनइबय नइहर जइबू हो राम।

एतनी बचन बाबा बोलहीं ना पवलय हो राम।
चनना तब तक जीति गइली हो राम।

गीत-10

पुरुब नइहरवाँ जइबय हो राजा।
सासु जी की चोरी-चोरी टिकवा गढ़वली।
ननद चुगुलिनियाँ लइआ लगावय,
देवर हरमुनियाँ गाना सुनावय,
करेजा वाला बालम हँसके बोलावय।
पुरुब नइहरवाँ जइबय हो राजा।

गीत-11

निबिआ झरेले पतइआ बालम के अंगने
टिकवा मोर टुटि गइलय गवनवाँ कइसे जाब,
सखिआ मारेली मेहनवाँ गवनवाँ कइसे जाब।
तिलड़ी मोर टूटि गइलय गवनवाँ कइसे जाब।
ककनी मोरि टूटि गइलय गवनाँ कइसे जाब।
सखिआ मारेली मेहनवाँ गवनवाँ कइसे जाब।

गीत-12

कपरा पर लिहले छितनियाँ हो महुआ बीने जाब।
महुवा के रस चूवे वदन पर हो महुआ बीने जाब।
केकरा के धइले आँत जरिआ हो केकरा के बोखार।
केकरा के भइलीं रतउन्हीं हो दिन सूझे न रात।
सासू के धइली आँत जरिआ हो ननदा के बोखार।
सइयाँ के भइली रतउन्हीं हो दिन सूझे न रात।
केकरा के करो जउरिआ हो केकरा के बखीर।
केकरा के काढ़ो कचउड़ी हो दिन सूझे न रात।
सासु के करो जउरिआ हो ननदा बखीर।
सइयाँ के करों कचउड़ी हो दिन सूझे न रात।

गीत-13

इ टीकवा हमरे नइहर के निसानी,
टीकवा के गइली हो मोरी ननदा चोराय।
नाहीं अन नीक लागे, तीत लागे पानी,
चढ़ली जवनियाँ तेजब जिन्दगानी ।।टेक।।

गीत-14

रुनझुन बाजेले हो सिकड़िआ पिआ परदेसवाँ गइलय ना।
जऊँ तुहूँ ये पिआ परदेसवाँ जइबा ना,
अपने भइआ के हो बोलाइ के हम नइहरवाँ जइबय ना।
जऊँ तुहूँ ये धन नइहरवाँ लइबू ना,
जेतनी लागल हे रूपइआ ओतनी देइके जइहा ना।
जऊँ तुहूँ पिआ परदेसवाँ जइहा ना,
जइसन बाबा घरवाँ रहली बइसन कइके जइहा ना।।

गीत-15

तोहके मईं देबों धोबिआ चनवाई की दलिआ,
धोऊ रे धोबिआ डीह बाबा कई पगरिआ धोउ रे धोबिआ।
गंगा में धोइहा जमुनवाँ फरिचइहा लवंग की डरिआ,
धोबी झुरइहा पगरिआ लवंग की डरिआ।
तोहके मई देबय धोबिआ चनवाँ की दलिआ,
धौऊ रे धोबिआ सितला मइआ कई चुनरिआ धोऊ रे धोबिआ
गंगा में धोइहा जमुनवाँ फरिचइहा लवंग की डरिआ,
धोबी झुरइहा चुनरिआ लवंग की डरिआ।।

गीत-16

परदेसिआ हो बलमुआँ जेवना जेई हो लेता ना।
कइसे के जेइ धन तोहरो जेवनवाँ,
कलकतिआ से नजरिआ लड़वले बाटू ना।
परदेसिआ रे बलमुआँ गेड़ुवा पी रे लेता ना।
कइसे के पिहीं धन तोहरो गेड़ु अवा,
परदेसिआ से नजरिआ लड़वले बाटू ना।
परदेसिआ हो बलमुआँ बिरवा कुच हो लेता ना।
कइसे के कूँची धन तोहरो बिरउवा,
लूंगी वाले से नजरिआ लड़वले बाटू ना।
परदेसिआ रे बलमुआ सेजिआ सोई हो लेता ना।
कइसे के सोई धन तोहरो सेजरिआ,
गउटी वाले से नजरिआ लड़वले बाटू ना।।

अन्य गीत

हम रोज निहारीला रहिया हम रोज बहारीला अँगना,
जबजब भी बयरिया सँसरेले अचके में खनखि जाला कँगना।-
तस्वीर बना के हृदया में दुनिया से छिपा रखले बानी,
कब तक ले सँवारीं दर्दे जिगर कब तक ले सँभारीं ई सपना।
कनवाँ के गहनवाँ चुपके से कहि जाला सनेसा आवन के,
मन झन से उठेला झूमि मगर झुकि जाला समझ के भ्रम अपना।
अँसुवन से लिखा करि के पतिया पठईला पवन के पाँखी पर,
अब दरदे बनल बाटे आपन जिनिगी के सुघर सुन्दर सपना।

मगही लोकगीत

मुस्लिम-संस्कार

विवाह गीत

गीत-1

दादा तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो।
हजरिया बने सीना तान के चलिहो॥1॥

सहूरेका माली जोगी, हाँ जी बाबू, सेहरापढ़ के बँधिहो॥2॥

सहूरे का दरजी जोगी, हाँ जी बाबू, जोड़ा पढ़ के पेन्हिहो।
सो लाले बने, जोड़ा पढ़ के पेन्हिहो॥3॥

नाना तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो।
हजरिया बने सीना तान के चलिहो॥4॥

सहूरे का तँबोली जोगी हाँ जी बाबू, बीरा पढ़ के चब्हियो।
हजरिया बने सीना तान के चलिहो॥5॥

अब्बा तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो।
सहूरे का साला जोगी हाँ जी बाबू, लाड़ो पढ़ के लइहो।
हजरिया बने लाड़ो पढ़ के लइयो॥6॥

गीत-2

दादा मियाँ लगाइन घनी बगिया।
मेवा तोड़ तोड़ खइहे, मेरे लाल बने॥1॥

ससुर भँडुए की साँखरी गलिया।
दामन मोड़ मोड़ चलिहो मेरे लाल बने॥2॥

दादा मियाँ की ऊँची दलनियाँ।
जहाँ सासु को नचइहो मेरे लाल बने॥3॥

बाबा मियाँ लगाइन घनी बगिया।
मेवा तोड़ तोड़ खइहे, मेरे लाल बने॥4॥

साले भँडुए की साँखरी गलिया।
दामन मोड़ मोड़ चलिहो मेरे लाल बने॥5॥

मेहँदी गीत

गीत-1

जो दिल तेरा सो मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे अब्बा वाली॥1॥

तेरे कारन लाड़ो दिल्ली भी जायँगे।
अरे, टीके का करु बनिजार रे नइहर वाली।
मोतिये का करु बनिजार रे नइहर वाली।
जो दिल तेरा सो, मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे भइया वाली॥2॥

तेरे कारन लाड़ो दिल्ली भी जायेंगे।
अरे, बेसर का करु बनिजार रे नइहर वाली।
चुनिये का करु बनिजार रे नइहर वाली।
जो दिल तेरा सो मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे भइया वाली॥3॥

गीत-2

आया री लाड़ो सो तेरा बर आया।
टीका लाया री लाड़ो, मोतिया लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया॥1॥

बेसर लाया री लाड़ो चुनिया लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया॥
आया री लाड़ो सो तेरा बना आया॥2॥

बाली लाया री लाड़ो, झुमका लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया॥3॥

कँगन लाया री लाड़ो पहुँची लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया॥4॥

सूहा लाया री लाड़ो छापा
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया॥5॥

गीत-3

अरी ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका अजब अनमोल।
माँगे लाड़ो के टीका सोभे, मोतिया लागे हीरे लाल।
ए गोरी अब ना जइहों, तेरा टीका अजब अनमोल॥1॥

नाके लाड़ो के बेसर सोभे, चुनिया लागे हीरे लाल,
चुनिया अजब बहार।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका बड़ा अनमोल॥2॥

काने लाड़ो के बाली सोभे, झुमका लागे हीरे लाल।
झुमका अजब बहार।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका गजब अनमोल॥3॥

गले लाड़ो के माला सोभे, सिकड़ी लागे हीरे लाल।
सिकड़ी अजब बहार।
एक लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका अजब अनमोल॥4॥
जाने लाड़ो के सूहा सोभे, छापा अजब बहार।
घूँघट लगे हीरे लाल, घूँघट अजब बहार॥5॥

ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरी सूरत अजब अनमोल।
एक लाड़ो अब ना जइहों, तेरी अँखिया बड़ी अनमोल॥6॥

सेहरा गीत

गीत-1

ऐसे वैसे देस में लोभाना मियाँ बँदरा।
दान माँगे दुलहा, दहेज माँगे दुलहा।
छोटकी साली दहेज माँगे दुलहा॥1॥

ऐसे वैसे देस में लोभाना मियाँ बँदरा।
दान माँगे दुलहा, दहेज माँगे दुलहा।
छोटका साला, दहेज माँगे दुलहा॥2॥

कुटनिया के देस में लोभाना मियाँ बँदरा।
छिनलिया के देस में लोभाना मियाँ बँदरा॥3॥

गीत-2

जुग जुग जियेगा, सो मेरा लाल बना।
लाड़ो लावेगा सो मेरा लाल बना॥1॥

बने, मैं जानूँ सेहरे सजे।
सेहरे बीच बने के लाल लगे।
लड़ियों बीच बने के लाल लगे।
सो लावेगा, लाड़ो लावेगा, मेरा लाल बना॥2॥

बने मैं जानूँ जोड़े सजे।
जोड़े बीच बने के लाल लगे।
समले बीच बने के लाल लगे॥3॥

बने मैं जानूँ बीड़े सजे।

सुरखी बीच बने के लाल लगे।
लाड़ो लावेगा सो मेरा लाल बना, दुलहिन लावेगा॥4॥

बने मैं जानूँ लाड़ो सजी।
घूँघट बीच बने के लाल लगे।
सूरत बीच बने के चाँद छुपे।
लाड़ो लावेगा, सो मेरा लाल बना, लाड़ो लावेगा॥5॥

परिछन गीत

खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो।
बिजली चमके जियरा साले, मेरी लाड़ो।
दिलवा धड़के मेरी लाड़ो॥1॥

तेरा टीका लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो॥2॥

तेरा बेसर लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो॥3॥

बादल गरजे, जियरा साले मेरी लाड़ो, दिलवा धड़के मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो, खोलो न केवड़िया॥4॥

तेरी बाली लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर आने दो जी लाड़ो॥5॥

मेघवागरजे, जियरा धड़के मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो, खोलो न केवड़िया॥6॥

तेरा कँगन लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो॥7॥

बिजली चमके, जियरा साले मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो॥8॥

सोहाग गीत

गीत- 1

आई सोहाग की रात सखी।
माँगे लाड़ो के टीका सोभे, मोतिया की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात॥1॥

नाक लाड़ों के बेसर सोभे, चुनिये की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात॥2॥
कानो लाड़ो के बाली सोभे, झुमके की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात॥3॥

गले लाड़ो के माला सोभे, हँसुली की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात॥4॥

जानेलाड़ो के सूहासोभे, छापे की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात॥5॥

गीत-2

तेरे दुलहे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥1॥

माँगो का टीका बने ने लाया।
मोतिये में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥2॥

नाको का बेसर बने ने लाया।
चुनिये में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥3॥

कानो की बाली बने ने लाया,
झुमके में लाया सोहाग।
तेरे नौसे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥4॥

गले का माला बने ने लाया।
हँसुली में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए।
तेरे नीसे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥5॥

जानो का सूहा बने ने लाया।
छापे में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए।
तेरे नौसे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए॥6॥

कोहबर गीत

गीत-1

चंपे के पेड़ नीचे उतरे बने मियाँ।
बाजी लगी दिलोजान, मैं बारि जाऊँ, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ, मैं बारि जाऊँ॥1॥

हारूँ तो बने मियाँ बँदरी मैं तेरी।
जीतूँ तो सेजिया गुलाम, मैं बारि जाऊँ।
बाजी लगी दिलोजान, मैं बारि जाऊँ॥2॥

पलँगे की पट्टी टूटी, मोतियों की लर टूटी।
टूटी है पलँगे नेवार, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ॥3॥

उठ मियाँ बँदरे हुआ है सबेरा।
अम्माँ खड़ी इँतजार, मैं बारि जाऊँ॥4॥

मेरा तो दिल लाड़ो तुमसे लगा है।
अम्माँ खड़ी झख मार, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ॥5॥

गीत-2

टूटी चंपा कलिया चुनेगा मियाँ बँदरा लाल।
टीका मैला हो रे मोतिया न मैली हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल॥1॥

बेसर मैला हो रे, चुनिया न मैली हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल॥2॥

बाली मैली हो रे, झुमका न मैला हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल॥3॥

सूहा मैला हो रे, छापा न मैला हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल॥4॥

बेटी बिदाई गीत

गीत-1

काहे बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे।
हम तो रे बाबुल बेले की कलियाँ, घर घर माँगी जायँ रे।
लखिया बाबुल मोरे॥1॥

हम तो रे बाबुल खूँटे की गइया।
जिधर हाँको हँक जाय रे, लखिया बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे॥2॥

ताको भरी मैंने गुड़िया न छोड़ी।
छोड़ा सहेला साथ रे, सुन बाबुल मोरे॥3॥

भइया को दिए हो बाबू, महला दुमहला।
हमको दिए हो बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे॥4॥

कोठे के नीचे पलकिया जो निकली।
बीरन ने खाई पछार रे, सुन बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, सुन बाबुल मोरे॥5॥

गीत-2

माँग लाड़ो टीका सोभे, मोतिये की बहार।
लाड़ो हवले चलि आओ।
ए बोलवे दिलवर जान, लाड़ो हवले चलि आओ॥1॥

नाक लाड़ो बेसर सोभे, चुनिये की बहार।
हवले चलि आओ, देखे दिलबर जान॥2॥

कान लाड़ो बाली सोभे, झुमके की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥3॥

गले लाड़ो माला सोभे, सिकड़ी की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे दिलबर जान॥4॥

साँवली सलोनी लाड़ो, सर के लम्बे बाल।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखें दिलवर जान॥5॥

जान लाड़ो सूहा सोभे, छापे की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार॥6॥

मृत्यु गीत

संतन अयलन समगहँकी गुरु हाट लगवलन हे।
भाव उठल पँचरँग के, सभे सौदागर हे।
हम बेपारी निरगुन नाम के, हाटे चले न हो भाइ॥1॥

सत सुकरीत हइ पलना, सम देल गल डंडी जी।
गेयान दसेरा बान्ह के पूरा करके रक्ख जी।
सौदा करे संतन चललन, आगे रोकइ जमराइ॥2॥
मोजरा माँग हइ नाम के हो, हम तो बनिजारा।
हम तो बेपारी निरगुन नाम के हो लाऊँ नाम के माला।
सतगुरु बसथिन सतलोक में हो, उनखर छबि देखहु भाइ॥3॥

देखि छबि जमवा कायल भेल हो, मथवा देलक नेवाय।
कहल कबीर पुकार के हो सुनहु संत समाज।
जे जे सौदा करे नाम के हो, ओहि पूँजी हो भाइ॥4॥

अध्याय - 3

भोजपुरी लोकगीत

बिहार प्रान्त के भोजपुर जिले सहित उसके आसपास के जिलों में बोली जाने वाली भोजपुरी भाषा, अपने आप में एक श्रेष्ठ साहित्य समेटे हुए हैं। यहाँ के जन अपनी भाषा, संस्कृति की रक्षा में सदैव तत्पर रहते हैं। वे विश्व में जहाँ-जहाँ गये भारतीय संस्कृति को न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे पुष्पित पल्लवित भी किया। यह जिला एक ओर उत्तरप्रदेश से, दूसरी ओर बिहार से जुड़ा है।

देश के अन्य भागों की तरह यहाँ भी सुसंस्कृत जीवन का समग्र निर्माण सोलह संस्कारों के माध्यम से होता है। इन संस्कारों के द्वारा समाज विशेष अपने सदस्यों को अपनी रीति-नीतियों के अनुसार संस्कारित कर अपने समाज के अनुकूल बनाता है। इन अवसरों पर कुछ विशेष विधि-विधान, पूजा पाठ किये जाते हैं, कुछ लोकाचार निभाये जाते हैं। जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। देखने में साधारण, ये लोकाचार अपने में महत्वपूर्ण अर्थ छिपाये रहते हैं। इन अवसरों पर गाना बजाना, नाचना, स्वांग भरना, हास्य विनोद करना आदि जीवन में रंग भर देते हैं।

पुंसवन संस्कार के पश्चात जब घर में किसी नये सदस्य का जन्म होता है, तब परिवार, जाति, बिरादरी, टोले मोहल्ले मे उमंग छा जाती है। यह प्रसन्नता मात्र माता-पिता की न होकर पारिवारिक के साथ-साथ सामाजिक होती है। इन अवसरों पर जिन गीतों को टोले-मोहल्ले, घर परिवार की बड़ी बूढ़ियों, बहू-बेटियों द्वारा गाया जाता है उन्हें सोहर कहते हैं। सोहर की परंपरा भोजपुर में ही नहीं है, यह बिहार, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ में भी पुत्रजन्म के अवसर पर गाया जाता है। जहां तक इनके संवहन का प्रश्न है, स्त्रियाँ ही इनकी संवाहक है। जब कन्या ब्याह कर अन्यत्र वधू बनकर जाती है, तब अपने साथ स्थानीय लोकाचार, लोकगीत, लोकगाथा, रीति व्यवहार आदि अपने अदृश्य रुप से लेकर जाती है। कालान्तर में मायके ससुराल की संस्कृति में मेल मिलाप होता है और संस्कृति अपने जूड़े में एक और पुष्प टाँक लेती है। भोजपुरी लोकगीत के संकलन के क्रम में जो लोकगीत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिला उसे संकलित कर लिया जो निम्न है:-

सोहर गीत

गीत- 1

पहिले पहिले फगुवा खेलै रामलाल ससुरारी चललैं
रुपया पइसा कपड़ा लत्ता कै के खूब तैयारी चललैं
लेहलैं नया सरौता, बटुआ, कत्था, खड़ी सोपारी लेहलैं
मेहर खातिर साबुन, पौडर, साया, ब्लाउज, सारी लेहलैं
अपने खातिर लुंगी, जूता, बीड़ी अउर सलाई लेहलैं
कई दुकानी चीखचीख के आधा किलो मिठाई लेहलैं-
हाथ गाल पर फेरै लगलन सोचै अउर विचारै लगलन
आस पास सैलून कहाँ हौ चारो ओर निहारै लगलन
बनल ठनल एक औरत लउकल खोंखैं अउर खंखारै लगलन
इसकूटर पर ममा देखइलन बढ़के ममा पुकारै लगलन
नाहीं सुनलैं ममा भीड़ में नाहीं त बतियवले होतन
पुछले होतन हाल घरे क आपन हाल बतवले होतन
नाँहींतब्बौ चाह पियवले होतन नाँहीं लाख कहित हम-
अपने इसकूटर पर हम्मैं बस अड्डा पहुँचवले होतन
सुनले हई शहर में मम्मा मामी नई लियायल हउअन
बड़की मामी गांव रहैले ओकरे पर गुस्सायल हउअन
रामलाल अब सरसमान कुल झोरा में सरियावै लगलन
साबुन पौडर लुंगी जूता खोंसै अउर दबावै लगलन
बस से चली कि रेकसै अच्छा जोड़ै अउर दहावै लगलन
सोझैं खाली रेकसा लउकल 'हे रेकसा' गोहरावै लगलन
बस से जाये क मतलब हौ पैदल ढेर चलै के होई
रेकसा से सीधे दुआर पर कत्तौं ना उतरै के होई
का हो रेकसा पूरे चलबा सोचा मत बस बोला जनला
रेकसोवाला हँस के कहलस लेला उड़नखटोला जनला
एतना जल्दी तोहके पूरे अब कइसे पहुँचाई हम
हमहूँ हई अदमिये मालिक गरुड़ देवता नहीं हम

जइसे तइसे घंटा भर में रेकसा पार शहर के निकलल
चारों ओरी जाम बेचारा चढ़ के कहीं उतर के निकलल
मुँह पर डूबत बेर देख के रामलाल घबराये लगलन
रेकसावाले पर रह रह के पिन्नाये भन्नाये लगलन
एसे तेज चली ना हमसे जल्दी हो त खुदै चलावा
आजिज आ के रामलाल तब कहलन अच्छा बइठा आवा
बारीउर चलावै लगलनबारी दूनों जाने बइठै अ-
एतना गड़बड़ रस्ता सरवा रामलाल गरियावै लगलन
पाहुन अइलैं पाहुन अइलैं घर दउरल अगवानी खातिर
केहू तोसक तकिया खातिर केहू मीठा पानी खातिर
रामलाल क मेहर अपने भउजी से बतियावत हउवै
पैदल त ई चलै न जानै अस सुकुआर बतावत हउवै
रेकसावाला मुसकियात हौ रामलाल त हाँफत हउवैं
गौर से उनके सब देखत हौ ऊहो सब के भाँपत हउवैं
हँस के बोलल चाहत हउवन लेकिन हँसी न आवत हउवै
अइसैं मिलै सवारी मालिक रेकसावान मनावत हउवै
घर में चाह पियै के खातिर रामलाल बलवावल गइलन
निखरहरै खटिया पर बिच्चे अंगना में बईठावल गइलन
भरमूंहे सब रंग लगवलस जमके भूत बनावल गइलन
साली करै चिकारी सटके सरहज गावै गारी बबुआ
बबुई त ससुरारी गइलिन तू अइला ससुरारी बबुआ
रामलाल निखरहरै खटिया फोंय फोंय फुफ्कारै लगलन
हमरे नियर चलावा रेकसा सपनै में ललकारै लगलन॥

गीत- 2

सेन्दुर सम्भाल के उथईहा ए सुन्दर बर ।
माता पिता कन्यादान तोहके कैले हो
आंखी के पुतरी बनैहा ए सुन्दर बर ।
मात पिता अपनी प्यारी बिटिउआ के
आंखी के पुतरी बनैहा ए सुन्दर बर ।

गीत- 3

एके कोखी बेटा जन्मे एके कोखी बेटिया

दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया

बेटा के जनम में त सोहर गवईल अरे सोहर गवईल
हमार बेरिया, काहे मातम मनईल हमार बेरिया

दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया

बेटा के खेलाबेला त मोटर मंगईल अरे मोटर मंगईल
हमार बेरिया, काहे सुपली मऊनीया हमार बेरिया

दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया

बेटा के पढ़ाबेला स्कूलिया पठईल अरे स्कूलिया पठईल
हमार बेरिया, काहे चूल्हा फूँकवईल हमार बेरिया

दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया

बेटा के बिआह में त पगड़ी पहिरल अरे पगड़ी पहिरल

हमार बेरिया, काहे पगड़ी उतारल हमार बेरिया

दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया

एके कोखी बेटा जन्मे एके कोखी बेटिया
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी दू रंग नीतिया

गीत- 4

पातरपातर गोरिया के पतरी कमरिया-
मोर सँवरिया रे पतरी डगरिया धैले जाय
पातर लपलप गोर पतरी अंगुरिया-
मोर सँवरिया रे लचकत पनिया के जाय
सड़िया के आरीआरी गोटवा के जारी-
मोर सँवरिया रे मटकत रहिया के जाय
गावेले महेंदर मिसिर दूहो रे पुरुबिया
मोरे सँवरिया रे, देखते में जिया ना अघाय।

गीत- 5

सासु मोरा मारे राम बाँस के छिऊकिया
मोर ननदिया रे सुसुकत पनिया के जाय
छोटेमोटे पातर पियवा हँसि के ना बोले-
मोर ननदिया रे से हू पियवा कहीं चलि जाय
गंगा रे जमुनवा के चिकनी डगरिया
मोर ननदिया रे पैयाँ धरत बिछलाय
कहत महेंदर श्याम इहो रे पुरुबिया
मोर ननदिया रे पिया बिनु रहलो ना जाय

गीत- 6

हमनी के रहब जानी दूनू हो परानी
अंगना में कींचकाँच दुअरा पर पानी-
खाला ऊँचा गोर पड़ी चढ़ल बा जवानी
देशऽ टूटही पलानीविदेश जाल-
केकरा पर छोड़के जालऽ टूटही पलानी
कहत महेंदर मिसिर सुनऽ दिलजानी
केकरा से आग मांगब, केकरा से पानी!

गीत- 7

हाथ में मेंहदी मांग सिंदुरवा
बर्बाद कजरवा हो गइले
बाहरे बलम बिना नींद ना आवे
बाहरे बलम बिना नींद ना आवे
उलझन में सवेरवा हो गइले

बिजुरी चमके देवा गर्जे घनघोर बदरवा हो गइले
पापी पपीहा बोलियाँ बोले पापी पपीहा बोलियाँ बोले
दिल धड़के सुवेरवा हो गइले
बाहरे बलम बिन नींद न आवे
उलझन में सुवेरवा हो गइले
आ ....

अरे पहिले पहिले जब अइलीं गवनवा
सासू से झगड़ा हो गइले
बाकें बलम पर अहा अहा...
बांके बलम परदेसवा विराजें
उलझन में सुवेरवा हो गइले

हाथ में मेंहदी मांग सिंदुरवा
बर्बाद कजरवा हो गइले

गीत- 8

हरे हरे हरे दादा बसवा कटइहा, ऊँचेऊँचे मडवा छवइहा हो-
ऊँचेऊँचे मडउवा तले बैठिह हो दादा-, सजन लोग छेकले दुवार हो

हरे हरे हरे नाना बसवा कटइहा, ऊँचेऊ-~मचे मडवा छवइहा हो
ऊँचेऊँचे मडउवा तले बैठिह हो नाना-, सजन लोग छेकले दुवार हो

हरे हरे हरे बाबा बसवा कटइहा, ऊँचेऊँचे मडवा छवइहा हो-
ऊँचेऊँचे मडउवा तले बैठिह हो बाबा-, सजन लोग छेकले दुवार हो

हरे हरे हरे चाचा बसवा कटइहा, ऊँचेऊँचे मडवा छवइहा हो-
ऊँचे ऊँचे-मडउवा तले बैठिह हो चाचा, सजन लोग छेकले दुवार हो

हरे हरे हरे मामा बसवा कटइहा, ऊँचेऊँचे मडवा छवइहा हो-
ऊँचेऊँचे मडउवा तले बैठिह हो मामा-, सजन लोग छेकले दुवार हो

हरे हरे हरे भैया बसवा कटइहा, ऊँचेऊँचे मडवा छवइहा हो-
ऊँचेऊँचे मडउवा तले बैठिह हो भैया-, सजन लोग छेकले दुवार हो

गीत- 9

डोले बसन्ती बयार मगन मन होला हमार।

गेहुँआ मण्टरिया से लहरल सिवनवा, होखे निहाल भइया सगर किसनवा
धरती के बाढ़ल श्रृंगार मगन मन होला हमार।।

बिहँसेला फुलवा महकेला क्यारी, ताक झाँक भँवरा लगावे फुलवारी
मौसम में आइल बहार मगन मन होला हमार।।

आईल कोयलिया अमवाँ के डरिया, पीयर चुनरिया पहिरे सवरियाँ
सोहेला पनघट किनार मगन मन होला हमार।।

गीत- 10

हमका मेला में चलिके घुमावा पिया
झुलनी गढ़ावा पिया ना।

अलता टिकुली लगइबे
मंगिया सेनुर से सजइबे,

हमरे उँगरी में मुनरी पहिनावा पिया
मेला में घुमावा पिया ना।

हँसुली देओ तुम गढ़ाई
चाहे कितनौ हो महंगाई,

हमे सोनरा से कंगन देवावा पिया
हमका सजावा पिया ना।

बाला सोने के गढ़इबे
चाँदी वाली करधन लइबे,

छागल माथबेनी हमके बनवावा पिया
झुमकिउ पहिनावा पिया ना।

कड़ेदीन की जलेबी
मिठाईलाल वाली बरफी,

डंगर हेलुआई के एटमबम लियावा पिया
इमरती खियावा पिया ना।

गऊरी शंकर धाम जइबे
अम्बा धाम के जुड़इबे,

इही सोम्मार रोट के चढावा पिया
धरम तू निभावा पिया ना।

गीत- 11

कैसे खेले जइबू सावन में कजरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी

तू तौ जात हौ अकेली
कौनो संग न सहेली
गुण्डा रोकि लींहें तोहरी डगरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी

भौजी बोलेलू तू बोली
सुनिके लागल हमरा गोली
काहे पड़ल बाड़ू हमरी नगरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी

केतने दामुल फाँसी चढ़िगे
केतने गोली खाके मरिगे
केतने पीसत होइहैं जेल में चकरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी

गीत- 12

प्रथम मास असाढि सखि हो, गरज गरज के सुनाय।
सामी के अईसन कठिन जियरा, मास असाढ नहि आय॥
सावन रिमझिम बुनवा बरिसे, पियवा भिजेला परदेस।
पिया पिया कहि रटेले कामिनि, जंगल बोलेला मोर॥
भादो रइनी भयावन सखि हो, चारु ओर बरसेला धार।
चकवी त चारु ओर मोर बोले दादुर सबद सुनाई॥
कुवार ए सखि कुँवर बिदेश गईले, तीनि निसान।
सीर सेनुर, नयन काजर, जोबन जी के काल॥
कातिक ए सखी कतकि लगतु है, सब सखि गंगा नहाय।
सब सखी पहिने पाट पीतम्बर, हम धनि लुगरी पुरान॥
अगहन ए सखी गवना करवले, तब सामी गईले परदेस।
जब से गईले सखि चिठियो ना भेजले,तनिको खबरियो ना लेस॥
पुस ए सखि फसे फुसारे गईले, हम धनि बानि अकेली।
सुन मन्दिलबा रतियो ना बीते, कब दोनि होईहे बिहान॥
माघ ए सखि जाडा लगतु है, हरि बिनु जाडो न जाई।
हरि मोरा रहिते त गोद मे सोबइते, असर ना करिते जाड॥
फागुन ए सखि फगुआ मचतु है, सब सखि खेलत फाग।
खेलत होली लोग करेला बोली , दगधत सकल शरीर॥
चैत मास उदास सखि हो एहि मासे हरि मोरे जाई।
हम अभागिनि कालिनि साँपिनि, अवेला समय बिताय॥
बइसाख ए सखि उखम लागे, तन मे से ढुरेला नीर॥
का कहोँ आहि जोगनिया के, हरिजी के राखे ले लोभाई॥
जेठ मास सखि लुक लागे सर सर चलेला समीर।
अबहुँ ना सामी घरवा गवटेला, ओकरा अंखियो ना नीर॥

गीत- 13

सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्राण बसे हिमखोह रे बटोहिया-
एक द्वार घेरे रामा हिमकोतवलवा से-
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया

जाहुजाहु भैया रे बटोही हिंद देखी आउ-
जहवां कुहुंकी कोइली बोले रे बटोहिया
पवन सुगंध मंद अगर चंदनवां से
कामिनी बिरहगावे रे बटोहिया

बिपिन अगम घन सघन बगन बीच
चंपक कुसुम रंग देबे रे बटोहिया
द्रुम बट पीपल कदंब नींब आम वृछ
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया

तोता तुती बोले रामा बोले भेंगरजवा से
पपिहा के पीपी जिया साले रे बटोहिया-
सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्रान बसे गंगा धार रे बटोहिया

गंगा रे जमुनवा के झिलमिल पनियां से
सरजू झमकी लहरावे रे बटोहिया
ब्रहमपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया

उपर अनेक नदी उमडी घुमडी नाचे
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया

जाउहिंद देखी आउ जाउ भैया रे बटोही-
जहां ऋषि चारो बेद गावे रे बटोहिया
सीता के बीमल जस राम जस कृष्ण जस
मोरे बापदादा के कहानी रे बटोहिया-

ब्यास बालमीक ऋषि गौतम कपिलदेव
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया
रामानुजप्यारी रूपकला-रामानंद न्यारी-
ब्रह्म सुख बन के भंवर रे बटोहिया

नानक कबीर गौर संकर श्रीरामकृष्ण
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया
बिद्यापति कालीदास सूर जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया

जाउजाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ-
जहां सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव पृथु बिक्रम्ारजुन सिवाजी के
फिरिफिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया-

अपर प्रदेस देस सुभग सुघर बेस
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेही
जन 'रघुबीर.सिर नावे रे बटोहिया .

सोहर गीत

गीत- 1

अंगना में कुइयाँ खोनाइले, पीयर माटी नू ए,
ए ललना जाहिरे जगवहु कवन देवा, नाती जनम लिहले हो।
नाती जनमले त भल भइले, अब वंस बाढ़हू ए।
ए ललना देह घालऽ सोने के हँसुअवा,
बाबू के नार काटहु ए।
ए ललना देइ घालऽ सोने के खपड़वा,
बाबू के नहवाईवि ए।
ए ललना जाहि रे जगवहु कवन देवा,
नाती जनम लिहले ए ।
नाती जनमले त भल भइले, अब वंस बाढ़हु ए ।
ए ललना देई घालऽ रेशमऽ के कपड़वा,
जे बाबू के पेनहाइवि ए ।

गीत- 2

बबुआ बइठले नहाए त सासु निरेखेली ए,
ललना कवना चेली के लोभवलु त,
गरभ रहि जाले नू ए।
पुत मोरे बसेले अयोध्या, पतोहिया गजओबर ए,
ए सासु भंवरा सरीखे प्रभु अइले,
गरभ रहि जाले नू ए।
मोरे पिछुअरवा पटेहरवा भइया, तूहू मोरे हितवा नू ए,
बिनी द ना रेशमऽ के जलिया त,
छैला के भोराइवि हे।
बिनि देहले रेशमऽ के जलिया, रेशम-डोरिया लगाई देहले ए
लेहि जाहु रेशम के जलिया, छैला के भोरावऽहु ए ।
सुतल बाड़ू कि जागलऽ सासु,
चिन्ही लऽ आपनऽ पुतवा अछरंगवा मत लगावऽहु ए।

गीत- 3

जेठ बइसखवा के पुरइन लहर-लहर करे,
ताहि कोखी धिअवा जनमली त पुरुख बेपछ्र परले ए। (बेपछ्र=विपक्ष)
मइले ओढ़न, मइले डासन, कोदो चउरा पंथ भइले,
रेंडवा के जरेला पसंगिया, निनरियो नाहि आवेले ए।
लाले ओढ़न, लाल डासन, बसमती चउरा पंथ भइले,
चनन के जरेला पसंगिया, निनरिया बलु आवेले ए।
सासु के देबऽ रेडिय तेल, ननद के तिसिए तेल,
गोतिन के देबऽ फुलेल तेल, हम गोतिन पाइंच ए।
सासु जे आवेली गावत, ननद बजावत हे,
गोतिन आवेली बिसमाधम मुदइया मोरे जनमऽलन,
सासु के डासबऽ खटिअवा, ननद के मचिअवा नू ए।
गोतिन के लाली पलंगिया हम गोतिन पाइंचए

गीत- 4

सोने के खरउआ राजा रामचन्द्र खुटुर-खुटुर चले नु ए।
चली गइले आमा के बोलावे-
चलहु ए आमा चलहु मोरा अंगना चलहु ए,
मोर धनि बेदने-बेआकुल झँझिरिया धइले लोटेली हे।
नाहीं जाइब ए बबुआ नाहीं जाइब, तहरा अँगनवाँ नाहीं जाइब हे,
तहरा धनि बोलेली बिरहिया, सहल नाहीं जाला नु ए।
चलहु ए मामी चलहु, मोरे अंगना चलहु हे
मोर धनि बेदने-बेआकुल झंझरिया धरी लोटेली हे।
नाहीं जाइब ए बबुआ नाहीं जाइब, तोर धनि बोलेली
बिरही कड़कवा, मोरे हिया लागेला हे।
महतारी, भाभी के बाद बहिन के पास गए और फिर अन्त में -
लोटहु ए धनि लोटहु झंझरिया धरी लोटहु ए।
आमा के बोलेलू बिरहिया सहल नाहीं जाला नु ए।
बहिन , भाभी... के बोलेलू बिरहिया सहल नाहीं जाला नु ए।
नउजी अइहें सासु, नउजी अइहें ननदो, नउजी अइहें गोतिन, नउजी अइहें हो

प्रभुजी ओढ़ि लेब ललका रजइया सउरिया हमी लिपबऽ नु ए।
घरी रात बितले पहर रात, अउरी छने रात हे
ललना अधेराती होरिला जनमले, महलिया उठे सोहर ए
मोरा पिछुअरवा बजनिया भैया, भैया धीरे-धीरे बजवा बजइह,
ननदवा जनि जानस हे।
ललना सुनि लहली लउरी ननदिया, बेसरिया हम बधइया लेब हे,
सभवा बइठल बाबा बानी, सरब गुन आगर बानी हे,
भउजो के भइले नन्दलाल, बेसरिया हम बधइया लेब हे।
उहवाँ से बाबा उठि आवे ले, अंगना में ठारा भइले हे
बबुआ देइ घालऽ नाक के बेसरिया दुलारी धिअवा पाहुन हे।
नाक में से कढ़ली बेसरिया फुफुतिया में चोरावेली हे
इहे बेसरिया हमके बाबा दहले, बधइया तोहके नाहीं देब हे।

गीत- 5

जुग जुग जियसु ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो
ललना लाल होइहे, कुलवा के दीपक मनवा में आस लागल हो॥

आज के दिनवा सुहावन, रतिया लुभावन हो,
ललना दिदिया के होरिला जनमले, होरिलवा बडा सुन्दर हो॥

नकिया त हवे जैसे बाबुजी के,अंखिया ह माई के हो
ललन मुहवा ह चनवा सुरुजवा त सगरो अन्जोर भइले हो॥

सासु सुहागिन बड भागिन, अन धन लुटावेली हो
ललना दुअरा पे बाजेला बधइया, अन्गनवा उठे सोहर हो॥

नाची नाची गावेली बहिनिया, ललन के खेलावेली हो
ललना हंसी हंसी टिहुकी चलावेली, रस बरसावेली हो॥

जुग जुग जियसु ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो
ललना लाल होइहे, कुलवा के दीपक मनवा में आस लागल हो॥

गीत- 6

मोरे पिछ्वरवा चन्दन गाछ आवरो से चन्दन हो
रामा सुघर बडइया मारे छेवर लालन जी के पालन हो॥
रामा के गढउ खडउवा लालन जी के पालन हो,
रामा जसुमती ठाडी झुलावै लालन जी के पालन हो॥
झुलहु त लाल झुलाहु अवरो से झुलहु हो
रामा जमुना से जल भरि लाईं त झुलवा झुलाइब हो॥
जमुना पहुच न पावों घडिलवौ ना भरिलिउं हो
रामा पिछ्वा उलति जो मैं चितवुं पहल मुरली बाजल हो॥
रान परोसिन मैया मोरी अवरो बहिन मोरी हो
बहिनि छवहि दिना के भइने लाल त मुरली बजावल हो॥
चुप रहो जसुमति चुप रहो दुस्मन ज नी सुने हो
बहिनी ई हैं के कन्स के मारिहै औ गोकुला बसैहे हो॥

गीत- 7

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन धन बन हो
ताहि तर ठाढ़ हरिनवा त हरिनी से पूछेले हो
चरतहीं चरत हरिनवा त हरिनी से पूछेले हो
हरिनी! की तोर चरहा झुरान कि पानी बिनु मुरझेलू हो
नाहीं मोर चरहा झुरान ना पानी बिनु मुरझींले हो
हरिना आजु राजा के छठिहार तोहे मारि डरिहें हो
मचियहीं बइठली कोसिला रानी, हरिनी अरज करे हो
रानी! मसुआ तो सींझेला रसोइया खलरिया हमें दिहितू न हो
पेड़वा से टांगबी खलरिया त मनवा समुझाइबि हो
रानी हिरि-फिरि देखबि खलरिया जनुक हरिना जिअतहिं हो
जाहू! हरिनी घर अपना खलरिया ना देइबि हो
हरिनी खलरी के खंझड़ी मढ़ाइबि राम मोरा खेलिहें नू हो
जब-जब बाजेला खंजड़िया सबद सुनि अहंकेली हो
हरिनी ठाढ़ि ढेकुलिया के नीचे हरिन बिसूरेली हो

गीत- 8

मचिया ही बईठल कौशिल्या रानी, सिहाँसन राजा दशरथ हो
राजा बिनु रे बदरी कहीं कजरी कहाँ जाई बरसेले हो
बोलिया त बोलेली रानी बोलही नाहीं पावेली हो
रानी बीनू हो ग़रभ के तिरियवा होरीला नाही जनमत सुनत सुख सोहर हो
एतना बचन रानी सुनली सुनहि नाही पावेली हो
रानी हाथे गोड़े तानेली चदरिया सुतेली कोपवाघर हो
सोने के खडौउआ राजा दशरथ केकयी महल चले
रानी तोरे बहिना बड़े रे वियोगावा त चली के मनावहु हो
एक हाथ लेली केकयी दतुअनि दुसरे हाथ पानी हो
केकयी झटकि के चढ़ेली अटरिया त बहिना मनावन हो
उठहु इ बहिना उठहु कहल मोर मानहु
बहिना उठिके करहु दतुअनिया होरिल तोरे होईहे सुनीह सुख सोहर हो
कवनाहिं मासे गंगा बढ़ियईहें सवार दहे लगिहन हो
बहिनी कवनही मासे राम जनमिहें त बचन पूरन होईहें
सावन मासे गंगा बढ़ियईहें सेवर दहे लगिहें
बहिनी कातिक मासे राम जनमिहें त बचन पूरन होईहें
बहिनी कातिक मासे राम जनमेलें त बचन पूरण भईलें
सब सखि तेल लगावेली मंगल गावेली
रानी केकयी के जीयरा भे रोग सुनीके नाहि आवेली
सोने के खड़उआँ राजा दशरथ केकयी महल चलें
रानी कवन अवगुन मोसे भईलें सुनीके नाहि आवेलू हो
ना हम तेल लगाईब ना ही मंगल गाईबी राजा हो
ब्रम्हा के बान्हल पिरितिया उलटी राउरे दिहली।

गीत- 9

रुकुमिनी लिपी अईली पोति अईली छतीस दियना बारि अईली हो
आरे बीनू रे होरील के ओबरिया त झहर झहर करे
एक रे पहर रुकुमिनी सूतेली सपन एक देखेली हो
आरे पांचही आम के घवदिया खोईन्छा कहू डालेला
दूसरा पहर रुकुमिनी सूतली त सपन एक देखेली हो
आरे कोरी नदीयवा के दहिया जंगलवा कहू धईल
तीसरा पहर रुकुमिनी सूतेली सपन एक देखेली
आरे लाल बरन के घुनघुनावान सेजीयावा पर धईल.
चौथा पहर रुकुमिनी सूतेली सपन एक देखेली हो
आरे सावरेन वरन के होरीलवा सेजीयवा पर खेलेला हो

गीत- 10

अपने ओसरवां कोशिल्या रानी राम के उलारेली राम के दुलारेली हो
आरे उलटी उलटी राम के देखेली देखत नीक लागेला
भीखिया मांगत दुई ब्राह्मण रानी से अरज करें
रानी कवन कवन तप कईलू त राम गोदी बिहसेले
माघ ही मॉस नहईलीं अगिनी नाही तपली हो
ए ब्राह्मन जेठ नाही बेनिया दोलावली त राम गोद बिहसेलें हो
कातिक मॉस नहईलीं तुलसी दियना बरीलें हो
ए ब्राह्मन कातिक में आवलाँ के दान कईलीं त राम गोदी बिहसेलें हो
भूखल रहलीं एकादशी त द्वादशी के पारण करीं
ए ब्राह्मण भूखले में विप्र के जेववलीन त राम गोद बिहसेलें हो

छठ गीत

गीत- 1

केलवा जे फरये ला घवद से ओहपर सुगा मंडराय
उ जे खबरी जनइबो अदित्य से सुगा दिहले जुठीयाय
उ जे मरबउ रे सुगवा धनुष से सुगा गिरे मुरुछाय
सुगनी जे रोवय वियोग से आदित्य होऊ न सहाय

नारियलवा जे फरये ला घवद से ओहपर सुगा मंडराय
उ जे खबरी जनइबो अदित्य से सुगा दिहले जुठीयाय
उ जे मरबउ रे सुगवा धनुष से सुगा गिरे मुरुछाय
सुगनी जे रोवय वियोग से आदित्य होऊ न सहाय

अमरुदवा जे फरये ला घवद से ओहपर सुगा मंडराय
उ जे खबरी जनइबो अदित्य से सुगा दिहले जुठीयाय
उ जे मरबउ रे सुगवा धनुष से सुगा गिरे मुरुछाय
सुगनी जे रोवय वियोग से आदित्य होऊ न सहाय

कीर्तन

गीत-1

धन धन सीताजी के फुलवरिया
जहाँ अये साँवरिया
माथे मुकुट शोभे काने कुण्डल डोले
अंखियामे शोभे कजरिया
जहाँ आयल साँवरिया
मृदु मुसकान करे तिरछी नजरि मारे
सभा बीच खिचले धनुषिया
जहाँ अयला साँवरिया
सुन्दर रूप देखि सुधिबुधि गेलै भूलि-
आब ने सोहाए घर दुअरिया
जहाँ आयल साँवरिया
जुलफी कपोलन शोभे सीताके मनमोहे
सखि सब करत पुकरिया
जहाँ आयल साँवरिया

गीत-2

श्यामल पहुनमा बिनु निन्दियो ने भावे, सुनू हे सजनी
मनमा चोरौने नेने जाय
नीको नहि लागे मोरा, दिन और रतिया, सुनू हे सजनी
दुअरो अंगनमा ने सोहाय
सीया जी के पाबी भेल, मोन परसनमा, सुनू हे सजनी
भेलथिन विधाता बड़ सहाय
लतिका स्नेह गाबे, किछुओ ने भावे, सुनू हे सजनी
प्रभु पर सँ दिल नहि जाय, सुनू हे सजनी

गीत-3

घूमे रामलखन दुनू भइया-, नदी के तीरेतीरे ना
किनका बिनु रे सून अयोध्या, किनका बिनु चौपाया
किनका ले, रे मोरा सून रसोइया, आब के भेजन बनाइ
राम बिनु मोरा सून अयोध्या, लछुमन बिनु चौपाया
सीता लए मोरा सून रसोइया, के देत भोजन बनाइ
नदी के तीरेतीरे ना
कओन गाछ तर आसन वासन, कओन गाछ तर डेरा
कओन गाछ तर भीजैत हेता, रामलखन दुनू- भइया
नदी के तीरेतीरे ना
चानन गाछ तर आसन वासन, चम्पा गाछ तर डेरा
अशोक गाछ तर भीजैत हेता, रामलखन दुनू भइया
नदी के तीरेतीरे ना

गीत-4

हनुमान जी का भक्तिगीत फोजपुरी मे
जय हो बजरंगबली वीर बंका
छन मे जरायल सोने केर लंका
किनकर पुत्र छथि किनकर सेवक
सिया के सुधि लीन्ह आय लंका
अंजनि के पुत्र छथि रामचन्द्र के सेवक
सीता के लए पहुँचाओल अयोध्या
जय जय हो बजरंगबली वीर बंका
छन मे जरायल सोने केर लंका

गीत-5

बजरंगी हमार गदाधारी,
तखन परबाहे की
पवन समान पवन के नन्दन
अतुलित महा बलशाली
तखन परबाहे की
एक संजीवन बुटी के कारण
लयला पहाड़ उखाड़ि
तखन परबाहे की
सकल सिद्ध निधि जिनकर स्वामी
स्वामी हुनक धुनषधारी
तखन परबाहे की
बजरंगी हमार गदाधारी
तखन परबाहे की

गीत-6

अंजनी के पुत्र तोहें बाँके हो ललनमा
से अंजनी के पुत्र हनुमान हो ललनमा
कि आहे तोहें लंका गेलऽ
मंुद्रिका पहुँचाय एलऽ
सिया सुधि खबरि जनेलऽ हो ललनमा
अंजनी के पुत्र तोहें बाँके हो ललनमा
कि आहे तोहें लंका गेलऽ
संजीवनी उखाड़ि लेलऽ
लछुमनबुटी केलऽ परचार हो ललनमा-
अंजनी के पुत्र तोहें बाँके हो ललनमा
कि आहे नांगरि बढ़ाय लेलऽ
तूर लेपटाय लेलऽ
लंका के केलऽ सुड्डाह हो ललनमा
अंजनी के पुत्र तोहें बाँके हो ललनमा

<u>फगुआ के गीत</u>

गीत- 1

धनिधनि ए सिया- रउरी भाग, राम वर पायो।
लिखि लिखि चिठिया नारद मुनि भेजे, विश्वामित्र पिठायो।
साजि बरात चले राजा दशरथ,
जनकपुरी चलि आयो, राम वर पायो।
वनविरदा से बांस मंगायो, आनन माड़ो छवायो।
कंचन कलस धरतऽ बेदिअन परऽ,
जहाँ मानिक दीप जराए, राम वर पाए।
भए व्याह देव सब हरषत, सखि सब मंगल गाए,
राजा दशरथ द्रव्य लुटाए, राम वर पाए।
धनि धनि ए सिया रउरी भाग-, राम वर पायो।

गीत- 2

शुभ कातिक सिर विचारी, तजो वनवारी।
जेठ मास तन तप्त अंग भावे नहीं सारी, तजो वनवारी।
बाढ़े विरह अषाढ़ देत अद्रा झंकारी, तजो वनवारी।
सावन सेज भयावन लागतऽ,
पिरतम बिनु बुन्द कटारी, तजो वनवारी।
भादो गगन गंभीर पीर अति हृदय मंझारी,
करि के क्वार करार सौत संग फंसे मुरारी, तजो वनवारी।
कातिव रास रचे मनमोहन,
द्विज पाव में पायल भारी, तजो वनवारी।
अगहन अपित अनेक विकल वृषभानु दुलारी,
पूस लगे तन जाड़ देत कुबजा को गारी।
आवत माघ बसंत जनावत, झूमर चौतार झमारी, तजो वनवारी।
फागुन उड़त गुलाब अर्गला कुमकुम जारी,
नहिं भावत बिनु कंत चैत विरहा जल जारी,
दिन छुटकन वैसाख जनावत, ऐसे काम न करहु विहारी, तजो वनवारी।

निर्गुण लोकगीत

गीत- 1

कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई।
आहि रे बालम चिरई, आहि रे बालम चिरई।

बनदर ढुँढली ढुँढली नदी के तीरे-बन ढुँढली दर-
सांझ के ढुँढली रात के ढुँढली ढुँढली होत फजीरे
जन में ढुँढली मन में ढुँढली ढुँढली बीच बजारे
हियाढुँढली विरह के मारे सि के ढुँढलीहिया में पइ-
कवने अँतरे में समइलू आहि रे बालम चिरई
कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई।

गीत के हम हर कड़ी से पुछलीं पुछलीं राग मिलन से
छंदछंद लय ताल से पुछलीं पुछलीं सुर के मन से-
किरनकिरन से जाके पुछलीं पुछलीं नल गगन से-
धरती और पाताल से पुछलीं पुछलीं मस्त पवन से
कवने सुगना पर लोभइलू आहि रे बालम चिरई
कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई।

मंदिर से मस्जिद तक देखलीं, गिरिजा से गुरुद्वारा
गीता और कुरान में देखलीं, देखलीं तीरथ सारा
पंडित से मुल्ल तक देखलीं, देखली घरे कसाई
सगरी उमिरिया छछलत जियरा, कैसे तोहके पाईं
कवने बतिया पर कोहँइलू, आहि रे बालम चिरई
कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई।

गीत -2

सब दिन होत न एक समाना
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह कंचन भरे खजाना
एक दिन भरे डोम घर पानी
मरघट गहे निशाना सब दिन ....
एक दिन राजा रामचन्द्र जी, चढ़ के जात विमाना जी
एक दिन उनका वनवास भयो
दशरथ तजे प्राणा साधु सब ....
एक दिन अर्जुन महाभारत में, जीते इन्द्र समाना जी
एक दिन भीलन लुटी गोपिका
वही अर्जुन वही बाणा ....
एक दिन बालक भयो गोदीया मा
एक दिन भयो सयाना
एक दिन चिता जरे मरघट पे
धुआं जात असमाना ....
कहत कबीर सुनेउ भाई साधो
यह पद हे निर्वाणा
यह पद का जो अर्थ लगइहें
होनहार बलवाना, सब दिन...

गीत- 3

बाड़ी मोरी अबही उमरिया
आ विधाता दिनवा धई दिहलें ऐ राम...
सजना सेयान हम नदान,
त कइसे के गवनमां जाइब ऐ राम
बाबा मोरा अइसन निरमोहिया
न मन में विचरवा कइले ऐ राम
माई मोरा हिया के कठोर
त घरवा से निकाली दिहली ऐ राम
नइहर में कुछउ न सिखलीं
पिया के घर का करब ऐ राम
कुसुम रंग पेन्हली चुनरिया
त लाल रंग चादर मिलल ऐ राम...
डोलिया में हमके बिठाई के
कहार चार लागी गइले ऐ राम
सुसुकिसुसुकि माई रोवेली-
त सखी फुका फारी रोवे ऐ राम
धनी अब भइली ससुरइतीन
लउटी फिर न आइब ऐ राम
दास ऐ कबीर, निर्गुण गावेलन
गाके समझावेले ऐ राम...

लोरियाँ

गीत- 1

चंदा मामा, आरे आव, पारे आवऽ,
नदी के किनारे आवऽ
सोने की कटोरिया में
दूध भात ले ले आवऽ
बुचिया का मुंहवा में घूट!!घूट !
(अनेक जगह यह पंक्ति है -"बबुआ के मुंहवा में घुटुक"।)

गीत- 2

घुघुवा मन्ना, उपजे चन्ना,
एही पड़े आवेले बबुआ के मामा।
उठा ले ले कोरा, थमा दे ले लड्डू,
छेदा देले नाककान-
पहिरा देले बाला।

गीत- 3

मामा मामी, अंगना,
बीच में मुचेंयना
मामी के ले गइले चोर,
मामा टकटोरेले।

गीत- 4

आउरे गइया नाटी,
दूध दे भरि कांटी।
आउरे गइया अगरी,
दुधवा दे भरि गगरी।

हुंकुरति आउ गइया, चोकरति आउ।
घुंचवा भरत दूध लिहले आउ।
तोरे घूंचवा सोन्हाई
मोरा बाबुल के पिआउ।

गीत- 5

आजा आजी के थूके?
सोने के कि माटी के?
आजाआजी सोने के-,
पितिया पीताम्भर के
लोग बिराना माटी के।

गीत- 6

बबुआ कथू आवेले?
घोड़वा चढ़ल आवेले।
कथक नाचत आवेला।
आजी कथू आवेली?
डोला चढ़ल आवेली।
चवर डोलत आवेले।

गीत- 7

बचवा के माई गइली पहार
ले अइली गजमोहरा के हार।
कुछ घइली असहड़,
कुछ घइली कसहड़,
कुछ घइली बबुआ गर हार।

गीत- 8

मोरे बाबू, मोरे बाबू का करेले?
कोइनी फोरिफोरि घर भरेले।-
कोइनी का तेल में छपकि खेलेले।
(कोइनी कहुए का बीज)

गीत- 9

मोर बचवा मोर बचवा का करेले?
मछरी मारिमारि मगइया धरेले।-
रीन्हेली बहिना हींग जीरा लाइ,
खाले भइया पोंछ फहराइ।
अवरा कूकुर कबरा खाला,
पोछिया डोलाई,
चल लउंड़िया जूठ बटोरे,
घुंघरू बजाइ।
खरिका देली बारी बिटिया
नथुना फलाइ।

गीत- 10

हेलेहेले बबुआ-,
कुसई में ढबुआ,
बाप दरबरुआ,
बेटवा लहैंडुआ
धिअवा नचनियां।

गीत- 11

बाबू बाबू कहीला,
चमन के रारी ला,
चन्दन भइले थोरा,
मोरे बाबूल के मुंह गोरा।
अंखिया रतनारी,
भहुआं सोहे कारी।
बाबू की चोरिनी महतारी।
चटनी महतारी,
बाबू की चोरिनी बा फूआ,
चटनी बा फूआ ।....

गीत- 12

अनर मनर पुआ पाकेला,
चीलर खोंइछा नोचेला।
चिलरू गइले खेतखरिहान-,
ले अइले तिलठिया धान।
ओही धान के रिन्हली बरवीर,
नेवति अइली बाम्हन फजीर।
बम्हना के पुतवा दिहले असीस,
जीअसु बचवा लाख बरीस।

गीत- 13

आटा पाटा, बिलारी के बच्चा
बचवा का नव दस बेटा।
गोली गइया ह, नाटी गइया ह
धवरी ह, सोकनी ह।
खरवा खाले, पनिया पियेले,
कहवां जाले।

गीत- 14

जिन्हि बाबुल देखि सिहइहें
तिन्हि नउजी बिअइहें।
बीअहू के बिअइहें त मेंगुची बिअइहें।

गीत- 15

निनिया अवेले निनर वन से
उरदी मूंग ओही पटना से
खाट मांच निनिअउरा से।

गीत- 16

चिरई चोंचा मुंह के बेबहरा,
पण्डितन से करे बकताई।
उठि के चोंचा तोर खोंता उजारबि,
छुटि जइहें बकताई।

गीत- 17

हमार बाबू कथी के?
नौ मन सोना हीरा के,
माई लवंग के, बाप चौवा चन्दन के।
पीतिया पीतम्बर के,
नर लोग सभ माटी कंठे
हमार बबुआ सोना के।

गीत- 18

बबुआ बबुआ करेनी
चन्दन रगरेनी।
चन्दन भइले थोर,
बबुआ का मुंहवा गोर।

गीत- 19

आऊरे गइया अगरी,
दुधवा ले आउ भरि गगरी
बाबू के पिआउ भर पेटुकी।

गीत- 20

पौढ़िये लालन, पालनै हौं झुलावौं
स्वर पद मुख चख कमल लसंत
लखि लोचन भंवर भुलावों
आज विनोद मोद मंजुल मनि
किलकनि खानि खुलावौ
तेइ अनुराग ताग गुहिये कह
मति मृगनयनि बुलानि
तुलसी भनित भलो भामिनि उर
सो पहिराइ फुलावों।

गीत- 21

सोइये लाल लाड़िले रघुराई
मगन मोद लिये गोद सुमित्रा
बारजाई बार बलि-
हंसे हंसत अनरसे अनरसत
प्रतिबिंबनि ज्यों भाई
तुम सबके जीवन के जीवन सकल सुमंगल दाई।

गीत- 22

सो अपने चंचलपन सो
सो मेरे अंचल धन सो
पुष्कर सोता है निज सर में
भ्रमर सो रहा है पुष्कर में
गुंजन सोया कभी भ्रमर में
सो मेरे ग्रह गुंजन सो
तनिक पार्श्व परिवर्तन कर ले
उस नासापुटको भी भर ले

उभय पक्ष का मन तु हर ले
मेरे व्यथा विनोदन सो।
तेरी आँखों का सुस्पंदन
मेरे तप्त हृदय का चन्दन।

गीत- 23

चन्दा मामा दौड़े आव
आरे आव पारे आव
नदिया किनारे आव
सोनवा कटोरी में के
दूध भात लेले आव -
बबुआ के मुँह में घुटूक।

गीत- 24

सुतेरे होरो लाल
तार बप्पा बांस काटै गेल
बांस के कटैया
तीन सेर मरूआ
कुटि पीसो तीन रोटी भेल -
एक रोटी छोरा छोरी
एक रोटी बुढ़वॉ
तेखर रोटी बुढ़िया
छूछे अकेल
सून रे हीरो लाल
तोर बप्पा बांस काटे गेल।

गीत- 25

नै खोजहि माय के
नै लिहिं बाप के नाम
माय गेली कूटे पीसे -
बाप गेली गाँव
चचा गेलो छप्परछारे-
चाची के दुखली कान
यहाँ एगो बैठल छीयो
हमहि ठाने सठा।

गीत- 26

अलिया के झलिया में
गोला बरद खेत खाय छो गे
कहमा गे डीह पर गे
डीह छूटल परबतिया गे
हाँकू बेटी लक्ष्मी
गोर में देबौ पैजनी
बाबू कहां गेल खुन गे
बाप गेलौ पुरनिया में
लै लौ लाल लाल बिछिया में

गंगा स्नान के गीत

गीत- 1

कलकल बहे जहां दुधवा के धार-
गंगा मइया हो, धनि तोरी महिमा अपार।
सोने की किरनियां झुलना झुलावैं
हंसि कै पवन नित चंवर डुलावै
दइकै असीस दूनौ विहंसे किनार।
रिद्धि सिद्धि सोहे मइया तोहरे अंबरवा
सबकी अरज पै करतीं विचरवा।
कोटि कोटि धावै पंच तोहरे दुआर।
पतितन का तारें देवी देउतन का तारें
आपन हाथै सबकी बिगरी का तारें।

गीत- 2

झिलमिल झिलमिल लहराए हो
गंगा तोरी निर्मल लहरिया
धरती की प्यास बुझाए हो
गंगा तोरी निर्मल लहरिया
गंगा किनारे साधू कुटि छवाए
पानी पे चंदनिया के तार लहराए
नैनन की प्यास बुझाये हो
गंगा तोरी निर्मल लहरिया
कठिन कलेस मिटाए हो
गंगा तोरी निर्मल लहरिया

गीत- 3

मातु गंगा लागि भगीरथ बेहाल।
कोऊ लीपै अगुआ न कोऊ पिछवार,
भगीरथ लीपै छत सिव कै दुआर
कोऊ तोड़ै फूल कोऊ बेलपत्र,

भगीरथ तोड़ै बेलपत्र सिव कै दुआर
कोऊ मांगै अनधन कोऊ धेनु गाय,
भगीरथ मांगै गंगाजी कै धार
आगै आगै भगीरथ भागैं पाछे सुरसरि कै धार।

गीत- 4

हमका दैहें वरदान, चलो री गुइयां गंगा नहाय
गंगा नहाइ कै करिबै पुजनिया,
जगर मगर जिया होए
चलो री गुइयां गंगा नहाय।
दससन परसन और कीरतन
पाप सकल धुल जाएं
चलो री गुइयां गंगा नहाय।
सिव की जटा हुई मुइं पै उतरीं,
सोभा बरनी न जाए
चलो री गुइंया गंगा नहाए।
गंगा नहाए तीरथ फल पइबैं।
काया निरमल होये, चलो री गुइयां गंगा नहाय।

गीत- 5

विधि के कमंडल की सिद्ध है प्रसिद्धि यही,
कहै पदमाकर गिरीश शीश मंडल के
मुंडन की माल तत्काल अघहर है।
भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ
जहनु जप जोग फल, फैल की फहर हैं।
क्षेम की छहर, गंगा रउरी लहर
कलिकाल को कहर यम जाल को जहर है।

गीत- 6

आ जाऊँगी बड़े भोर
दहीरा लेके आ जाऊँगी बड़े भोर
ना मानों चुनरी घर राखों, लिखे पपीहा मोर।
ना मानों चुनरी घर राखों, मुत्तियन लागी कोर।
ना मानो मटकी घर राखों,
सबरे बिरज कौ मोल।
ना मानो बेंदीघर राखो, बाजूबंद हुमेल।

गीत- 7

चलो करें असनान, गंगा की लहरै लहरिया।
सखि घर से निकसि के आओ, निकसि के आओ।
मेला देखन जइबै आज, गंगा की लहरै लहरिया।
सखि गंगा की निरमल धारा, ओ निरमल धारा
छिन मा हरे पाप, गंगा की लहरै लहरिया
सखि पियर चुनरी रंगायो चुनरी रंगायो
हम देवै दीपदान गंगा की लहरै लहरिया
सखि मेवा में थाल भराओ थाल भराओ
संग ले लो पकवान गंगा की लहरै लहरिया।

रक्षा बंधन के गीत

गीत- 1

गलिया क गलिया फिरइ मनिहरवा,
के लइहैं मोतिया क हारहिंडोलवा।
मोतिया क हार लइहैं भैंया होभैया ,
जेकर बहिनी दुलारी हिंडोलवा।
पाछे लागी ठुनकई बहिनी रानी,
एक लर हमहूं क देहूं हिंडोलवा।
एक लर टुटि हैं सहस मोती गिरि हैं।
एक लर बहिनि तुं लेउ हिंडोलवा।

गीत- 2

माइ तलवा कुहकइ मोर।
माई जेठरा भइअवा जिनि होइहैं सावन नीअर।
माई सार बहनोइया एकै होइहैं सावन नीअर।
माई बभना का पूत जिनि पठये सावन नीअर।
माई पोथिया बांचन लगिहें सावन नीअर।।
माई लहुरा भइयवा पठये सावन नीअर।
माई रोइाइ बिदवा करइहैं सावन नीअर।।

गीत- 3

ठाढ़ी झरोखवा मैं चितवऊं,
नैहरे से कोई नाहीं आइ।
ओहिरे से केउ नाहीं बपई रे
जिन मोरी सुधियों न लीन।
ओहिरे बहिनिया कैसन बीरन,
ससुरे में सावन होई।

चौथ चन्दा लोकगीत

चौथ पूजा के दिन स्कूली बच्चों द्वारा गाया जाने वाला-के दिन गणेश (भाद्र शुदी चौथ) चौथ चंदा गीत। भाद्रसुदी चौथ को स्कूली बच्चे गुरूजी के साथ समूह में प्रत्येक विद्यार्थी के घर लकड़ा बजाते और इन गीतों को गाते हुए जाते हैं। विद्यार्थी के मातापिता विदाई - में अन्न, वस्त्र और द्रव्य देते हैं, उसे लाकर स्कूल में जमा किया जाता है, वस्त्र गुरूजी को दे दिया जाता है; अन्नद्रव्य से स्कूल में भोज का आयोजन होता है-, जिसमें गुरूजी के साथ सभी बच्चे भाग लेते हैं। यह प्रथा अब गाँव के स्कूलों में दिखाई नहीं पड़ती।

गीत- 1

खेलत खेलत एक कउड़ी पवनी
उ कउड़ी गंगा दहवऽली
गंगा मुझको बालू दिया, उ बालू गोड़िनिया लिया।
गोड़िनिया मुझको भार दिया, उ भार घसवहा लिया।
घसवहा मुझको घास दिया, उ घास गैया लिया।
गइया मुझको दूध दिया, उ दूध बिलैया लिया।
बिलइया मुझको चूहा दिया, उ चूहा चिल्होरिया लिया।
चिल्होरिया मुझको पाँख दिया, उ पाँख राजा लिया।
राजा मुझको घोड़ा दिया।

गीत- 2

रामजी चले लछुमनजी चले, महावीरजी चले, लंका दाहन को।
तैंतीस कोट प्रदुम्न चले, जैसे मेघ चले बरिसावन को।
का करिहें उत्पात के नन्दन, का करिहें तपसी दोनों भइया।
मार दिहें उत्पात के नन्दन, काटि दिहें तपसी दोनों भइया।

गीत- 3

एक मती हरताल ताला, जहाँ पढ़ावे पंडित लाला।
पंडित लाला दिये असीस, जीओ बचवा लाख बरीस।
लाख बरीस की उमर पाई, दिल्ली से गजमोती मंगाई।
आव रे दिल्ली, आजम खाँव। आजम खाँव चलाया तीर, बचा कोई रहा न वीर।
जय बोलो जय रामा रघुवर, सीता मैया करे रसोइया
जेवें लछुमन रामा, ताहि के जूठन काठन पा गया हनुमाना।
सोने के गढ़ लंका ऊपर कूद गया हनुमाना।

गीत- 4

बबुआ हो बबुआ, सिताब लाल बबुआ
बबुआ के माई बड़ा हई दानी,
लइकन के देख देख भागे ली चुल्हानी।-
घर में धोती टांगल बा,
बाकस में रुपेया कूदऽ ता
घर में धरबू चोर ले जाई
गुरुजी के देबू, नाम हो जाई।
बबुआ आँख मुनौना भाई,
बिना किछु लेहले चललऽ ना जाई।

गीत- 5

छाते थे भाई छाते थे,
छाते छाते भूख लगी।-
अनार की कलियाँ तोड़ लिया, बंगाली का छोकड़ा देख लिया।
धर टाँग पटक दिया, रोतेरोते घर गया।-
घर का मालिक दौड़ा आया, दिल्लीकोस पुकारते आया।-
आव रे दिल्लीआजम खाँव-, आजम खाँव चलाया तीर,
बचा कोई रहा न वीर।
थरथर काँपे जमुनापुरी-,

जमुनापुरी से आया वीर, मार गया दो छैला तीर।
छैला मांगे एक छलाई, दिल्ली से गजमोती मंगाई।

गीत- 6

एक दिन सतराजीत के भाई, पहुँचे वन में जाई।
वहाँ भादो का बहार दिखलाए हुए थे
करते करते शिकार-, खुद बन गए शिकार
हाथी घोड़ा से भी साज- वे सजाए हुए थे।
सुनकर जामवन्त गुर्राया, उनको क्रोध और चढ़ि आया।
पहले बातों से बहलाए, वह शर्माए हुए था।
भारी होने लगी लड़ाई, जामवन्त को बात याद जब आई
हमको दर्शन देने आज रघुराई आए थे।

पराती लोकगीत

गीत- 1

हाथे लिहली खुरपी गड़ुअवे जुड़ पानी
चलली मदोदर रानी दावना छिरके पानी
टूटि गइले खुरपी, ढरकि गइले पानी
रोयेली मदोदर रानी, कवना छिनारी के बेटा रहलन फुलवारी
हम ना जननी ए रनिया राउरे फुलवारी
केकर घोड़वा माई रे ओएडेंगोएड़ें जाय-
केकर धोड़वा माई रे सोझे दउड़ल जाए
ससुर भसुर के घोड़वा ओएड़ेगोएड़े जाय-
कवना दुलहवा के घोड़वा माई रे सोझे उदड़ल जाय
रोयेली कवन सुभई मटुकवे पोंछे लोर
हँसेले कवन दुलहा, मुँहे खाले पान।

गीत- 2

मोर पिछुअरवा रे घन बंसवरिया
कोइलर बोले अनबोल,
सुतल रजवा रे उठि के बइठऽले
पसिया के पकड़ लेइ आउ रे
हँकड़हु चकुदरवा-डँकड़हु गाँव-
राजा जी के परे ला हँकार ए
कि राजा मारबि कि डांड़बि कि नग्र से उजारबि ए
नाहिं हम मारवि नाहिं गरिआइबि
नाहिं हम नग्र से उजारबिए।
जवना चिरइया के बोलिया सोहावन,
उहे आनि देहु रे।
डाढ़ि डाढ़ि पसिया लगुसी लगावे-,
पाते पाते कोइलर लुकासु रे-,

जेहिसन पसिया रे लवले उदबास, (उदबास(बेचैनी=
मुओ तोर जेठका पूतऽ ए।
तहरा के देब चिरई सोने के पिंजड़वा
खोरन दुधवा आहार रे।
जेहिसन पसिआ रे हमें जुड़वले
जिओ तोर जेठका पुतऽ रे।

गीत- 3

हम तेहि पूछिले सुरसरि गंगा, काहे रउआ छोड़िले अरार हे।
पिया माछर मारे ला बिन रे मलहवा,
ओहि मोरा छोड़िले अरार रे।
डालावा मउरिया लेके उतरे कवन समधी,
सोरहो सिंगार ले के उतरे कवन भसुर,
ओहि मोरा ढबरल पानी।

गीत- 4

ए जाहि रे जगवहु कवन देवा, जासु दुहावन।
ए दुधवा के चलेला दहेंडिया त,
मठवा के नारी बहे।
ए हथवा के लिहली अरतिया त,
मुँह देखेली सोरही सनेही।
ए जहि रे जगवहु कवन देही, जासु दुहावन।
ए हथवा के लिहली अरतिया, त
सोरही सनेही आरती निरेखेली ए। जाहिरे...

गीत- 5

आईं ना बरहम बाबा, बइठीं मोरे अंगनवा हे,
देबऽ सतरजिया बिछाइ ए।
गाई के घीव धूम हूम कराइबि,
आकासे चली जास ए।

आईं ना बरहम बाबा, बइठीं मोरे अंगनवा हे।
देबऽ सतरजिया बिछाई ए।
गाई के गोबर कब ..जग उगरिन होसु ए।
आईं ना काली माई, बइठीं मोरे अंगनवाँ हे,
देबऽ सतरजिया बिछाइ ए,
गाई के घीव धूम हम कराइबि,
कब जग उगरिन होसु हे।

विवाह गीत

गीत- 1

तहरा बक्सा के चाभी हेरईले ए भसुर की वाह वाह
अब ठाढ़े रहब की जईबा ए भसुर की वाह वाह
अपना बाबु के नामवा हंसवला ए भसुर की वाह वाह
अब ठाढ़े रहब की जईबा ए भसुर की वाह वाह
अपना माई के चभियावाला के देब ए भसुर की वाह वाह
उनके देके चभिया बनावइब ए भसुर की वाह वाह
अपना चाची के चभियावाला के देब ए भसुर की वाह वाह
उनके देके चभिया बनाइब ए भसुर की वाह वाह
अपना मामी के चभियावाला के देब ए भसुर की वाह वाह
उनके देके चभिया बनाइब ए भसुर की वाह वाह
अपना फुवा के चभियावाला के देब ए भसुर की वाह वाह
उनके देके चभिया बनाइब ए भसुर की वाह वाह
चभिया त बनवाही के परी ए भसुर की वाह वाह

गीत- 2

दादा केरा अँगना जामुन के गछिया।
सेइ तर दुलरइतिन बेटी ठाढ़, से दादा न बोलइ॥1॥
रहियो न बोलइ, बटियो न बोलइ।
पनिया भरइते पनिहारिन, से दादा न बोलइ॥2॥
अनमा से देल दादा, धनमा से दिहले।
मोतिया दिहले अनमोल जी॥3॥
एक नहीं दिहले दादा, सिर के कँगहिया।
सासु ननद ओलहन देत, से दादा न बोलइ॥4॥

गीत- 3

कोठे ऊपर में बनरा सूतल हे।
बनरा बोलाबे लाड़ो कइसे आवे हे।
अगे माइ, नया तोहर दुलहा भीरे कइसे आवे हे॥1॥
पायल के अवाज सुनि दादा जागथ हे।
अगे माइ, नया दुलहिनिया लाजे कइसे आवे हे॥2॥

गीत- 4

ननदी अँगनमा चनन ेकरा हे गछिया।
ताहि चढ़ि बोलय कगवा कुबोलिया॥1॥
मारबउ रे कगवा हम भरल बढ़निया।
तोहरे कुबोली बोली पिया गेल परदेसवा
हमरा के छोड़ि गेल अपन कोहबरवा॥2॥
काहे लागी मारमें गे भरल बढ़निया।
हमरे बोलिया औतन पिया परदेसिया॥3॥
तोहरे जे बोलिया औतन पिया परदेसिया।
दही भात मिठवा खिलायम सोने थरिया॥4॥
उड़ि उड़ि कगवा हे गेलइ नीम गछिया।
धम से पहुँची गेलइ पिया परदेसिया॥5॥

गीत- 5

अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
टिकवा ले गुरहँथियेदुलहिन को वस्त्राभूषण देता हैरे, जेठ भैंसुरा॥1॥
अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
नथिया ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा॥2॥
अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
हँसुली ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा॥3॥

अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
बजुआ ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा॥4॥
अच्छा अच्छा कपड़ा चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
सड़िया ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा॥5॥

गीत- 6

लावा न छींटऽ ह कवन भइया, बहिनी तोहार हे।
अँगूठा न धरऽ ह कवन दुलहा, सुगइ तोहार हे॥1॥
लावा न छींटऽ ह कवन भइया, बहिनी तोहार हे।
अँगूठा न धरऽ ह कवन दुलहा, सुगइ तोहार हे॥2॥

गीत- 7

मँड़वा बइठल बाबा, दुलरइता बाबा, चकमक मानिकदीप हे।
कनेयादान के अवसर आवल, बराम्हन कयल हँकार हे॥1॥
झाँपि झँूपि लवलन मइया दुलरइतिन मइया,
रखल बाबा केर जाँघ हे।
जब रे दुलरइता बाबा मुँहमा उघारल,
साजन रहल निरेखि हे॥2॥
का हथी सीता हे सुरुज के जोतिया,
का हथी चान के जोत हे।
अइसन सुनर कनेया कइसे मोरा भेंटल,
धन धन हको मोरा भाग हे॥3॥
कुसबा ले काँपथि बेटी के बाबू,
कइसे करब कनेया दान हे।
तोड़ी देहु तोड़ी देहु करहु बियहवा,
तोड़ी देहु जिया जंजाल हे।
कुइयाँ खनउली आउ बेटी बियाहली,
तनिको न करहु बिचार हे॥4॥

बेद भनइते बराम्हन काँपल, काँपी गेल कुल परिवार हे।
हमर धियवा पराय घर जयतन, अब भेल पर केर आस हे॥5॥

गीत- 8

आले आले बँसवा कटावलूँ, डढ़िया नबि नबि जाय।
से जीरा छावल कोहबर॥1॥
सेहे पइसि सूतल दुलहा दुलरइता दुलहा।
जबरे सजनमा केर धिया, से जीरा छावल कोहबर॥2॥
ओते सुतूँ ओते सुतूँ, दुलहिन, दुलरइतिन दुलहिन।
पुरबी चदरिया मइला होय जयतो, से जीरा छावल कोहबर॥3॥
एतना बचनियाँ जब सुनलन, दुलहिन सुहबे।
खाट छोड़िए भुइयाँ लोटे हे, से जीरा छज़वल कोहबर॥4॥
भनसा पइसल तोहे बड़की सरहोजिया।
अपन ननदिया के बौंसावह से जीरा छज़वल कोहबर॥5॥
उठूँ मइयाँ उठूँ मइयाँ, जाऊँ कोहबरवा।
अपन सँम्हारू लामी केस, से जीरा छावल कोहबर॥6॥
कइसे उठूँ, कइसे उठूँ भउजी हे।
छिनारी पूता बोलहे कुबोल, से जीरा छावल कोहबर॥7॥
कने गेल कीया भेलऽ छिनारी के भइया हे।
हमर ननदिया रूसवल से जीरा छावल कोहबर॥8॥

गीत- 9

सोने की खटिया रूपे केर मचिया, ईंगुर लगल चारो पाट हे।
एक हाथ तेल, दूसर हाथ अबटन सीता सिरहनमा लेले ठाढ़ हे॥1॥
गँगा किंरियवा तूहुँ खाहु जी सीता, तब धरू पलँग पर पाँव हे।
गंगा हाथ लिहलन जबहिं सीता देइ, गंगा हो गेलन जलबाय हे॥2॥
येह किरियवा सीता मैं न पतिआऊँ सुरुज किरियवा तूँ खाहु हे।
जबहिं सीता हे सुरूज हाथ लिहलन सुरूज हो गेलन छपित हे॥3॥
येहु किरियवा सीता मैं न पतिआऊँ, अगिन किरियवा तूँ खाहु हे।
जबहिं सीता देइ अगिन हाथ लिहलन, अगिन होलइ जरिछाय हे॥4॥

कहथिन रामचंदर सुनु देइ सीता जी, अब हम दास तोहार हे॥5॥
अइसन पुरूख के जात बनावल, झूठो लगावे अकलंक हे।
फाटत भुइयाँ ओकरो में समयतीं मुहमाँ न देखतीं तोहार हे॥6॥

गीत- 10

अमवा पत्तो न डोलले महुआ के पत्तो न डोलले।
एक इहाँ डोलले सुगइ सेज हे बेनियाँ॥1॥
हरे रँग के बेनियाँ, आँचर लगल मोतिया।
सुरुजे देलन जोतिया॥2॥
आग आने गेलिअइ हम सोनरा के घरवा।
कउनी रे बैरिनियाँ चोरयलक मोर हे बेनियाँ॥3॥
गेलिअइ हम ननदोहि बनके पहुनमा।
अरे, ननदोसिया के पलँग देखली अपन बेनिया॥4॥
मारबो हे धनियाँ हम कादो में लेसरि के।
अरे, हमरे बहिनियाँ के लगैलऽ काहे चोरिया॥5॥
सेजिया बिछायब तहाँ धनि पयबइ।
अरे, मइया के जनमल बहिनियाँ कहाँ पयबइ॥6॥

गीत- 11

मोरा पिछुअड़वा बबुरी के गछिया,
हाँ जी मालिन, बबुरी फुलले कचनरवा।
से फूल लोढ़ले दुलहा कवन दुलहा,
हाँ जी मालिन, गूँथि जे दहु निरमल हरवा॥1॥
से हार पहिरले दुलहा कवन दुलहा,
हाँ जी मालिन, पेन्हि चलले ससुररिया।
बीचे रे कवन पुर में घेड़ा दउड़वलन
हाँ जी मालिन, टूटि जे गेल निरमल हरवा॥2॥
पनिया भरइते तोंहिं कुइयाँ पनिहारिन,
हाँ जी मालिन, चूनि जे देहु निरमल हरवा।

येहु निरमल हरवा बाबू, माइ रे बहिनी चुनथुन
अउरो चुनथुन पातर धनियाँ॥3॥
माइ रे बहिनी चेरिया घर घरुअरिया
पातरी धनि हथिन नइहरवा।
मँचिया बइठले तोहिं अजी सरहजिया,
हाँ जी मालिन, कउना हिं रँगे पातर धनियाँ॥4॥
जनि रोउ जनि कानू अजी ननदोसिया,
हाँ जी मालिन, सामबरन मोर ननदिया।
येहो सरहजिया माइ हे जँगली छिनार,
हाँ जी मालिन, दूसि देलन पातर धनियाँ॥5॥

गीत- 12

जब पिया अयलन हमर अँगनमा।
धमे धमे धमकइह सगर अँगनमा॥1॥
जब पिया अयलन हमर चउकठिया।
मचे मचे मचकहइ हमर चउकठिया॥2॥
जब पिया अयलन हमर सेजरिया।
थरे थरे काँपहइ हमर बारी देहिया॥3॥
जब पिया भरलन हमरा के गोदिया।
टपे टपे चुए लगल हमर पसिनमा॥4॥
छोड़ि देहु छोड़ि देहु, हमर अँचरवा।
हम भागि जयबो अब अपन नइहरवा॥5॥
हमर नइहरवा में चंपा के कलिया।
आनि देहु दुलहा त रहम ससुररिया॥6॥

गीत- 13

नदिया किनारे जिरवा जलमि गेलइ।
फरे फूले लबधि गेलइ हे॥1॥
घोड़वा चढ़ल आथिन दुलरइता दुलहा हे।
उनकर पगड़ी अमोद बसे हे॥2॥

ओतें सूतूँ, दुलरइता दुलहा हे।
होइ जयतइ चुनरिया मइला हे॥3॥
धोबिया जे धोबले जमुन दइ हे।
सूखे देलकइ चनन गछिया हे॥4॥
बाट जे पूछले बटोहिया भइया हे।
केकर सिर के पगड़िया सूखइ हे।
केकर तन के चुनरिया सुखइ हे।
जेकर गंधे आमोद बसे हे॥5॥

गीत- 14

दुलरइता बाबू के बगिया में सीतल हे छँहियाँ॥1॥
खेलते धूपते गेली बेटी दुलरइती बेटी।
ए लपकि धयल छयला, दाहिन हे बँहियाँ॥2॥
छोड़ू छैला, छोड़ू छैला, दाहिन हे बँहियाँ।
अहे टूटि जयतो संखा चूड़ी, मुरकि जयतो हे बँहियाँ॥3॥
टूटे देहु, टूटे देहु, संखा चूड़ी मेरौनियाँ।
अहे फेरू से गढ़ाय देबो सोने केर हे कँगना॥4॥
सभवा बइठल तुहूँ, ससुर दुलरइता बाबू।
तोइर पूता दुलरइता बाबू, तोड़ल हे कँगना॥5॥
होय दऽ बिहान पुतहू, पसरत हे हटिया।
अहे फेरू से गढ़ाय देबो, सोने केर हे कँगना॥6॥

गीत- 15

टिकवा देख मत भुलिहऽ हो दादा, टिकवा हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल दुलहिन हइ जिमदार के॥1॥
नथिया देख मत भुलिहऽ हो बाबा, नथिया हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के॥2॥
झुमका देख मत भुलिहऽ हो चच्चा, झुमका हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के॥3॥
हँसुली देख मत भुलिहऽ हो मामा, हँसुली हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के॥4॥

गीत- 16

तनि एक अइपन लिखलूँ हम कोहबर।
ताहि पइसी सुतलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
जबरे दुलहिनियाँ सुघड़ साथे हे हरी।
लिखलूँ हम कोहबर मनचित लाय हे हरी॥1॥
एक पहर बितलइ, दोसर पहर बितलइ हे।
भे गेलइ फरिछ बिहान सुरुज किरिन छिटकल हे हरी॥2॥
दादी जे पइसी कोहबर दुलहा जगावे हे।
भे गेलो फरिछ बिहान, सुरुज किरिन छिटकल हे हरी॥3॥
उठि उठि जगबथि राम के सीता देइ हे।
उठूँ परभु भे गेलो बिहान, उठहुँ परभु कोहबर हे हरी॥4॥
हम तोहिं पूछूँ हे सीता देइ दुलहिन हे।
कइसे चिन्हलऽ भे गेलो बिहान, कहहु सिरी राम हे हरी॥7॥
भेल फरिछ परभु, कउआ डार बोले जी।
गउआ दुहन घर घर आवे, सुनहु मोर सामी हे हरी॥6॥
मोर माँगे मोतिया सभ परभु बदरंगे भेल।
एही से चिन्हलूँ भेल बिहान, उठहु रघुनन्नन हे हरी॥7॥

गीत- 17

मोर के मजुरवा केरा नाया कोहबर।
गंगा जमुनी बिछामन भेलइ हे॥1॥
ताहि पइसी सुतलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
जवरे भये दुलरइतिन सुघड़ हे॥2॥
ओते सुतूँ, ओते सुतूँ दुलरइतिन सुघड़ हे।
घामे रे चदरिया मइला होय रे, नाया कोहबर॥3॥
एतना बचनियाँ जब सुनलन दुलरइता सुघड़ हे।
चलि भेजन अपन नइहरवा रूसि हे॥4॥
अँतरा में मिललन दुलरइता भइया हे।
काहे बहिनी बिदइया भेलऽ हे।
परपूत बोलऽ हे कुबोली बोली हे॥6॥

बाँधल केसिया भइया, खोलाइ देलन हे।
संखा चुड़िया फोड़ाइ देलन हे।
कसमस चोलिया फराइ देलन हे॥7॥
घुरू घुरू बहिनी, नइहरवा चलूँ हे॥8॥
खोलल केसिया भइया बँधाइ देलन हे।
कसमस चोलिया सिलाइ देलन हे॥9॥
संखा चूड़िया पेन्हाइ देलन हे।
छिनारी पूता के बन्हाइ देलन हे॥10॥

गीत- 18

परबत उपर नेमुआ चनन केर गाछ, लिखूँ कोहबर।
ताहि तर दुलरइता दुलहा खेलइ जुगवा सार लिखूँ कोहबर॥1॥
किया तोंहे अजी बाबू, खेलबऽ जुगवा सार, लिखूँ कोहबर।
तोहरो दुलरइतिन सुघवे नइहरवा भागल जाय, लिखूँ कोहबर॥2॥
जाय देहु जाय देहु, अम्माँ जी के पास, लिखूँ कोहबर।
उनको पीठी बजतइन सुबरन केर साँट लिखूँ कोहबर॥3॥
ई मति जानु बाबू, सासु निरमोहिया, लिखूँ कोहबर।
उनकर धिया हइन परान के अधार, लिखूँ कोहबर॥4॥

गीत- 19

टुटली मैं फटली मड़इआ देखते भेयामन हे।
सेहु पइसी सुतली गउरा देइ, मन पछतावे हे॥1॥
माँगि चाँगि लावल महादेव, धन बित छरिआ हे।
बाघेछाल देल ओछाइ बसहा धान खाइल हे॥2॥
नहाइ धोवाइ महादेव चउका चढ़ि बइठल हे।
अधन देली ढरकाइ बिहँसि गउरा बोलथिन हे॥3॥
सब केर देलहो महादेव, धन बित छड़िया हे।
अपना जगतर भिखारी, पइँचो न मिलत हे।
ऐसन नगरिया के लोग, पइँचो न देहइ हे॥4॥

गीत- 20

कोहबर वइठल ओहे धनि सुन्नर, काहे धनि बदन मलीन।
तनि एक अहे धनि मुहमा पखारह खिलि जयतो बदन तोहार॥1॥
मलिया के बघिया में फुलवा फुलायल, फूल फूलल कचनार।
ओहे फूल लागि हइ जियरा बेयाकुल, मोर बदन कुम्हलाय॥2॥
मलिया के बघिया फेड़ अमरितंवा फूल फरि भेल भुइआँ नेब।
तेहि अमरित फूल लागि जियरा बेयाकुल, मोर बदन कुम्हलाए॥3॥
कथिए पिसायब, कथिए उठायब, कथिए घरब हम सहेज।
लोढ़े पिसाएब, हँथवे उठायब, कटोरवे रखब सहेज॥4॥
सेहि पीइ अहे धनि, सुतह हमर सेजिय, खिलि जयतो बदन तोहार।
लोढ़े पिसायल, हँथवे उठायल, कटोरवे रखल सहेज॥5॥
सेहि पीइ एहो धनि सुतलन सेजरिया, खिलि गेलन बदन अपान।
मलियन तेल कटोरवन उबटन, तेल लगावे आठो अँग॥6॥
तेल लगवइत एक बात पूछल, कह परभु जलम के बात।
हमरो जलम भेल, नगर बधावा भेल, भे गेलइ चहुँ दिस इँजोर॥7॥
बड़ जेठ लोग सभ आसीस देलन, राजा भगीरथ होय।
तुहूँ कहहु धनि अपन जलमिया, कहली हम सब हे अपान॥8॥
जाहि दिन अजी परभु, हमरो जलम भेल, बाबा सूतल चदरी तान।
झोंकि दिहल चेरिया मिरचा के बुकनी सउरी में पड़ल हरहोर॥9॥
बाबा जे जड़लन बजड़ केमड़िया मामा उठल झउराय।
गड़ल गड़ुअवा हमर उखड़ावल होइ गेलन जीउ जंजाल॥10॥

अध्याय - 4

'आल्हा-रूदल'

'आल्हा' या 'आलहखंड' जन-जन में लोकप्रिय प्राचीनतम हिन्दी महाकवि है। हिन्दी के जिन दो महाकाव्यों ने जन-जन में अपना स्थान बनाया है, उनमें गोस्वामी तुलसीदास कृत "रामचरित मानस" तथा जगनिक कृत "आल्हा" को गिना जाता है। उनमें रामचरित मानस सत्रहवीं सदी की कृति है तथा उसकी हस्तलिपि तुलसीदास जी के हस्तलेख तथा अन्य अनेक लिपिकारों की हस्तलिपि में मिलती है किन्तु जगनिक रचित आलहखंड की कोई प्रामाणिक हस्तलिपि अब तक प्राप्त नहीं हुई है। यह रचना अपने उद्‌भव काल से लगभग सात सौ वर्षों तक लोककण्ठ में व्याप्त तथा सुरक्शित रही। वाचिक परंपरा की इस कृति को लिखित स्वरूप देने का श्रेय फ़र्रुखाबाद के कलेक्टर चार्ल्स इलियट को है, जिसने 1865 ई॰ में उस क्षेत्र के चार अल्हैतों को बुलाकर, उनका गायन सुनकर, उसे लिपिबद्‌ध कराया। तब उसका लिखित स्वरूप सामने आया। इस प्रकार आल्हा हिन्दी का प्राचीनतम लोक महाकवि है, जो आज भी जनता के कंठ में विराजमान है।

आल्हा की मुखी कथावस्तु का केंद्र महोबा है। चँदेरी के राजा परमल ने महोबा के राजा वसुदेव परिहार पर आक्रमण करके उसकी सुंदर कन्या मल्हना दे से विवाह करके, महोबा को अपनी राजधानी बना लिया था। उसके संपर्क में दो शूरवीर दस्सराज तथा वत्सरज आए जिनके सहयोग से उसे विरोधियों को परास्त करने में मदद मिली। इन दोनों बनाफ़र बंधुओं को परमाल ने अपनी सेना में रख लिया। इन्हीं दस्सराज तथा उनकी पत्नी देवल दे से आल्हा रूदल नामक दो पुत्रों का जन्म हुआ। आल्हा-रूदल परमवीर थे। जिस युद्‌ध में जाते, विजय प्राप्त करके लौटते। कालांतर में कूटनीतिक के पश्चात राजा महिल ने कतिपय आरोप लगाकर आल्हा-रूदल का महोबा से निष्कासन करा दिया। जब महोबा पर पृथ्वीराज ने आक्रमण किया तब परमाल ने आल्हा-रूदल के आभाव में अपने को आशक्त अनुभव किया।

जनता की मांग एवं कूटनीतिक आवश्यकता को देखते हुए संचालन सूत्र संभालने वाली महारानी मल्हनी ने आल्हा-रूदल को मनाने तथा कन्नौज से वापिस लाने के लिए आल्हा-रूदल के बालसखा कवि जगनिक को कन्नौज भेजा। रानी मल्हानी ने रूदल तथा कवि जगनिक को अपना स्तन पान कराया था, अतः उन्हें भरोसा था कि मेरे अनुरोधपूर्ण आदेश तथा जगनिक के वाक्यचतुर्थ से, अपमान का घूंट पीकर निष्कासन भोगने वाले, आल्हा-रूदल भी वापस आ जाएंगे। हुआ भी यही। आल्हा-रूदल लौट आए तथा उनके शौर्य से परमाल कीरत सागर की लड़ाई में विजयी हुए। इन सभी कथा प्रसंगों को आलहखंड में स्थान दिया गया है।

आलहखंड के लिपिबद्धकरण किए जाने तथा उसकी कथावस्तु पर विचार करें तो पाते है कि उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध से बिसवी सदी के पूर्वार्द्ध तक एक शताब्दी में ही अनेक आल्हा प्रकाशित हो गए लेकिन इनमें किसी में भी आल्हा कि पूरी कथा नहीं थी। आल्हा कि गायकी, वीर कवि के रूप में विभिन्न आंचलिक बोलियों में अपना स्थान बनती हुई लोक व्याप्त हो गयी। भोजपुरी, अवधि, कनौजी तथा बुन्देली अनेक भाषायी स्वरूप ग्रहण करती रहीं और जगनिक का मूल आल्हा इनमें कहीं खो गया। इस संदर्भ में आचारी रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है- “ऐसा प्रसिद्ध है कि कलिंजर के राजा परमाल के यहाँ जगनिक नामक भाँट थे जिनहोने महोबा के दो देश प्रसिद्ध वीरों आल्हा और रूदल के वीर चरित का विस्तृत वर्णन कर एक वीर गीतात्मक कवि के रूप में लिखा था, जो इतना सर्वप्रिय हुआ कि उसके वीरगीतों का प्रचार क्रमशः उत्तरी भारत में, विषष्टह उन प्रदेशों में जो कन्नौज साम्राज्यन्तर्गत थे, हो गया, जो आज गाँव- गाँव में सुनाई पड़ते है पर साहित्यिक रूप में नहीं मिलती है। यह आज भी जनता के कंठ में बलखली हुई अब तक चली आ रही है।”

देशभक्ति तथा मातृभूमि के प्रति प्रेम जगाने में आल्हा का विशेष योगदान रहा है। आज भी यह देश को नयी ऊर्जा तथा वाणी देने में समर्थ है। इसी कारण यह प्रासंगिक है। यही इसकी लोकप्रियता का रहस्य है। यह भोजपुरी भाषा में बड़ा ही जीर्ण-शीर्ण रूप में मिला है जिसे साहित्यिक रूक में संग्रह किया है जो निम्न है:-

भोजपुरी लोकगीत

आल्हा

भाग-1

लागल कचहरी जब आल्हा के बँगला बड़ेबड़े बबुआन -
लागल कचहरी उजैनन के बिसैनन के दरबार
नौ सौ नागा नागपूर के नगफेनी बाँध तरवार
बैठल काकन डिल्ली के लोहतमियाँ तीन हजार
मढ़वर तिरौता करमवार है जिन्ह के बैठल कुम्ह चण्डाल
झड़ो उझनिया गुजहनिया है बाबू बैठल गदहियावाल
नाच करावे बँगला में मुरलिधर बेन बजाव
मुरमुर मुरमुर बाजे सरंगी जिन्ह के रुन रुन बाजे सितार
तबला चटके रस बेनन के मुखचंद सितारा लाग
नाचे पतुरिया सिंहल दीप के लौंड़ा नाचे गोआलियरवाल
तोफा नाचे बँगला के बँगला होय परी के नाच
सात मन का कुण्डी दस मन का घुटना लाग
घैला अठारह सबजी बन गैल नौ नौ गोली अफीम
चौदह बत्ती जहरन के आल्हा बत्ती चबावत बाय
पुतली फिर गैल आँखन के अँखिया भैल रकत के धार
चेहरा चमके रजवाड़ा के लड़वैया शेर जवान
अम्बर बेटा है जासर के अपना कटले बीर कटाय
जिन्ह के चलले धरती हीले डपटै गाछ झुराय
ओहि समन्तर रुदल पहुँचल बँगला में पहुँचल जाय
देखल सूरत रुदल के आल्हा मन में करे गुनान
देहिया देखें तोर धूमिल मुहवाँ देखों उदास

भाग-2

कौन सकेला तोर पड़ गैल बाबू कौन ऐसन गाढ़
भेद बताब तूँ जियरा के कैसे बूझे प्रान हमार
हाथ जोड़ के रुदल बोलल भैया सुन धरम के बात
पड़ि सकेला है देहन पर बड़का भाइ बात मनाव
पूरब मारलों पुर पाटन में जे दिन सात खण्ड नेपाल
पच्छिम मारलों बदम जहौर दक्खिन बिरिन पहाड़
चार मुलुकवा खोजि ऐलों कतहीं नव जोड़ी मिले बार कुआँर
कनियाँ जामल नैना गढ़ में राजा इन्दरमन के दरबार
बेटी सयानी सम देवा के बर माँगल बाघ जुझर
बड़ि लालसा है जियरा में जो भैया के करौं
बियाह करों बिअहवा सोनवा से
एतना बोली आल्हा सुन गैल आल्हा मन मन करे गुनान
जोड़ गदोइ अरजी होय गैल बबुआ रुदल कहना मान हमार
जन जा रुदल नैनागढ़ में बबुआ किल्ला तूरे मान के नाहिं
बरिया राजा नैना गढ़ के लोहन में बड़ चण्डाल
बावन दुलहा के बँधले बा साढ़े सात लाख बरियात
समधी बाँधल जब गारत में अगुआ बेड़ी पहिरलन जाय
भाँट बजनियाँ कुल्हि चहला भैल मँड़वा के बीच मँझार
एकहा ढेकहो ढेलफुरवा मुटघिंचवा तीन हजार
मारल जेबव् नैनागढ़ में रुदल कहना मान हमार
केऊ बीन नव्बा जग दुनिया में जे सोनवा से करे बियाह

भाग-3

जन जा रुदल नैना गढ़ में बबुआ कहना मान हमार
प्रतना बोली रुदल सुन गैल रुदल बर के भैल अँगार
हाथ जोड़ के रुदल बोलल भेया सुनी बात हमार
कादर भैया तूँ कदरैलव् तोहरो हरि गैल ग्यान तोहार

धिरिक तोहरा जिनगी के जग में डूब गैल तरवार
जेहि दिन जाइब नैना गढ़ में अम्बा जोर चली तरवार
टूबर देहिया तूँ मत देखव् झिलमिल गात हमार
जेहि दिन जाइब नैना गढ़ में दिन रात चली तरवार
एतना बोली आल्हा सुन गैल आल्हा बड़ मोहित होय जाय
हाथ जोड़ के आल्हा बोलल बाबू सुनव् रुदल बबुआन
केत्त मनौलों बघ रुदल के बाबू कहा नव् मनलव् मोर
लरिका रहल ता बर जोरी माने छेला कहा नव् माने मोर
जे मन माने बघ रुदल से मन मानल करव् बनाय
एतना बोली रुदल सुन गैल रुदल बड़ मंड्गन होय जाय
दे धिरकारीरुदल बोलल भैया सुनीं गरीब नेवाज
डूब ना मूइलव् तूँ बड़ भाइ तोहरा जीअल के धिरकार
बाइ जनमतव् तूँ चतरा घर बबुआ नित उठ कुटतव् चाम
जात हमार रजपूतन के जल में जीबन है दिन चार
चार दिन के जिनगानी फिर अँधारी रात
दैब रुसिहें जिब लिहें आगे का करिहें भगवान
जे किछु लिखज नरायन बिध के लिखल मेंट नाहिं जाय

भाग-4

गज भर धरती घट जैहें प्रक चोट करों दैब से मार
तब तो बेटा जासर के नैं याँ पड़े रुदल बबुआन
चल गैल रुदल ओजनी से गढ़ पिअरी में गैल बनाय
लागल कचहरी है डेबा का जहवाँ रुदल पहुँचे जाय
सोना पलँगरी बिछवाइ सोना के मोंढा देल धरवाय
सात गलैचा के उपर माँ रुदल के देल बैठाय
हाथ जोड़ के रुदल बोलल बाबू डेबा ब्राहमन के बलि जाओं
लागल लड़ाइ नैना गढ़ में डेबा चलीं हमरा साथ
एतना बोली डेबा सुन गैल डेबा बड़ मोहित होई जाय
जोड़ गदोइ डेबा बोलल बाबू सुनीं रुदल बबुआन

जहवाँ पसीना है रुदल के तहवाँ लोधिन गिरे हमार
डेबा डेबा के ललकारे डेबा सुन बात हमार
बाँधल घोड़ा तबल खास में घोड़ा ए दिन लावव् हमरा पास
चल गैल डेबा गढ़ पिअरी से तबल खास में पहुँचल जाय
बावन कोतल के बाँधल है बीच में बाँधल बेनुलिया घोड़
ओहि समंदर डेबा पहुँचल घोड़ा कन पहुँचल जाय
जोइ गदोइ डेबा बोलल घोड़ा सुनव् बात हमार
भैल बोलाहट बघ रुदल के
लागल लड़ाइ नैना गढ़ में घोड़ा चलव् हमरा साथ
एतना बोली घोड़ा सुन गैल घोड़ा के भैल अँगार
बोलल घोड़ा जब डेबा से बाबू डेबा के बलि जाओं

भाग-5

बज् पड़ गैल आल्हा पर ओ पर गिरे गजब के धार
जब से ऐलों इन्द्रासन से तब से बिदत भैल हमार
पिल्लू बियायल बा खूरन में ढालन में झाला लाग
मुरचा लागि गैल तरवारन में जग में डूब गैल तरवार
आल्हा लड़ैया कबहीं नव् देखल जग में जीवन में दिन चार
एतना बोली डेबा सुन गैल डेबा खुसी मंगन होय जाय
खोलै अगाड़ी खोलै पिछाड़ी गरदनियाँ देल खोलाय
जीन जगमियाँ धर खोले सोनन के खोलै लगाम
पीठ ठोंक दे जब घोड़ा के घोड़ा सदा रहव् कलियान
चलल जे राजा डेबा ब्राहमन घुड़ बेनुल चलल बनाय
घड़ी अढ़ाई का अन्तर में रुदल कन पहुँचल जाय
देखल सूरत घुड़ बेनुल के रुदल बड़ मंगन होय जाय
देहिया पोंछे जब घोड़ बेनुल के रुदल हँस के कैल जनाब
हाथ जोड़ के रुदल बोलल घोड़ा सुन ले बात हमार
तब ललकारें रुदल बोलल डेबा मंत्री के बलि जाओ
घोड़ा बेनुलिया तैयारी कर जलदी बोल करव् परमान

घोड़ा पलाने डेबा ब्राहमन रेसम के भिड़े पलान
चोटी गुहावे सोनन से चाँदी खील देल मढ़वाय
पूँछ मढ़ावल हीरा से महराजा सुनीं मोर बात
सात लाख के हैकलवा है घोड़ा के देल पेन्हाय
एतो पोसाक पड़ल घोड़ा के रुदल के सुनी हवाल

भाग-6

बावन गज के धोती बाँधे खरुअन के चढ़ल लँगोट
अस्सी मन के ढलिया है बगल में लेल लगाय
तीस मन के जब नेजा है हाथन में लेल लगाय
बाँक दुआल पड़ल पंजड़ तक तर पल्ला पड़ल तरवार
छप्पन छूरी नौ भाला कम्मर में ढुले बनाय
बूता बनाती गोड़ सोभै जिन्ह का गूँज मोंछ फहराय
बावन असरफी के गल माला हाथन में लेल लगाय
भूजे डण्ड पर तिलक बिराजे परतापी रुदल बीर
फाँद बछेड़ा पर चढ़ गैल घोड़ा पर बैल असवार
घोड़ा बेनुलिया पर बघ रुदल घोड़ा हन्सा पर डेबा बीर
दुइए घोड़ा दुइए राजा नैना गढ़ चलल बनाय
मारल चाबुक है घोड़ा के घोड़ा जिमि नव् डारे पाँव
उड़ गैल घोड़ा सरगे चल गैल घोड़ा चाल बरोबर जाय
रिमझिम रिमझिम घोड़ा नाचे जैसे नाचे जंगल के मोर
रात दिन का चलला माँ नैना बढ़ लेल तकाय
देखि फुलवारी सोनवा के रुदल बड़ मगन होय जाय
डेबा डेबा के गोहरावे डेबा सुनव् बात हमार
डेरा गिरावव् फुलवारी में प्रक निंदिया लेब गँवार
बड़ा दिब्य के फुलवारी है जहवाँ डेरा देल गिराय
घुमि घुमि देखे फुलवारी के रुदल बड़ मंगन होय जाय
देखल अखाड़ा इन्दरमन के रुदल बड़ मंगन होय जाय

भाग-7

कैंड़ा लागल है देहन माँ दुइ डण्ड खेलौं बनाय
बावन गज के धोती बाँधे उलटी चरना लेल लगाय
बावन कोठी के कोठवार देहन में लेल लगाय
पलहथ रोपल अखड़ा में रुदल डण्ड कैल नौ लाख
मूँदल भाँजे मन बाइस के साढ़े सत्तर मन के डील
तीस मन के नेजम है रुदल तूर कैल मैदान
ताल जे मारे फुलवारी में महराजा सुनीं मोर बात
फुलवा झरि गेल फुलवारी के बन में गाछ गिरल भहराय
जल के मछरी बरही होय गैल डाँटें कान बहिर होय जाय
बसहा चढि सिब जी भगले देबी रोए मोती के लोर
कहाँ के राजा एत बरिया है मोर फुलवारी कैल उजार
सुने पैहें रजा इन्दरमन हमरो चमड़ी लिहें खिंचाय
सतौ बहिनियाँ देबी इन्द्रासन सें चलली बनाय
घड़ी अढ़ाइ का अन्तर में पहुँचली जाय
रुदल सूरत फुलवारी में जहवाँ देबी जुमली बनाय
देखल सूरत रुदल के देबी मन मन करे गुनान
बड़ा सूरत के ई लरिका है जिन्ह के नैनन बरै इँजोर
पड़िहें समना इन्दरमन का इन्ह के काट करी मैदान
नींद टूट गैल बघ रुदल के रुदल चितवै चारों ओर
हाथ जोड़ के रुदल बोलल देबी सुनीं बात हमार
बावन छागर के भोग देइ भैंसा पूर पचास

भाग-8

भोग चढ़ाइब अदमी के देबी अरजी मानव् हमार
एतनी बोली देबी सुन गैली देबी जरि के भैली अँगार
तब मुँह देबी बोलली बबुआ सुनीं रुदल महराज

बेर बेर बरजों बघ रुदल के लरिका कहल नव् मनलव् मोर
मरिया राजा नैना गढ़ के नैंनाँ पड़े इन्दरमन बीर
बावन गुरगुज के किल्ला है जिन्ह के तिरपन लाख बजार
बावन थाना नैना गढ़ में जिन्ह के रकबा सरग पताल
बावन दुलहा के सिर मौरी दहवौलक गुरैया घाट
मारल जैबव् बाबू रुदल नाहक जैहें प्रान तोहार
पिण्डा पानी के ना बचबव् हो जैबव् बन्स उजार
एतनी बोली रुदल सुन गैल तरवा से लहरल आग
पकड़ल झोंटा है देबी के धरतो पर देल गिराय
आँखि सनीचर है रुदल के बाबू देखत काल समान
दूचर थप्पर दूचर मुक्का देबी के देल लगाय
लै के दाबल ठेहुना तर देबी राम राम चिचियाय
रोए देबी फुलवारी मैं रुदल जियरा छोड़व् हमार
भेंट कराइब हम सोनवा सें
एतनी बोली रुदल सुन के रुदल बड़ मंगन होय जाय
प्रान छोड़ि देल जब देबी के देबी जीव ले चलल पराय
भागल भागल देबी चल गैल इन्द्रासन में पहुँचल जाय
पाँचों पण्डु इन्द्रासन में जहवाँ देबी गैल बनाय

भाग-9

पड़ल नजरिया है पण्डो के देबी पर पड़ गैलि दिष्ट
रोए पण्डो इन्द्रासन में देबी सुनीं बात हमार
तीन मुलुक के तूँ मालिक देबी काहे रोवव् जार बेजार
तब ललकारे देबी बोली पण्डो सुनीं बात हमार
आइल बेटा जासर के बघ रुदल नाम धराय
सादी माँगे सानवा के वरिअरिया माँगे बियाह
जिब ना बाँचल मोर देबी के पण्डो जान बचाई मोर
एतनी बोली पण्डो सुन गैल पण्डो रोए मोती के लोर
थरथर काँपें कुल्हि पण्डो देबी सुनीं बात हमार -

बरिया राजा बघ रुदल लोहन में बड़ चण्डाल
भार्गल देबी इंद्रासन सें अब ना छूटल प्रान हमार
भागल देबी इन्द्रासन सें नैना गढ़ में गैल बनाय
बावन केवाड़ा का अण्डल में जेह में सोनवा सूति बनाय
लग चरपाइ चानिन के सोनन के पटरी लाग
चारों लौंड़ी चारों बगल में बीचे सानवा सूति बनाय
पान खवसिया पान लगावे केऊ हाथ जोड़ भैल ठाढ़
केऊ तो लौंड़ी जुड़वा खोले केऊ पानी लेहले बाय
ओहि समन्तर देबी पहुँचल सोनवा कन पहुँचल बाय
लै सपनावे रानी के सोनवा सुनीं बात हमार
आइल राजा बघ रुदल फुलवारी में डेरा गिरौले बाय
माँगै बिअहवा जब सोनवा के बरिअरिया माँगैं बियाह

भाग-10

जिब ना बाँचल मोर देवी के सोनवा जान बचाई मोर
नाम रुदल के सुन के सोनवा बड़ मगन होय जाय
लौंड़ी लोंड़ी के ललकारे मुँगिया लौंड़ी बात मनाव
रात सपनवाँ में सिब बाबा के सिब पूजन चलि बनाय
जौन झँपोला मोर गहना के कपड़ा के लावव् उठाय
जौन झँपोला है गहना के कपड़ा के ले आवव् उठाय
खुलल पेठारा कपड़ा के जिन्ह के रास देल लगवाय
पेनहल घँघरा पच्छिम के मखमल के गोट चढ़ाय
चोलिया पेन्हे मुसरुफ के जेह में बावन बंद लगाय
पोरे पोरे अँगुठी पड़ गैल सारे चुरियन के झंझकार
सोभे नगीना कनगुरिया में जिन्ह के हीरा चमके दाँत
सात लाख के मँगटीका है लिलार में लेली लगाय
जूड़ा खुल गैल पीठन पर जैसे लोटे करियवा नाग
काढ़ दरपनी मुँह देखे सोनवा मने मने करे गुनान
मन जा भैया रजा इन्दरमन घरे बहिनी रखे कुँआर

वैस हमार बित गैले नैनागढ़ में रहलीं बार कुँआर
आग लगाइब एह सूरत में नेना सैव लीं नार कुँआर
निकलल डोलवा है सोनवा के सिब का पूजन चलली बनाय
पड़लि नजरिया इंदरमन के से दिन सुनों तिलंगी बात
कहवाँ के राजा एत बरिया है बाबू डोला फँदौले जाय
सिर काट दे ओह राजा के कूर खेत माँ देओ गिराय

भाग-11

लड़गे तेगा लेल इंदरमन बाबू कूदल बवन्तर हाथ
पड़लि नजरिया है सोनवा के जिन्ह के अंत कोह जरि जाय
नाता नव् राखब एह भैया के
जेतना जे गहना बा देहन के डोला में देल धराय
बावन बज के धोती बाँधे सोनवा कूद गैल ब्यालिस हाथ
पड़लं लड़ाइ बहिनी भैया बाबू पड़ल कचौंधी मार
तड़तड़ तड़तड़ तेगा बोले जिन्ह के खटर खटर तरवार
सनसन सनसन गोली उड़ गैल जिन्ह जिमी नव् डाले पाँव
सात दिन जब लड़ते बीतल बीत गैल सतासी रात
सात हाथ जब धरती गहिरा पड़ गैल जबहुँ नव् सोनवा हटे बनाय
घैंचल तेगा रजा इंदरमन जे दिन लेल अली के नाम
जौं तक मारे ओह सोनवा के जूड़ा पर लेल बचाय
दोसर तेगा हन मारे कँगना पर लेल बचार
तेसर तेगा के मारत में सोनवा आँचर पर लेल बचाय
कूदल बहुरिया ओजनी से कूदल बवन्तर हाथ
पकड़ल पहुँचा इंदरमन के धरती में देल गिराय
लै के दाबल ठेहुना तर राजा राम राम चिचियाय
पड़ल नजरिया समदेवा के समदेव रोवे जाय बेजार
हाय हाय के समदेव धर बेटी सोनवा बात मनाव
पहले काट पिता का पाछे काट भैया के सिर
एतनी बोली सोनवा सुन गैल रानी बड़ मोहित हाय जाय

भाग-12

जान छोड़ देल इंदरमन के जब सोनवा देल जवाब
केतना मनौलीं ए भैया के भैया कहा नव् मनलव् मोर
रात सपनवाँ सिब वाबा के
एतनी बोली सुनल इंदरमन राजा के के भैल अँगार
सोत खनाबों गंगा जी के सिब के चकर देब मँगवाय
फूल मँगाइब फुलवारी से घरहीं पूजा करु बनाय
तिरिया चरित्तर केऊ ना जाने बात देल दोहराय
करे हिनाइ बघ रुदल के
ऊ तो निकसुआ है सोंढ़ही के राजा झगरु देल निकाल
सेरहा चाकर पर मालिक के से सोनवा से कैसे करै बियाह
पाँचो भौजी है सोनवा के संगन में देल लगाय
मुँगिया लौंड़ी के ललकारे लौंड़ी कहना मान हमार
जैसन देखिहव् सिब मंदिर में तुरिते खबर दिहव् भेजवाय
मूरत देखे सिब बाबा के सोनवा मन मन करे गुनान
लौंड़ी लौंड़ी के ललकारे मुँगिया लौंड़ी के बलि जाओं
फूल ओराइल मोर डाली के फुलवारी में फूल ले आ वह जाय
एतनी बोली लौंड़ी सुन के लौंड़ी बड़ मंगन होय जाय
सोनक चंपा ले हाथन माँ फुलवारी में जेमल बनाय
बैठल राजा डेबा ब्राहमन जहवाँ लौंड़ी गेल बनाय
कड़खा बोली लौंड़ी बोलल बाबू सुनीं रजा मोर बात
कहाँ के राजा चलि आइल फुलवारी में डेरा देल गिराय

भाग-13

कौड़ी लागे फुलवारी के मोर कोड़ी दे चुकाय
तब ललकारे डेबा बोलल मुँगिया लौंड़ी के बलि जाओं
हम तो राजा लोहगाँ के दुनियाँ सिंघ नाम हमार
नेंवता ऐली समदेवा के उन्ह के नेंतवा पुरावन आय

एतनी बोली जब सुन गैले लौंड़ी के भैल अँगार
करे हिनाइ बघ रुदल के
सेरहा चाकर पर मालिक के रुदल रोटी बिरानी खाय
कत बड़ सोखी बघ रुदल के जे सोनवा से करे खाय बियाह
जरल करेजा है बघ रुदल के तरवा से बरे अँगार
लौंड़ी हो के अतर दे अब का सोखी रहा हमार
छड़पल राजा है बघ रुदल लौंड़ी कन पहुँचल जाय
पकड़ल पहुँचा लौंड़ी के धरती में देल गिराय
अँचरा फाड़े जब लौंड़ी के जिन्ह के बंद तोड़े अनमोल
हुरमत लूटे ओहि लौंड़ी के लौंड़ी रामराम चिचियाय
भागल लौंड़ी हैं सोनवा के फुलवारी से गैल पराय
बठली सोनवा सिब मंदिर में जहवाँ लौंड़ी गैल बनाय
बोले सोनवा लौंड़ी से लौंड़ी के बलि जाओं
केह से मिलल अब तूँ रहलू एतना देरी कैलू बनाय
तब ललकारे लौंड़ी बोलल रानी सोनवा के बलि जाओ
देवर आइल तोर बघ रुदल फुलवारी में जुमल बनाय
जिव ना बाँचल लौंड़ी के सोनवा,जान बचावव् हमार

भाग-14

नाम रुदल के सुन गैले सोनवा बड़ मंड्गन होय जाय
जे बर हिछलीं सिब मंदिर में से बर माँगन भेल हमार
एतो बारता है सोनवा के रुदल के सुनीं हवाल
घोड़ा बेनुलिया पर बघ रुदल घोड़ा हन्सा पर डेबा बीर
घोड़ा उड़ावल बघ रुदल सिब मंदिर में पहुँचल जाय
घोड़ा बाँध दे सिब फाटक में रुदल सिब मंदिर में गैल समाय
पड़लि नजरिया है सोनवा के रुदल पड़ गैल दीठ
भागल सोनवा अण्डल खिरकी पर पहुँचल जाय
सोने पलंगिया बिछवौली सोने के मढ़वा देल बिछवाय
सात गलैचा के उपर रुदल के देल बैठाय

हाथ जोड़ के सोनवा बोलल बबुआ रुदल के बलि जाओ
कहवाँ बेटी ऐसन जामल जेकरा पर बँधलव् फाँड़
बोले राजा बघ रुदल भौजी सोनवा के बलि जाओं
बारह वरिसवा बित गैल भैया रह गैल बार कुँआर
किला तूड़ दों नैना गढ़ के सोनवा के करों बियाह
एतनी बोली रानी सोनवा सुन गैल सोनवा बड़ मंड्गन होय जाय
भुखल सिपाही मोर देवर है इन्ह के भोजन देब बनाय
दूध मँगौली गैया के खोआ खाँड़ देल बनवाय
जेंइ लव् जेंइ लव् बाबू रुदल एहि जीबन के आस
कड़खा बोली रुदल बोलल भौजी सोनवा अरजी मान हमार
किरिया खैलीं मोहबा गढ़ में अब ना अन गराहों पान

भाग-15

पानी पीयो मद पीयों भौजी अन गौ के माँस
तब ललकार सोनवा बोलल मुँगिया लौंड़ी के बलि जाओं
फगुआ खेलावह मोर देवर के इन्ह के फगुआ देह खेलाय
घौरै अबिरवा सिब मंदिर में
केऊ तो मारे हुतका से केऊ रुदल के मैसे गाल
भरल धैलवा है काँदो के देहन पर देल गिराय
धोती भीं जल लरमी के पटुका भींजल बदामी वाल
मोंती चूर के डुपटा है कीचर में गैल लोटाय
बोले राजा बघ रुदल बाबू डेबा सुनी बात हमार
रण्डी के चाकर हम ना लागीं तिरिया में रहों लुभाय
भैं तो चाकर लोहा के सीता राम करे सो होय
बीड़ा मँगावल पनवाँ के भर भर सीसा देल पिलाय
पढि पढि मारे लौंड़ी के टिकुली टूक टूक उड़ जाय
भागल लौंड़ी है सोनवा के लौंड़ी जीव ले गैल पराय
लागल कचहरी इंदरमन के बँगला बड़ेबड़े बबुआन -
ओहि समन्तर लौंड़ी पहुँचल इंदरमन अरजी मान हमार

आइल रजा है बघ रुदल के डोला घिरावल बाय
माँग बिअहवा सोनवा के बरियारी से माँगै बियाह
है किछू बूता जाँघन में सोनवा के लावव् छोड़ाव
मन मन झड़खे रजा इंदरमन बाबू मन मन करे गुनान
बेर बेर बरजों सोनवा के बहिनी कहल नव् मानल मोर

भाग-16

पड़ गैल बीड़ा जाजिम पर बीड़ा पड़ल नौ लाख
हे केऊ रजा लड़वैया रुदल पर बीड़ा खाय
चौहड़ काँपे लड़वेया के जिन्ह के हिले बतीसो दाँत
केकर जियरा है भारी रुदल से जान दियावे जाय
बीड़ा उठावल जब लहरा सिंड्घ कल्ला तर देल दबाय
मारु डंका बजवावे लकड़ी बोले जुझाम जुझाम
एको एका दल बटुरल जिन्ह के दल बावन नवे हजार
बूढ़ बियाउर के गनती नाहिं जब हाथ के गनती नाहिं
बावन मकुना के खोलवाइन रजा सोरह सै दन्तार
नब्वे सै हाथी के दल में ड़ड़ उपरे नाग डम्बर उपरे मेंड़राय
चलल परवतिया परबत के लाकट बाँध चले तरवार
चलल बँगाली बंगाला के लोहन में बड़ चण्डाल
चलल मरहट्टा दखिन के पक्का नौ नौ मन के गोला खाय
नौ सौ तोप चलल सरकारी मँगनी जोते तेरह हजार
बावन गाड़ी पथरी लादल तिरपन गाड़ी बरुद
बत्तिस गाड़ी सीसा जद गैल जिन्ह के लंगे लदल तरवार
एक रुदेला एक डेबा पर नब्बे लाख असवार
बावन कोस के गिरदा में सगरे डिगरी देल पिवाय
सौ सौ रुपया के दरमाहा हम से अबहीं लव् चुकाय
लड़े के बोरिया भागे नौ नौ मन के बेड़ी देओं भरवाय
बोगुल फूँकल पलटन में बीगुल बाजा देल बजाय

भाग-17

निकलल पलटन लहरा के बाबू मेघ झरा झर लाग
झाड़ बरुदन के लड़वैया साढ़े साठ लाख असवार
चलल जे पलटन है लहरा के सिब मंदिर के लेल तकाय
बावन दुआरी के सिब मंदिर बावनों पर तोप देल धरवाय
रुदल रुदल घिराइल सिव मंदिर माँ
जरल करेजा है रुदल के घोड़ा पर फाँद भेल असवार
ताल जो मारे सिब मंदिर में बावनों मंदिर बिरल भहराय
बोलल राजा लहरा सिंह रुदल कहना मानव् हमार
डेरा फेर दव् अब एजनी से तोहर महाकाल कट जाय
नाहिं मानल बघ रुदल बाबू सूनीं धरम के बात
बातन बातन में झगड़ा भैल बातन बढ़ल राड़
बातक झगड़ा अब के मेटे झड़ चले लागत तरवार
तड़तड़ तड़तड़ लेगा बोले जिन्ह के खटर खटर तरवार
सनसन सनसन गोली उड़ गैल दुइ दल कान दिलह नाहिं जाय
झाड़ बरुदन के लड़वैया सै साठ गिरल असवार
जैसे बढ़इ बन के कतरे तैसे कूदि काटत बाय
आधा गंगा जल बहि गैल आधा बहल रकत के धार
ऐदल ऊपर पैदल गिर गैल असवार ऊपर असवार
ढलिया बहि बहि कछुआ होय गैल तरुअरिया भैल धरियार
छूरि कटारी सिंधरी होय गैल धै धै तिलंगा खाय
नब्बे हजारन के पलटन में दसे तिलंगा बाँचल बाय

भाग-18

किरिया धरावल जब लहरा सिंह रुदल जियरा छाड़व् हमार
नैंयाँ लेब बघ रुदल के
एतनी बोली बघ रुदल सुन गैल रुदल बड़ मंड्गन होय जाय
फिर के चलि भेल बघ रुदल लहरा दोसर कैल सरेख

खैंचल तेगा जब लहरा सिंह बाबू लिहल अली के नाम
जौं तक मारल बघ रुदल के देबी झट के लिहल बचाय
बरल करेजा बघ रुदल के रुदल कूदल बवन्तर हाथ
जौं तक मारल लहरा के भुँइयाँ लोथ फहराय
भागल फौदिया जब लहरा के जब नैना गढ़ गैल पराय
लागल कचहरी इंदरमन के जहाँ तिलंगा पहुँचल जाय
बोलै तिलंगा लहरा वाला राजा इंदरमन जान बचाई मोर
एतनी बोली सुनल इंदरमन बाबू मन में करे गुनान
पड़ गलै बीड़ा इंदरमन के राजा इंदरमन बीड़ा लेल उठाय
हाथी मँगावल भौंरानंद जिन्ह के नौं मन भाँग पिलाय
दसे तिलंगा ले साथन में सिब मंदिर पहुँचल जाय
घड़ी पलकवा का चलला में सिब मंदिर पहुँचल जाय
बाँधल घोड़ा रुदल के पलटन पर पड़ गैल दीठ
घीचै दोहाइ जब देबी के देबी प्रान बचावव् मोर
आइल देबी जंगल के बनस्पती देबी पहुँचल आय
घोड़ा खोल देल बघ रुदल के घोड़ा उड़ के लागल अकास
रुदल सूतल सिब मंदिर में जहवाँ घोड़ा पहुँचल बाय

भाग-19

मारे टापन के रोनन से रुदल के देल उठाय
बोलल घोड़ा रुदल के बाबू पलटन इंदरमन के पहुँचल आय
फाँद बछेड़ा पर चढि गैल पलअन में पहुँचल बाय
बलो कुबेला अब ना चीन्हे जाते जोड़ देल तरवार
पड़ल लड़ाइ इंदरमन में रुदल से पड़ गैल मार
ऐसी लड़ाई सिब मंदिर में अब ना चीन्हे आपन पराय
गनगन गनगन चकर बान बोले जिन्हके बलबल बोले ऊँट
सनसन सनसन गोली बरसे दुइ दल कान दिहल नाहिं जाय
दसो तिरंगा इंदरमन के रुदल काट कैल मैदान
गोस्सा जोर भैल इंदरमन खींच लेल तरवार

जौं तक मारल बघ रुदल के अस्सी मन के ढालन पर लेल बचाय
ढलिया कट के बघ रुदल के गद्दी रहल मरद के पास
बाँह टूट गैल रुदल के बाबू टूटल पं के हाड़
नाल टूट गैल घोड़ा के गिरल बहादूर घोड़ा से
धरती पर गिरल राम राम चिचियाय
पड़ल नजरिया है देवी रुदल पर पड़ गैल दीठ
आइल देवी इंद्रासन के रुदल कन पहुँचल बाय
इमिरित फाहा दे रुदल के घट में गैल समाय
तारु चाटे रुदल के रुदल उठे चिहाय चिहाय
प्रान बचावे देबी बघ रुदल के रुदल जीव ले गैल पराय
भागल भागल चल गैले मोहबा में गैल पराय

भाग-20

एत्तो बारता बा रुदल के आल्हा के सुनीं हवाल
केत्ता मनौलीं बघ रुदल के लरिका कहल नव् मानल मोर
बावन कोस के गिरदा में बघ रुदल डिगरी देल पिटवाय
लिखल पाँती बघ रुदल तिलरी में देल पठाय
तेली बनियाँ चलल तिलरी के लोहन में आफत काल
पाँती भेजवो नरबर गढ़ राजा मेदनी सिंह के दरबार
चलल जे राजा बा मेदनी सिंह मोहबा में पहुँचल जाय
आइल राजा मकरन्ना गढ़ मोरंग के राज पहुँचल वाय
चलल जे राजा बा सिलहट के भूँमन सिंह नाम धराय
आइ राजा डिल्ली के सुरजन सिंह
बुढ़वा सैयद बन्नारस के नौं नौ पूत अठारह नात
ओनेहल बादल के थमवैया लोहन में बड़ चण्डाल
मियाँ मेहदी है काबुल के हाथ पर खाना खाय
उड़ उड़ लड़िहें सरगे में जिन्ह के लोथ परी जै खाय
चलल जे राजा बा लाखन सिंह लाखन लाख घोड़े असवार
नौ मन लोहा नौमनिया के सवा सौ मन के सान

उन्ह के मुरचा अब का बरनौ सौ बीरान में सरदार
आइल राजा बा सिलहट के भूँमन सिंह नाम धराय
जेत्ता जे राजा बा लड़वैया रुदल तुरत लेल बोलाय
जेत्ता जे बा लड़वैया जिन्ह के सवा लाख असवार
एत्तो बारता बा राजा के रुदल के सुनीं हवाल

भाग-21

बीड़ा पड़ गैल बघ रुदल के रुदल बीड़ा लेल उठाय
मारु डंका बजवावे लकड़ी बोले कड़ाम कड़ाम
जलदी आल्हा के बोलवावल भाइ चलव् हमरा साथ
करों बिअहवा सोनवा के दिन रात चले तलवार
गड्गन धोबी दुरगौली के बावन गदहा ढुले दुआर
मुड्गर लाद देल गदहा पर लड़वयौ आफत काल
दानी कोइरी बबुरी बन के सिहिंन लाख घोड़े असवार
चलल जे पलटन बघ रुदल के जिन्ह के तीन लाख असवार
रातिक दिनवाँ का चलला में धावा पर पहुँचल बाय
डेरा गिरावे दुरगौली में डेरा गिरौले बाय
जोड़ गदोइ रुदल बोलल भैया सुनीं आल्हा के देल बैठाय
नौ सौ सिपाही के पहरा बा आल्हा के देल बैठाय
रुदल चल गैल इंद्रासन में अम्बर सेंदुर किन के गैल बनाय
एत्तो बारता बा रुदल के नैना गढ़ के सुनीं हवाल
भँटवा चुँगला बा नैना के राजा इंदरमन के गैल दरबार
रुदल के भाइ अल्हगं है दुरगौली में डेरा गिरौले बाय
तीन लाख पलटन साथन में बा आल्हा के तैयारी बाय
हाथ जोड़ के भँटना बोलल बाबू इंदरमन के बलि जाओं
हुकुम जे पाऊँ इंदरमन के आल्हा के लेतीं बोलाय
एतनी बोली सुनल इंदरमन राजा बड़ मड्गन होय जाय
जेह दिन लैबव् आल्हा के तेह दिन आधा राज नैना के देब बटवाय

भाग-22

चलल जे भँटवा बा नैना गढ़ से दुरगौली में पहुँचल बाय
हाथ जोड़ के भँटवा बोलल बाबू आल्हा सुनीं महराज
तेगा नव् चलिहें नैना गढ़ में धरम दुआरे होई बियाह
हाथ जोड़ के आल्हा बोलल भँअवा सुनव् धरम के बान
हम नव् जाइब नैना गढ़ में बिदत होई हमार
किरिया धरावे भँटवा है बाबू सुनीं आल्हा बबूआन
जे छल करिहें राजा से जिन्ह के खोज मंगा जी खाय
चलल पलकिया जब आल्हा के नैनागढ़ चलल बनाय
घड़ी अढ़ाई के अंतर में नैनागढ़ पहुँचल जाय
नौ से कहंरा साथे चल गैल नैना गढ़ पहुँचल जाय
जवना किल्ला में बैठल इंदरमन तहवां आल्हा गैल बनाय
छरपल राजा इंदरमन आल्हा कन गैल बनाय
पकड़ल पहुँचा आल्हा के धरती में देल गिराय
बावन पाँती मुसुक चढ़ावे आखा में देल कसाय
लै चढ़ावल बजड़ा पर बात भैया छोटक के बलि जाओं
लै डुबावव् आल्हा के गंगा दव् डुबाय
सवा लाख पलटन तैयारी होय गेल छोटक के गंगा तीर पहुँचल बाय
लै डुबावत बा गंगा में आल्हा के डुबावत बाय
अम्बर बैटा जासर के आल्हा नव् डूबे बनाय
रुदल आइल इंद्रासन से डेरा पर पहुँचल बाय
रोय कहँरिया दुरगौली में बाबू रुदल बात बनाव

भाग-23

लै डुबावत बा आल्हा के गंगा में डुबावत बाय
फाँद बछेड़ा पर चढ़ गल गंगा तीर पहुँचल बाय
पड़ल लड़ाई है छोटक से
तड़तड़ तड़तड़ तेगा बोला उन्ह के खटर खटर तरवार

जै से छेरियन में हुँड्डा पर वैसे पलटन में पड़ल रुदल बबुआन
जिन्ह के टॅगरीचूरचूर हाये जाय .धै के बीगे से त -
मस्तक भरे हाथी के जिन्ह के डोंगा चलल बहाय
थापड़ भोर ऊँटन के चारु सुँग चित्त होय जाय
सवा लाख पलटन कर गल छोटक के
जौं तक मारे छोटक के सिरवा दुइ खण्ड होय जाय
भागल तिलंगा छोटक के राजा इंदरमन के दरबार
कठिन लड़ंका बा कघ रुदल सभ के काट केल मैदान
एत्ता बारता इंदरमन के रुदल के सुनौं हवाल
लैं उतारल बजड़ा से धरती में देल धराय
आखा खोल के रुदल देखे छाती मारे ब के हाथ
लै चढ़ावल पलकी पर दुरगौली में गैल बनाय
एत्तो बारता बा आल्हा के इंदरमन के सुनीं हवाल
बीड़ा पड़ गैल इंदरमन के राजा इंदरमन बीड़ा लेल उठाय
मारु बाजा बजवावे बाजा बोले जुझाम जुझाम
एकी एका दल बटुरे दल बावन नब्बे हजार
बावन मकुना खोलवाइन एकदंता तीन हजार

भाग-24

नौ सौ तोप चले सरकारी मँगनी जोते तीन हजार
बरह फैर के तोप मँगाइन गोला से देल भराय
आठ फैर के तोप मँगाइन छूरी से देल भराय
किरिया पड़ि गैल रजवाड़न में बाबू जीअल के धिरकार
उन्ह के काट करों खरिहान
चलल जे पलटन इंदरमन के सिब मंदिर पर पहुँचल जाय
तोप सलामी दगवावल मारु डंका देल बजवाय
खबर पहुँचल बा रुदल कन भैया आल्हा सुनीं मोर बात
करव् तैयार पलटन के सिब मंदिर पर चलीं बनाय
निकलल पलटन रुदल के सिब मंदिर पर पहुँचल बाय

बोलल राजा इंदरमन बाबू रुदल सुनीं मोर बात
डेरा फेर दव् एजनी से तोहर महा काल कट जाय
तब ललकारे रुदल बोलल रजा इंदरमन के बलि जाओं
कर दव् बिअहवा सोनवा के काहे बढ़ैबव् राड़
पड़ल लड़ाइ है पलटन में झर चले लागल तरवार
ऐदल ऊपर पैदल गिर गैल असवार ऊपर असवार
भुँइयाँ पैदल के नव् मारे नाहिं घोड़ा असवार
जेत्ती महावत हाथी पर सभ के सिर देल दुखराय
छवे महीना लड़ते बीतल अब ना हठे इंदरमन बीर
चलल ले राजा बघ रुदल सोनवा कन गैल बनाय
मुदई बहिनी मोर पहुँच वाय

भाग-25

घैचल तेगा राजा इंदरमन सोनवा पर देल चलाय
जौं तक मारल इंदरमन के सिरवा दुइ खण्ड होय जाय
लोधिन गिरे इंदरमन के सोनवा जीव जे गैल पराय
तब ललकारे रुदल बोलल भैया सुनीं हमार एक बात
पलटन चल गैल बघ रुदल के गंगा तीर पहुँचल बाय
डुबकी मारे गंगा में जेह दिन गंगा तीर पहुँचल बाय
डुबकी मारे गंगा में जेह दिन गंगा करे असनान
चलल जे पलटन फिर ओजनी से नेना गढ़ पहुँचल बाय
हाथ जोड़ के रुदल बोलल बाबू समदेवा के बलि जाओं
कर दव् बिअहवा सोनवा के काहे बड़ैबव् राड़
एतनी बोली समदेवा सुन के राजा बड़ मंगन होय जाय
तूँ सोनवा के कर जव् बिअहवा काहे बैढ़बव् राड़
एतनी बोली रुदल सुन के बड़ मंगन होय जाय
सुनीं बारता समदेवा के
काँचे महुअवा कटवावे छवे हरिअरी बाँस
तेगा के माँड़ो छँवौले बा

नौ सै पण्डित के बोलावाल मँड़वा में देल बैठाय
सोना के कलसा बैठौले बा मँड़वा में
पीठ काठ के पीढ़ा बनावे मँडवा के बीच मझार
जाँघ काट के हरिस बनावे मँड़वा के बीच मझार
मूँड़ी काट के दिया बरावे मँड़वा के बीच मझार

भाग-26

पलटन चल गैल रुदल के मँडवा में गैल समाय
बैठल दादा है सोनवा के मँड़वा में बैठल बाय
बूढ़ा मदन सिंह नाम धराय
प्रक बेर गरजे मँडवा में जिन्ह के दलके दसो दुआर
बोलल राजा बूढ़ा मदन सिंह सारे रुदल सुनव् बात हमार
कत बड़ सेखी है बघ रुदल के मोर नतनी से करै बियाह
पड़ल लड़ाइ है मँड़वा में जहवाँ पड़ल कचौंधी मार
नौ मन बुकवा उड़ मँड़वा में जहवाँ पड़ल चैलिअन मार
ईटाँ बरसत बा मँड़वा में रुदल मन में करे गुनान
आधा पलटन कट गैल बघ रुदल के सोना के कलसा बूड़ल माँड़ों में
धींचे दोहाइ जब देबी के देबी माँता लागू सहाय
घैंचल तेगा है बघ रुदल बूढ़ा मदन सिंह के मारल बनाय
सिरवा कट गैल बूढ़ा मदन सिंह के
हाथ जोड़ के समदेवा बोलल बबुआ रुदल के बलि जाओं
कर लव् बिअहवा तूँ सोनवा के नौ सै पण्डित लेल बोलाय
अधी रात के अम्मल में दुलहा के लेल बोलाय
लै बैठावल जब सोनवा के आल्हा के करै बियाह
कैल बिअहवा ओह सोनवा के बरिअरिया सादी कैल बनाय
नौ सै कैदी बाँधल ओहि माँड़ों में सभ के बेड़ी देल कटवाय
जुग जुग जीअ बाबू रुदल तोहर अमर बजे तरवार
डोला निकालल जब सोनवा के मोहबा के लेल तकाय
रातिक दिनवाँ का चलला में मोहबा में पहुँचल जाथ।

अध्याय- 5

मैथिली लोकगीत

मैथिली लोक-साहित्य में मिथिला का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन ओतप्रोत है। उसमें मिथिला के लोक जीवन के सुख-दुःख के भावोद्गार हैं। गीत, कवि, कथागीत, कथा, कहावत, मुहावरा, पहेली आदि उसके विविध अंग हैं। मैथिली लोकगीत उनमें से सर्व प्रमुख अंग अथवा तंत्र है।

मिथिलवासियों के जीवन के उच्चतम आदर्श ही मैथिली संस्कृति की मूल प्रेरणा हैं। मिथिला की सामाजिक गतिविधि पर जलवायु, भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक परम्पराओं का प्रभाव पड़ता है। उसके जन जीवन के राग-द्वेषों को परिष्कृत एवक परिमार्जित करने में लोकगीतों का सक्रिय सहयोग युग-युगों से प्राप्त होता है। जीवन के मुख्य पाँच आदर्श हैं- (1) धार्मिक; (2) सामाजिक; (3) पारिवारिक; (4) राजनैतिक; एवं (5) रहन-सहन। इंका जीवन पर गहरा प्रभाव है।

मिथिला के जन जीवन के हास्य और रूदन में लोकगीत मिलते है, उनके नाना प्रकार हैं। सर्वप्रथम सर जार्ज ग्रियसेन ने मैथिली लोकगीओन का संकलन-सम्पादन किया था और उन्होने उनकी विशेषताओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया था। तत्पश्चात श्री राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने मैथिली लोकगीतों का संकलन करने की कोशिश की, परंतु मैथिली लोकगीत इतने जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है कि उसका पूर्ण संकलन असंभव सा है। हमें इस क्रम में जो भी लोकगीत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिला उसे संकलित करने का यथा प्रयश किया।

मैथिली लोकगीत बिहार प्रांत के चंपारन, दरभंगा, पूर्वी मुंगेर, भागलपुर, पश्चिमी पूर्णिया और मुजफ्फरपुर के पूर्वी भाग के ग्रामीणों द्वारा गाए जाते हैं। सोहर, जनेऊ के गीत, संमरि लग्न, गीत, नचारी, समदाउनि, झूमर तिरहुति, बरगमनी, फाग, चैतावर, मलार, मधु श्रावणी, छठ के गीत, स्यामाचकेवा, जट जटिन और बारहमासा यहाँ के मुख्य लोकगीत हैं।

छठ के गीत के उपलक्ष्य में गाए जाते हैं। (कार्तिक शुक्ल षष्ठी) सूर्यषष्ठी व्रत - धार्मिक गीत हैं :कहीं कहीं चैत्र शुक्ल षष्ठी को भी यह व्रत पड़ता है। छठ के गीत पूर्णत ग्य तथा पतिप्रेम के दायक है।और सौभा इसे स्त्रियाँ गाती हैं।

छठ गीत

गीत-1

कांचहि बांस केर गहबर
आहे सोबरन लागल केबाड़
ताही मे सँ निकलय सुरुजमनि
आहे कोने दाइ उखम डोलाउ
अरघक बेर भेल हे
भिनसरक पहरमे डोमिन बेटी हे
बेटी घनी दउरिया लऽ आउ
अरधक बेर भेल हे
बेटी पियरे कनसुपती लय आउ
पुरुब रंथी ठाढ़ भेल हे
भिनसरक पहरमे बनिआइन बेटी हे
बेटी धनी सुपारी लय आउ
अरघक बेर भेल हे
भिनसरक पहरमे तोहें मालिन बेटी हे
बेटी धनी सतरंगा फुलहार लय आउ-
अरधक बेर भेल हे
भिनसरक पहरमे तोहें ब्राह्मण देव हे
ब्राह्मण पियरे रंग जनउआ लय आउ
अरधक बेर भेल हे

गीत-2

हमरो पर होइऔ सहाय, हे छठि मइया
हमरो पर होइऔ सहाय
चारि पहर राति जलथल सेबलौं-
सेबलौं छठि गोरथारि, हे छठि मइया
हमरो पर होइऔ सहाय
अपना लय मंगलौ अनधन लछमी-
जुगजुग मांगल अहिबात-, हे छठि मइया
हमरो पर होइऔ सहाय
घोड़ा चढ़य लेल बेटा एक मंगलौं
मांगल घरसच पुतोहु-, हे छठि मइया
हमरो पर होइऔ सहाय
बयन बिलहै लेल बेटी एक मांगल
मांगल पंडत जमाय, हे छठि मइया
हमरो पर होइऔ सहाय

गीत-3

हमरो के पार लगैया, परमेसरी मइया
आबऽ हो दीना नाथ भैया,
हमरो के पार लगैया
कथी के दियरा मइया, कथी सुतबाती-
कओने छै लेसबैया, परमेसरी मइया
सोना के दियरा मइया, पाटसुत बाती हे-
अबला नारी लेसबैया, परमेसरी मइया
कथी के नइया मइया, कथी करुआरि हे
किनकर भार लदबैया, परमेसरी मइया
सोना के नइया मइया, रूपा करुआरि हे
नारियलकेरा लदबइया-, परमेसरी मइया

लियौलियौ अर्घ मइया-, होइऔ सहैया
सब दिन पार लगैया, परमेसरी मइया

गीत-4

अपने तऽ जाइ छऽ हो भैया, देश रे बिदेशबा
हमरो लय लबिहऽ भैया गहुमा सनेसबा
आबि गेलै हो भैया, छठि सनर बरतिया
गहुम तऽ छै गे बहिन, बड़ रे महगबा
छोड़ि दहिन गे बहिन, छठि सन बरतिया
दीनानाथ देलखिन हो भैया, भाइ रे भतिजबा
हम कोना छोड़बै हो भैया, छठि सन बरतिया
ससुरा मे देलखिन हो भैया, सासुससुरबा-
आरो जे देलखिन हो भैया, सीथ भरि सिनुरबा
हँसैत कनैत रहै कोखि के बलकबा
हम कोना छोड़बै हो भैया, छठि सन बरतिया
करबै करबै हो भैया, छठि सन बरतिया
अपने तऽ जाइ छऽ भैया, देश रे बिदेशबा
हमरा लय लबिहऽ भैया, केरा सनेसबा ...
नेने अबिहऽ हो भैया, नारिकेर सनेसबा
नारिकेर तऽ छौ गे बहिन, बड़ रे महगबा
छोड़ि दहिन गे बहिन, छठि सन बरतिया
बेचि देबै हो भैया, हाथ के कंगनमा
खरीद लेबै हो भैया, केरानारिकेरबा-
कैये लेबै हो भैया, छठि सन बरतिया

गीत-5

अंगना में पोखरि खुनायल
छठि मइया अयतन आइ
दुअरा पर तमुआ तनायल
छठि मइया अयतन आइ
अँचरा सऽ गलिया बहारब
छठि मइया अयतन आइ
केरबा के आनब डाला भरि
तै पर पियरी ओढ़ायब
छठि मइया अयतन आइ
हथिया पर कलशा बैसायब
तै पर दीया जगमगाय
छठि मइया अयतन आइ।

पराती लोकगीत

गीत-1

सून भवन भेल भोर
श्याम बिनु सून भवन भेल मोर
आब के आओत दौड़ि, ककरा लपकि झपटि लेब कोर
आब के बजाओत मधुर मुरलिया, ककर चूमब दुनू ठोर
आब के खायत घरसँ लूटि रस, दूध-दही-धृत-घोर
आब ककरा हम लाल-लालकऽ बजायब, करबमे ककरा सोर
आब के बूलत सगर वृन्दावन, के कहाओत चितचोर
कहथि कविपति सूनु माता यशोमति, आब सुख होयत तोर
कंस पछाड़ि पलटि घर आओत, श्यामल मुख चन्द्र चकोर

गीत-2

प्राणसँ प्रिय राम, हमरो प्राणसँ प्रिय राम
राजा दशरथ गृह मुनि एक आयल
माँगय लछुमन-राम
लेहू मुनिजी भूषण आसन आओर गज-रथ-धाम
जौं कदाचित इच्छा होअय लिअ अवधपुर-धाम
नहि हम लेबै भूषण आसन आओर गज-रथ-धाम
दशरथ देहु राम-लछुमन
तारका सन अधम निशिचर के करत बेकाम
मनमे सोच केलनि राजा दशरथ
मुनि छथि अगिन समान
जौं कदाचित श्राप देता
जरि जायत तनु-धेनु-धाम
जाहु रामा, जाहु लछुमन
मुनिजीक करूगऽ काम
ताड़का मारि पलटि घर आयब
पुनि दौड़ब मोर धाम

गीत-3

हम ने जीअब बिनु राम हे जननी, हम ने जीअब बिनु राम
होइत प्रात ओहि वन जायब, जहाँ भेटल सीता राम
हे जननी, हम ने जीअब बिनु राम
कपटी कपटिन बसु जाहि नग्रमे, अग्नि लगायब ओहि ठाम
हे जननी, हम ने जीअब बिनु राम
माता-पिता एकहु ने संबल, केवल सीता राम
हे जननी, हम ने जीअब बिनु राम
सुन्दर मुनि सब अपजस देलनि, धरि तोहर एहि काम
हे जननी, हम ने जीअब बिनु राम
राम लखन-सिया वनकऽ सिधारल, नृपति तेजलनि धाम
हे जननी, हम ने जिअब बिनु राम

गीत-4

राम लेता बास, ओही वन राम लेता बास
सूखल सर मे कमल फुला गेल
हंस लेल परगास, ओही वन राम लेता बास
कहत प्रभु-प्रभु सुनू चकेबा
कोन तोहर छऽ बास, ओहि वन राम लेता बास
कहत प्रभु-प्रभु सुनू चकेबा
कुटिया हमरो बास, ओहि वन राम लेता बास
वनहि मे रहितहुँ, वने फल खइतहुँ
तोड़ि ओछबितहुँ पात, ओहि वन राम लेता बास

गीत-5

जाय दीअ यदुवीर, कृष्ण जाय दीअ यदुवीर
हम एकसरि भेल अबेरी
कनक कलश लेने सीर
कृष्ण जाय दीअ यदुवीर

हठ जुनि करिय
पथ मोर छोड़ि दीअ
मरब यमुनाक नीर
कृष्ण जाय दीअ यदुवीर
सासु दारूण ननदि बैरिनि
किछु दिवस धरू धीर
कृष्ण जाय दीअ यदुवीर

गीत-6

प्रिये हम जाइत छी वनवास
सत्य प्रतिज्ञा कयलनि पिताजी, कैकेयी कयल प्रयास
कौशिल्या सन सासु महलमे, तखन सिय रहु धय आश
हिनकर सेवा करब उचित थिक, धैर्यहि विपत्तिक नाश
कन्द मूल फल संयोगहि भेटत, लागत भूख पियास
दुर्गम बाट दिन विकट जौं, लेब कहाँ कऽ बास
प्रिय हम जाइत छी वनवास

गीत-7

अँटकि जाहु एहिठाम
बटोही अँटकि जाहु एहिठाम
कहाकँ तोहें सुन्दर बटोही
कहाँ तोहर निज धाम
मोहिनी मुरलिया श्याम सुरतिया
तिरछी नजरिया तोहार
श्यामल गोर संगमे नारी
सब तऽ अति सुकुमार
राम लखन संगमे किशोरी
बारह बरस बनवास
हे ग्रामीण जुनि पूछह निज बात

राजा दशरथ सन पिता त्यागल
रानी कौशल्या सन माय
हे ग्रामीण नहि अटकब एहिठाम
श्याम गोर किशोर अवस्था
पाँव पैदल वन जाय
कोना कऽ विपति गमायब बटोही
अँटकि जाहु एहिठाम

गीत-8

कओने वन बाजय मुरली
बंसुरी शब्द सुनि ठाढ़ि भेली राधा
खसय ससरि चुनरी, कओने वन बांजय मुरली
अपन गृह नीपधि राधा
गोबर हाथ कढ़ी, कओने वन बाजय मुरली
एक आँखि राधा काजर कयलनि
दोसर आँखि बिसरी, कओने वन बाजय मुरली

गीत-9

वचन प्रिय ई गोट मानल जाय
जनक नन्दिनी कहलनि, कयलनि कोटि विलाप
बहुत वेद कथा सब सुनल अछि, अगम निगम पुराण कतहु
सुनल नहि त्यागि वैदेही, कानन रघुपति जाथि
नैहर मध्य सकल फल सुख थिक, कोटि कोटि विलास
कानन पति संग जानकी जयती, सब सुख सेवक बनाय
चलू-चलू संग विदीन वैदेही, तुअ हठ ने टारल जाय

गीत-10

जाइ छी ताही देश दधि-सुत, जाइ छी ताही देश
जहाँ बसथि मोहि श्याम सुन्दर, धरथि नटवर वेश
नन्दक नन्दन जगत वन्दन, सकल भवन के नरेश
शोभा सिंधु मोहिनी मुरति, कुटिल काम दिनेश
सुभग शीतल अमृत दाता, कहब हुनि इहो उपदेश
मोहि अनाथ के नाथ करू प्रभु, कहथि बूढ़ सन्देश

गीत-11

जुनि करू राम विरोग हे जननी
सुतल छलहुँ सपन एक देखल
देखल अवधक लोक हे जननी
दुइ पुरुष हम अबइत देखल
एक श्यामल एक गोर हे जननी
कंचन गढ़ हम जरइत देखल
लंकामे उठल किलोल हे जननी
सेतु बान्ह हम बन्हाइत देखल
समुद्र मे उठल हिलोर हे जननी

गीत-12

नइया लाबऽ किनारा
जय जय हो जुमना घटबारा, नइया लाबऽ किनारा
एक भिनसर सौं ठाढ़ गोवारिन, गोपाल गोपाल पुकारा
जय जय हो जमुना...
नइया लाबऽ किनारा
पहिने दान चुका दीअ गोवारिन, तखन पहुँचायब किनारा
नइया लाबऽ किनारा, जय जय हो जमुना....

नब रीति नहि करियौ कन्हैया जी, लागु कब सँ घटवारा
नइया लाबऽ किनारा, जमुना घटवारा, नइया लाबऽ किनारा
जा कए कहबनि कंश राजा कैँ छीनि लेताह घटवारा
जय जय हो जमुना घटवारा, नइया लाबऽ किनारा

गीत-13

कोइलिया नीको ने लागय तोहर बोल
जखन सँ श्याम-हरि गेला मधुपुर
तखन सँ करत अनघोल, कोइलिया
नीको ने लागय तोहर बोल
सगरि रैनि मोरा निन्दियो ने आयल
नयन बहय दुनू नोर, कोइलिया
नीको ने लागय तोहर बोल
बारि बयस मोरा, पिया मोर तेजल
विधना देल दुख मोर, कोइलिया
नीको ने लागय तोहर बोल
दुखमोचन धीरज धरू मनमे
मिलिहैं नन्दकिशोर, कोइलिया
नीको ने लागय तोहर बोल

किर्त्तन

गीत-1

धन धन सीताजी के फुलवरिया
जहाँ अये साँवरिया
माथे मुकुट शोभे काने कुण्डल डोले
अंखियामे शोभे कजरिया
जहाँ आयल साँवरिया
मृदु मुसकान करे तिरछी नजरि मारे
सभा बीच खिचले धनुषिया
जहाँ अयला साँवरिया
सुन्दर रूप देखि सुधि-बुधि गेलै भूलि
आब ने सोहाए घर दुअरिया
जहाँ आयल साँवरिया
जुलफी कपोलन शोभे सीताके मनमोहे
सखि सब करत पुकरिया
जहाँ आयल साँवरिया

गीत-2

हे कमलनयन, हे करुणामय, अपराध बहुत हम कयने छी
जौं आन हमर स्वामी रहितथि, नहि जानि की कयने रहितथि
हे केहन भरल अहाँ करुणामय, हम कयक बेर अजमौने छी
सिद्धान्त स्नेहलतासँ करू, भवसिन्धु सँ निश्चय कयने रहितहुँ
हे केहन क्षमा सँ भरल छी अहाँ, हम तकर परीक्षा कयने छी
आम फड़ैत कटहर अमृत घट, पान चुबैत गरल
के केहन भरल अहाँ करूणामय, हम कयक बेर अजमौने छी

गीत-3

देखलहुँ ने सुनलहुँ जमाय हे, मिथिलापुर बसि कऽ
गोर लागू पैंया पड़ू सिया के सजनमा
इहो मांग दिअ सिनुराय हे, हमरो घर चलि कऽ
माता के तेजब पिता के तेजब
तेजब हम घर द्वार हे, तोहरो संग चलि कऽ
प्रेम वचन सुनि बोले ब्रजनन्दन
द्वापर रचायब रास हे, वृन्दावन बसि कऽ
ऐसो किओ जबहिं मुसहरनी
ब्रज मे भेली गुवालिन हे, ठाकुर जन कहि कऽ

गीत-4

राज बगियामे देखल दुइ चोर के
एक श्यामल एक गोर के ना
काँखमे फूल तोड़ि राखय, तखन सखि सबके ताकय
देखल मुसकैत दुनू ठोर के, एक श्यामल...
आँखिये-आँखिये ताकय, ताकि सखि सभक मन मोहय
बर होइहें सीया के रघुवर श्याम हे, एक श्यामल
फूल लयला मुनि के पास, ठाढ़ भेला चुपचाप
मुनि बुझल मनक बात ओहि चोर के, एक श्यामल...
मुनि दिन्ह आशीर्वाद, पुरल सभक मनक आश
जनक छथि बड़ उदास प्राण देखि के, एक श्यामल...
अयला बड़े-बड़े बीर, तोड़ि नहि सकल धुन-तीर
सभ चलि भेला अपन हिम्मत छोड़ि के, एक श्यामल...
कहथि मुक्तेश्वर राय, राजा गेला घबराय
दियनु मिलाय धनुषा तोड़ि के, एक श्यामल...

गीत-5

कहीं भीजत होइहैं भगवान, प्रेम-रस बुन्दिया मे
कहमा से उठलै रामा कारी रे बदरबा, कहमा बरसि गेल मेघ
अयोध्या से उठलै रामा कारी रे बदरबा, मिथिला बरसल मेघ
कहीं भीजत...
किनका के भीजइ रामा, लाली रे चदरिया
किनका के भीजनि पटोर, प्रेम-रस बुन्दिया मे
कहीं भीजत...
राम जी के भीजइ रामा, लाली रे चदरिया
सीया जी के भीजनि पटोर, प्रेम रस बुन्दिया मे
कहीं भीजत होइहैं भगवान, प्रेम-रस बुन्दिया मे

गीत-6

घूमे राम-लखन दुनू भइया, नदी के तीरे-तीरे ना
किनका बिनु रे सून अयोध्या, किनका बिनु चौपाया
किनका ले, रे मोरा सून रसोइया, आब के भेजन बनाइ
राम बिनु मोरा सून अयोध्या, लछुमन बिनु चौपाया
सीता लए मोरा सून रसोइया, के देत भोजन बनाइ
नदी के तीरे-तीरे ना
कओन गाछ तर आसन वासन, कओन गाछ तर डेरा
कओन गाछ तर भीजैत हेता, राम-लखन दुनू भइया
नदी के तीरे-तीरे ना
चानन गाछ तर आसन वासन, चम्पा गाछ तर डेरा
अशोक गाछ तर भीजैत हेता, राम-लखन दुनू भइया
नदी के तीरे-तीरे ना

गीत-7

सोना के खराम चढ़ि, ठाढ़ भेला रामचन्द्र गृह अपना
आहे हुकुम दिऔ माता कैकेयी, जेता वन रहना
किनकर इहो पुरपाटन, किनकर गृह अपना
आहे किनका पड़ल विपतिया, कि जेता वन रहना
दशरथ के इहो पुरपाटन, कैकेयी के गृह अपना
आहे सीता के पड़लनि विपतिया, राम जाइ छथि वन रहना
अयोध्या के राजा बौआ, अहां जाइ छी केना
आहे हमहूँ तऽ जाइ छी वनवास, वन रहना
किनबै मे जादूपति छुरिया, कि हतबैमे प्राण अपना
आहे राम लखन सन पुत्र, कि सेहो जाइ वन रहना

गीत-8

श्यामल पहुनमा बिनु निन्दियो ने भावे, सुनू हे सजनी
मनमा चोरौने नेने जाय
नीको नहि लागे मोरा, दिन और रतिया, सुनू हे सजनी
दुअरो अंगनमा ने सोहाय
सीया जी के पाबी भेल, मोन परसनमा, सुनू हे सजनी
भेलथिन विधाता बड़ सहाय
लतिका स्नेह गाबे, किछुओ ने भावे, सुनू हे सजनी
प्रभु पर सँ दिल नहि जाय, सुनू हे सजनी

गीत-9

कैकेयी के अज्ञासँ राम वन गेला
सीता ओ लछुमन सेहो संग भेला
सुर के नाचबऽ लय, निशिचर के मारऽ लय
रामजी गेला बनबास,
काटल रावण के दसो कपार
सुरसरि के तट पर जखन राम गेला

केवट सँ भेलिन बहुत झमेला
किछु नहि केलक ओ, चरण दबेलक ओ
केलक अपन कुल उद्धार,
काटल रावण के दसो कपार
पंचवटी मे डेरा खसौलनि
भरत-शत्रुध्न सेहो भेंट भेलनि
राम के समझाबऽ लय, राम के बुझाबऽ लय
रामजी गेला बनबास,
काटल रावण के दसो कपार
हाथक अंगुठी सेहो फेकि देलनि
ई हाल सुग्रीव प्रभु कँ सुनौलनि
सीता कँ ताकऽ लय, लंका सँ आनऽ लय
चलला राम सुकुमार,
काटल रावण के दसो कपार
चौदह बरस राम बनहि बितौलनि
बनहि मे शबरी के अँईठ बइर खयलनि
लछुमन, वैदेही सँ, परम सनेही सँ
भेलनि कष्ट अपार, काटल रावण के दसो कपार
साधु के भेख धऽ रावण अबैया
सीता पुनीत के हरलक मुदैया
सीता कहथि धीर, नयन सँ बहनि नीर
कहलनि प्राण आधार, काटल रावण के दसो कपार
जग के बुझाबऽ लय, जग के समझाबऽ लय
बिष्णु लेलनि अवतार, काटल रावण के दसो कपार

गीत-10

कृष्ण कृष्ण कऽ द्रोपदी करथि रोदना
कृष्ण अहाँ बिना लाज बांचत कोना
सभा बिच द्रोपदी करथि रोदना
कृष्ण कनिएक चीर बढ़ाउ अहाँ
दुष्ट कौरव के क्यो नहि देलक मना
पांचो पाँडव सहित चलू वन रहना
कर्म विधान लिखथि विधना
पांचो पाँडव सँ शकुनि केलथि वंचना

गीत-11

दशरथ प्राण तेजु, कैकेयी समाद भेजु रे
आब के राजा जी के जरयतै हो दुलरुआ
रामचन्द्र वन गेला भरत जी गाम छथि
कहाँ गेली किए भेली कैकेयी माता
झटपट भेजु ने समाद हो दुलरुआ
जखने समदिया समाद लए पहुँचल
पूछऽ लागल कुशल समाद हो दुलरुआ
एक कुशल कहू माता तीनू रनिया
दोसर कुशल कहू अयोध्या हो दुलरुआ
पिताजी कुशल बौआ कहलो ने जाइ अछि
सून भेल अयोध्या नगर हो दुलरुआ
जखन भरत जी नगर सँ बाहर भेल
नाना जी सँ मांगल विदाइ हो दुलरुआ
जखन भरत जी अवध बीच अयलनि
आइ किए नग्र उदास हो दुलरुआ
आइ जे दशरथ जी प्राण जे तेजलनि
ताहि हेतु नग्र उदास हो दुलरुआ
एतबा वचन जब सुनलनि भरत जी
खसला चित्ते मुरछाइ हो दुलरुआ

कौशिल्या जे पानि लाउ
कैकेयी जे मुह पोछु, आब के राजा जरेतै हो दुलरुआ

सोहर

गीत-1

आजु मोरा देवकी नहयली कि अपन घर गेली रे
ललना रे, करू बसुदेव सँ संग, कि जन्म सफल हेत रे
पहिल सपन देवकी देखल, पहिल पहर राति रे
ललना रे, छोटी मोटी अमुआ के गाछ, कि फले-फूले लुबधल रे
दोसर सपन देवकी देखल, दोसर पहर राति रे
ललना रे, देखल केराक धौर, दुअरे बिच टांगल रे
तेसर सपन देवकी देखल, तेसर पहर राति रे
ललना रे, देखल बांसक बीट, दुअरे बिच गाड़ल रे
चारिम सपन देवकी देखल, चारिम पहर राति रे
ललना रे, पौरल छांछ भरि दही, आंचर तर झांपल रे
चुप रहू बहिन देवकी, आओर सहोदर हे
बहिनी हे सब क्षण अछि भगवान, कृष्ण जन्म लेल रे

गीत-2

हे ननदी कहाँ लागि गेल सगुनमा हे ननदी
जाहि दिन सँ जनमल कृष्ण कन्हैया, ताहि दिन सँ कयल सगुनमा
माँग केर मनटिक्का लियऽ हे ननदो
छोड़ि दियऽ जड़ाउ कंगनमा
नहि लेब आहे भाभी माँगक मनटिक्का, लेब मे जड़ाउ कंगनमा
परदाक भीतर भाभी ढुकहु ने देब, तँ देखहु ने देब तोरा ललना
हे ननदी कहाँ लागि गेल सगुनमा...

गीत-3

पहिल मास चढ़ु अगहन, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, मूंगक दालि नहि सोहाय, केहन गरभ संओ रे
दोसर मास चढ़ु पूस, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, पूसक माछी ने सोहाय, कि देवकी गरभ संओ रे
तेसर मास चढ़ माघ, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, पौरल खीर ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे

चारिम मास चढु फागुन, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, फगुआक पूआ ने सोहाय, कि देवकी गरभ संओ रे
पाँचम मास चढु चैत, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, चैत के माछ ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे
छठम मास चढु बैसाख, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, आम के टिकोला ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे
सातम मास चढु जेठ, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, खूजल केश ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे
आठम मास चढु अखाढ़, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, पाकल आम ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे
नवम मास चढु साओन, देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, यिा के सेज ने सोहाय, कि केहन गरभ संओ रे
दसम मास चढु भादव, कि देवकी गरभ संओ रे
ललना रे, देवकी दर्दे बेयाकुल, दगरिन बजायब रे
जब जनमल जदुनन्दन, खुजि गेल बन्धन रे
ललना रे, खुजि गेल बज्र केबार, पहरू सब सूतल रे

गीत-4

रामचन्द्र चलला पारण अम्मा सौं बिचारल रे
अम्मा हे हमहूँ तऽ जाइ छी मधुबन राज, सीता कोना राखब रे
जँऔं सीता रहती मनमे राखब नयन मे रे
ललना रे, अंगनहि कुइयाँ खुनायब, सीताकँ नहायब रे
बिना केओटकँ नाओ कहाँ भसि जायत रे
बिना पुरुष के नारि कहाँ दिन काटत रे
ललना रे, बिना केओटकँ नाओ गंगा भसि जायत रे
ललना रे, बिना पुरुष के नारी नइहर दिन काटत रे
फाटहु धरती कि हम तर जायब रे
ललना रे, नइहरक लोक अगुतायल, कि कखन सीता ओती रे

गीत-5

प्रथम गणेश पद गायब, देबता मनाएब हे
ललना हे, जब मोर होइहैं बलकबा, मोहर लुटाएब हे
दोसर मास जब आयल, चित फरिआएल हे
ललना हे, पानक बीड़ा ने सोहाय, मोन अकुलाएत हे
तेसर मास जब आयल, ननदी दान मांगू हे
भउजी हे, हम लेब हाथकँ कंगनमा, कि सोइरी निपाओनि हे
छठम आओर सातम मास लग आयल हे
ललना हे, गोतनो करथि चौल, किए बबुा सुताओल हे
सातम गेल मास, आठम आएल हे
ललना हे, आठो अंग भारी भय गेल हे
नवम मास जब आयल, होरिला जनम लेल हे
ललना हे, बाजऽ लागल आनन्द-बधैया, महलिया गूंजय सोहर हे

गीत-6

बाबा केर अंगना चानन गाछ उगल तरेगन रे
ललना रे ताहि अवसर होरिला जनम लेल पुत्र बड़ सुन्दर रे
भनसा करैत अहाँ सासु कि सेहो हंसि पूछथि रे
ललना रे पुतहु कओन-कओन फल खयलहुँ पुत्र बड़ सुन्दर रे
पहिने खयलहुँ नारिकेर तखन छोहारा रे
ललना रे तखन खयलहुँ दाड़िम फड़ पुत्र बड़ सुन्दर रे
मचिया बैसलि तोहें गोतनो कि सेहो हंसि पूछथि रे
गोतनो हे कौने व्रत तोहें कयलह कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
गंगा पैसि नहयलहुँ हरिवंश सुनलहुँ रे
ललना रे कयलहुँ जे रवि उपवास कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
घरबा नीपैते आहे ननदो कि सेहो हंसि पूछथि रे
भउजी हे ककरा-ककरा संग तों गेलह कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
पहिने जे गेलहुँ देओर संग तखन ननदोसि संग रे
ललना रे तखन जे गेलहुँ पिया संग तँ पुत्र बड़ सुन्दर रे

जे इहो सोहर गाओल गाबि सुनाओल रे
ललना रे तिनको बास बैकुण्ठ से पुत्र फल पाओत रे

गीत-7

उतरहि साओन चढ़ल भादव, चहुदिसि कारी रे
ललना रे, रिमिक-झिमिक मेघ बरिसत, बादल हरखित रे
देवकी दरदे बेयाकुल, दगरिन चाहीअ रे
ललना रे, गोकुल निकट एक नग्र, तहाँ बसु दगरिन रे
जब जन्म लेल यदुनन्दन, बन्हन खुजि गेल रे
ललना रे, खुजि गेल बज्र केबार, पहरू सब सूतल रे
माथ मुकुट कर कंगन, डांरहि घुँघरू बाजु रे
ललना रे, सैह देखि देवकी कानल, देहरी मुरछाइ खसु रे
कीए दैव देलनि, जे कंस हरि लेलनि रे
जूनि कानू अहाँ देवकी, जुनि पछताउ रे
ललना रे, इहो बालक दुखमोचन, ललित अभिलोचन रे
सखि सभ सोहर गाओल, गाबि सुनाओल रे
ललना रे, देवकी भेल बैकुण्ठ, कि पुत्र फल पाओल रे

गीत-8

देवकी यशोदा दुनू बहिनी कि दुनू सहोदर रे
ललना रे, मिथिला गोकुल दुइ नग्र कि ताहि बिच जमुना बहू रे
अहि पार देवकी नहाएल, ओहि पार यशोदा रे
ललना रे, दुनू केर भए गेल भेंट दुनू बतिआएल रे
कुशल-पूछय देवकी, यशोदा मुह तोहर मलीन हे
मुह तोहर मलीन बहिनी, वदन तोहर उदास हे
सैह सुनि देवकी के नोर खसु, बदन उदास भइ रे
ललना रे, सात पुत्र दैव देलनि, कंस हरि लेलनि रे
कंस छथि निरवंश, बालक नहि छनि दया धर्म यौ
तेहन वीर अवतार लेतनि, करत हुनको नाश यौ

गीत-9

किनका के ऊँच मन्दिर छनि, चउमुख दीप जरु रे
ललना रे, किनका के लाली पलंगिया, किनकर धनि भुइयाँ लोटु रे
बाबा के ऊँच मन्दिर छनि, चउमुख दीप जरु रे
ललना रे, भइया के लाली पलंगिया, हुनकहि धनी भुइयाँ लोटु रे
पहिल वेदन जब आयल, किछु ने सोहायल रे
ललना रे, पियबा जे हँसथि मुसुकाय, मोहि ने सोहाय रे
एहि अवसर पिया पबितहुँ, रेशम डोरि बन्हितहुँ रे
ललना रे, अपन वेदन दय सौंपितहुँ, खूब खौंझबितहुँ रे
दोसर वेदन जब आयल, किछु ने सोहायल रे
ललना रे, पिया के बोल सँ खौंझायल, मोन अलसायल रे
एहि अवसर.......... खौंझबितहुँ रे
तेसर वेदन जब आयल, किछु ने सोहायल रे
ललना रे, पिया जे पहिरल पोशाक, मोहि ने सोहाय रे
एहि अवसर.......... खौंझबितहुँ रे
किए केलनी बाबा मोर बिआह, ससुर घर देलनि रे
ललना रे, रहितहुँ वारि कुमारि, दरद नहि बुझितहुँ रे
भनहि कयलनि बाबा मोर बिआह, ससुर घर देलनि रे
ललना रे, रहितहुँ वाि‍र कुमारि, होरिला कतऽ पबितहुँ रे

गीत-10

काँचहि बाँस के डोलिया हिंगुरे ढ़उरा गेल हे
ललना रे ताहि चढ़ि सीता दाइ वन गेली संग देवर लक्ष्मण रे
एक कोस गेली सीता दाइ आओर दोसर कोस रे
ललना रे तेसरे मे उठल जूड़ी, वेदन लक्ष्मण पड़ाएल रे
केये आगू पाछू करत केये नाड़ी छीलत रे
ललना रे केये जायत अवधपुर खबरिया जनाओत रे
वन सँ बहार भेली वनसपतो कि तोहे मोर हितबंधु रे
सीता हे हमहीं आगू पाछू करब हमहीं नाड़ी छीलब रे
वन सँ बहार भेल नउआ कि तोहीं मोर हितबंधु रे

नउआ रे तोहीं तऽ जाही अवधपुर खबरि जनाबही रे
पहिने जनाएब राजा दशरथ तखन कौशल्या रानी रे
ललना रे सौंसे अयोध्या जनाएब राम नहि जानथि रे
गाम के पछिम एक पोखरि चून सँ चूनेटल रे
ललना रे ताहि तर रामचन्द्र ठाढ़ कि नउआ निरेखथि रे
कहाँ केर तोहें नउआ कहाँ केने जाइ छी रे
ललना रे किनका के जन्म नन्दलाल कि खबरि जनाएब रे
वनहि केर हम नउआ अवधपुर जायब रे
ललना रे रामचन्द्र के जनम नन्दलाल कि खबरि जनाएब रे
वामे हाथ लेल राम कागत दहिने हाथ बांचथि रे
ललना रे पहिला विरोग सीता बिसरथु अवधपुर आबथु रे
वामे हाथ लेल सीता कागत दहिने हाथ बांचथि रे
ललना रे पहिल विरोग कोना बिसरब अवध कोना जायब रे

गीत-11

सखियामे सखिया विचार पूछू आओर सलाह पूछू रे
सखिया हे, कौने कौने व्रत अहाँ ठानल, पुत्र फल पाओल रे
गंगा पइसि नहएलहुँ, हरिवंश सुनलहुँ रे
सखिया हे, सूर्य कैँ लगलहुँ गोर, कि पुत्र फल पाओल रे
सखिया हे, कौने कौने फल अहाँ खयलहुँ, कि बालक भेल सुन्दर रे
काजू हम खयलहुँ छोहारा कि आओर मुनक्का हे
सखिया हे, नारियल तोरि हम खयलहुँ, कि बालक भेल सुन्दर हे

गीत-12

कहमा से आयल पिअरिया, पिअरिया लागल झालर हो
कमा से आयल सिन्दुरबा, सिन्दुरबा भरल सिन्दूर हो
नैहर से आयल पिअरिया, पिअरिया लागल झालर हो
ललना, सासुर सऽ आयल सिन्दुरबा भरल सिन्दूर हो
कहमा धरबै पिअरिया, पिअरिया लागल झालर हो
कहमा मे धरबै सिन्दुरबा, सिन्दुरबा भरल सिन्दूर हो

झपिया मे रखबै पिअरिया, पिअरिया लागल झालर हो
ललना, कोठी पर धरबै सिन्दूरबा, सिन्दूरबा भरल सिन्दूर हो

गीत-13

प्रथम गणेश पद गायब, देबता मनाएब हे
ललना हे, जब मोर होइहैं बलकबा, मोहर लुटाएब हे
दोसर मास जब आयल, चित फरिआएल हे
ललना हे, पानक बीड़ा ने सोहाय, मोन अकुलाएत हे
तेसर मास जब आयल, ननदी दान मांगू हे
भउजी हे, हम लेब हाथकँ कंगनमा, कि सोइरी निपाओनि हे
छठम आओर सातम मास लग आयल हे
ललना हे, गोतनो करथि चौल, किए बबुा सुताओल हे
सातम गेल मास, आठम आएल हे
ललना हे, आठो अंग भारी भय गेल हे
नवम मास जब आयल, होरिला जनम लेल हे
ललना हे, बाजऽ लागल आनन्द-बधैया, महलिया गूंजय सोहर हे

गीत-14

पिया सूतल सुख निन्दिया, जगाबहु से ने जागय हे
ललना हे, घेरी आयल करी रे बदरबा, सुन्न घरमे डर लागू हे
बादरि घेरल घनघोर, दामिनि चमकाओल हे
ललना हे, चिहुँकि चिहँकि भेल भोर, बालम नहि जागल हे
सासु ननदिया बरिनियां, असोरबामे जागल हे
ललना हे, बाजय पयरक पैजनियाँ, कि झनाझन उठय हे
दादुर चहुँदिसि बोलय, तन जागय, छतिया धड़कि उठय हे

गीत-15

आरे आरे कागा सगुनिया सगुन नोत भाखब रे
कागा रे मोर घर उचित कल्याण कहाँ-कहाँ नोतब रे
दर जे नोतब दिआद लोक आओर समाज लोक रे
पिया हे अहांक बहिन नहि नोतब कि भागिन कहाँ आओत रे
दरहि नोतब दिआद लोक आओर समाज लोक रे
धनि हे एक नहि नोतब अहांक नैहर की सार कहाँ आओत रे
घर पछुअरबा मे नउआ कि तोहें मोरा हित बंधु रे
नउआ रे झटपट चिठिया तों लैह कि खबर जना दैह रे
हाथी चढ़ल अबथिन भइया आओर भतिजबा रे
ललना रे राम खसला मुरछाइ कि सार कोना जानल रे
पीअर वस्त्र झमकबिते आबथि सीता मन बड़ हरखित रे
ललना रे पियबा के देखल मुरझाएल कि आओर मुसुकि चलू रे

मुंडन लोकगीत

गीत-1

कहाँसँ हजमा एलै, कहाँसँ बाबा एलै
कहाँसँ एलै बौआक पीसी, लगाबय दही
फल्लाँ गामसँ हजमा एलै, फल्लाँ गामसँ बाबा
चिल्लाँ गामसँ एलै बौआक पीसी, लगाबय दही
कीये बैसक हजमा देबै, कीये बैसक बाबा देबनि
कीये बैसक देबनि बौआक पीसी, लगाबय दही
आसन बैसक हजमा देबै, सिहासन बैसक बाबा
खढ़ तर बैसक देबनि बौआक पीसी, लगाबय दही
कीये पहिरन हजमा देबै, कीये पहिरन बाबा देबनि
कीये पहिरन देबनि बौआक पीसी, लगाबय दही
पीरे पहिरन हजमा देबै, पीताम्बर पहिरन बाबा देबनि
गदरी पहिरन देबनि बौआक पीसी, लगाबय दही
कीये भोजन हजमा देबै, कीये भोजन बाबा देबनि
कीये भोजन देबनि बौआक पीसी, लगाबय दही
पूरी भोजन हजमा देबै, खीर भोजन बाबा देबनि
पत्तल चटेबनि बौआक पीसी, लगाबय दही

गीत-2

केहन कठोर अहाँ भेलिऐ यो भैया
पहिले बेटा के मूड़न केलौं
बहिनी बिदागरी बिसरलौं यो भैया
केहन कठोर अहाँ भेलिऐ
चौवन्नी ने लेबै, अठन्नी ने लेबै
असर्फीमे कोंढ़ा लगेबै यो भैया
केहन कठोर अहाँ भेलिऐ
गायो ने लेबै, महिसियो ने लेबै
दुअरे पर बरदा खोलेबै यो भैया

केहन कठोर अहाँ भेलिऐ
सेर नहि लेबै, सम्पत्ति नहि लेबै
अंगनेमे लग्गी खसेबै यो भैया
केहन कठोर अहाँ भेलिऐ

गीत-3

हृदय मध्य लागल कसाय हे
सखी केओ ने छोड़ाबे
एक तऽ छोड़ाबय अम्मा हे
जे कि ओद्रमे राखे
छाबा मध्य लागल कसाय हे
सखी केओ ने छोड़ाबे
एक तऽ छोड़ाबय चाची हे
जे कि गोदमे खेलाबे
बाँहि मध्य लागल कसाय हे
सखी केओ ने छोड़ाबे
एक तऽ छोड़ाबय भौजी हे
जे कि नयनमे राखे
माथ मध्य लागल कसाय हे
सखी केओ ने छोड़ाबे
एक तऽ छोड़ाबय पीसी हे
जे कि नोतल आबे

गीत-4

लाल बचा के मूड़न छलनि
तेँ हम नैहर अयलौं हो लाल
सोना के जे काड़ा मट्ठा
रूपा के करपैरी हो लाल
खासा मलमल के अंगा - टोपी
चौंसठ लागल फुदनियां हो लाल

खोना खराम चढ़ि भैया भौजो सँ पुछथिन
की-की बहिनो लयली हो लाल
कासा - पित्तर के काड़ा - मट्ठा
लोहा के करपैरी हो लाल
कारी कम्मल के अंगा ओ टोपी
दुइ-चारि लागल फुदनियां हो लाल
सोना खराम चढ़ि भैया भौजोसँ पुछथिन
की-की बहिनो लऽ जेती हो लाल
घर पछुअरबा मे बेलक गछिया
ताहिमे रेशम के डोरिया हो लाल
नन्दो के बान्हब, नन्दोसियो के बान्हब
ताहिमे ननदोक भैया हो लाल
एमकी के बेरिया छोड़ि दऽ हे भौजो
आब नहि नैहर एबै हो लाल
सौ लय एलौं, पचासस नहि पूरल
मूरोमे भऽ गेल हानियें हो लाल

गीत-5

हजमा धीरे-धीरे कैंची तोँ चलबिहें
बौआ नञि कनबिहें ना
देबौ सूप भरि चाउर, ओइमे पांच टका निछाउर
हजमा बाबा जी सँ गैया तोँ खोलबिहें
बौआ नञि कनबिहें ना
देबौ सूप भरि चाउर, ओइमे दस टका निछाउर
हजमा नाना जीसँ महिंस तों खोलबिहें
बौआ नञि कनबिहें ना
देबौ सूप भरि चाउर, ओइमे बीस टका निछाउर
हजमा बाबूजी सँ घड़ी तो खोलबिहें
बौआ नञि कनबिहें ना

गीत-6

हमरा के मोरंग जाय दऽ हे बबुये के माय
मोरंग जयबऽ, कतेक दिन रहबऽ
हमरा लय की-की लयऽ हे बबुये के बाप
मोरंग जयबऽ बरिस दिन रहबऽ
तोरो लय सौतिन लयबऽ हे बबुये के माय
हमरा के नैहर जाय दऽ हे बबुये के बाप
नैहर जयबऽ कतेक दिन रहबऽ
हमरा लय की-की लयबऽ हे बबुये के माय
नैहर जयबऽ नौ दिन रहबऽ
नौ टा बेटा जनमयबऽ हे बबुये के बाप
नबो बेटा के मूड़न करबऽ
सब के नौता पठयबऽ हे बबुये के बाप
सब नौतहारिन के डोली-महफा
तोरो के पैदल बजयबऽ हे बबुये के बाप
सब नौतहारिन के तोसक-तकिया
तोरो के भुइयां लोटयबऽ हे बबुये के बाप
सब नोतहारिन के पीरे-पीताम्बर
तोरो के बिष्ठी पहिरयबऽ हे बबुये के बाप
सब नोतहारिन के पूरी-जिलेबी
तोरो के पत्तल चटेबऽ हे बबुये के बाप

खेलौना लोकगीत

गीत-1

पिया तोरा गोरे लागी, ननदी मंगा दे
राजा तोरा गोर लागी, ननदी मंगा दे
जखन रे ननदी गाम बीच आयलि
ननदीक कानब बड़ा नीक लागे, पिया ....
जखन रे ननदी दरबजबा बिच आयलि
चङेरा महक पूरी बड़ा नीक लागे, पिया ....
जखन रे ननदी आंगन बिच आयलि
छांछ महक दही बड़ा नीक लागे, पिया ....
जखन रे ननदी सोइरी बिच आयलि
सुठौरा के खाइते बड़ा नीक लागे, पिया ....
जखन रे ननदी दान मांगऽ लागलि
देतो जे प्राण बड़ा कठिन लागे, पिया ....

गीत-2

आंगन मे, अगने मे ठाढ़ पिया, पीड़ा हरू, अंगने मे
दौड़ि दौड़ि जाउ पिया दगरिन बोलाउ, अंगने मे
नारि छिलवायब अंगने मे
दौड़ल दौड़ल जाउ पिया नाउनि बजाउ, अंगने मे
नह टोंगबायब अंगने मे
दौड़ल दौड़ल जाउ पिया धोबिया बजाउ, अंगने मे
कपड़ा धोआएब अंगने मे
अंगनेमे, अंगनेमे ठाढ़ पिया, पीड़ा हरू, अंगने मे

गीत-3

मरि गेलों हे पजरबा व्यथा सँ
मरि गेलों दरदिया व्यथा लियऽ लियऽ सासु अपन पोता
आब ने होइए परभुता, सासु हे मरि गेलौं
लियऽ लियऽ गोतनो अपन अलंगा, आब सोहाइए पिया पलंगा

लियऽ लियऽ ननदो अपन चोली, आब ने सोहाइए पिया बोली
दियऽ दियऽ सासु अपन पोता, आब होइए परभुता
सासु हे जीबि गेलौं पंजरबा व्यथासँ जीबि गेलौं
दियऽ दियऽ गोतनी हमर अलंगा, आब सोहाइए पिया पलंगा
दियऽ दियऽ ननदो हमर चोली, आब सोहाइए पिया बोली

गीत-4

मांगू रे बहिनों कोने फल मांगब
आजुक मांगल सभ पायब गे दैया
अगिला हर के हरबाहा मांगब
पछिला हर के बरदबा हो भैया
घर निपन के चेरिया हम मांगब
आओरो मांगब खबसबा हो भैया
दूध पिऐ के गैया मांगब
आओरो मे मांगब कटोरबा हो भैया
पिया चढ़न के घोड़ा मांगब
आओरो मे मांगब महिसबा हो भैया
बाहर लुटै भाट-पमरिया, घर लुटै ननदिया
ई हम जनितौं ननदी अयती
केदली वन जाय बिअइतौं गे दैया

गीत-5

दुर की केलौं गे जंजाल ननदि के आनि बैसेलौं
विपत्ति बड़ भारी ननदो छथि सवारी
ओ सूती साड़ी नहि उलीयो के नहि पुछती
इच्छा छनि गजीसिल्क लितौं खरिदाइ
ओ बाली नहि पहिरती ओ झुमका के नहि पुछती

इच्छा छनि लॉकेट लितौं गढ़ाइ
ओ अपना घर नहि जेती ओ देवर के नहि पुछती
ओ सैंया घर नहि जेती ओ देवर के नहि पुछती
इच्छा छनि अपन भैया लितौं अपनाइ
दूर की कयलौं गे जंजाल ननदि के आनि बैसलौं

गीत-6

पहिल वेदन जब उठल अंगना मे मुड़िया पटकल हे
सासु अब ने खेलायब हे, तोरा बेटा संग लटगेनमा
सासु आब ने खेलायब हे
दोसर वेदन जब उठल पटिये पर मुड़िया पटकल हे
ननदी आब ने खेलायब हे, तोरा भइया संग लटगेनमा,
ननदी आब ने खेलायब हे
तेसर वेदन जब उठल, चौकठिये पर मूड़ी पटकल हे
गोतनी आब ने खेलायब हे, तोरा देओर संग लटगेनमा,
गोतनी आब ने खेलायब हे
चारिम वेदन जब उठल घरबामे मूड़ी पटकल हे
देओरा आब ने खेलायब हे, तोरा भइया संग लटगेनमा,
देओरा आब ने खेलायब हे
पाँचम वेदन जब उठल पलंगहि पर मुड़िया पटकल हे
बालमु आब ने खेलायब हे, तोरा संग लटगेनमा,
बालम आब ने खेलायब हे
छठम वेदन जब उठल लाल जनम लेल हे
सासु फेरो खेलब हे, तोरा बेटा संग लटगेनमा,
सासु फेरो खेलब हे

ऋतु लोकगीत

चौमासा

गीत-1

माघ मनोरथ मेघ लागल, श्याम चलल परदेश यो
हमरो पिया ओतहि गमाओल, हमर कोन अपराध यो
फागुन हे सखी आम मजरि गेल, कोइली बाजय घमसान यो
कोइली शब्द सुनि हिया मोर सालय, इहो थिक फागुन मास यो
चैत हे सखि पर्व लगतु हैं, सब सखि गंगा स्नान यो
सब सखि पहिरय पीअर पीताम्बर, हमरो के दैवा दुख देल यो
बैसाख हे सखि उषम ज्वाला, घाम सँ भीजल शरीर यो
रगड़ि चन्दन अंग न लेपितहुँ जँ गृह रहितथि कंत यो

गीत-2

हे रघुनन्दन विश्वम्भर स्वामी, कारण कओने फिरय वन मे
साओन सहृदय कियो राजा दशरथ, हर्ष भई कैकेइ मन मे
विकल भेल नर-नारी अवध मे, रोदना करथि जननि घर मे
भादव मास ठाढ़ रघुवर तरुतर, वुन्दक झाड़ लागय तन मे
निशि अन्हार अति भयाओन, दामिनि दमकि रहल घन मे
आसिन राम चलल मृग मारन, सीता सौंपल लखन संग मे
मुरछि खसू मृग राम शर पीड़ित, शब्द सुनल सिय कानन मे
कातिक कठिन भूप अति रावण, सिया हरल ओहि अवसर मे
शम्भुदास करुणा रस सखि हे, भरत जाय पुर-परिजन मे

गीत-3

सजनी गे तेजल कुंजबिहारी
प्रथम अखाढ़ चलल मनमोहन
कोना कऽ खेपब राति भारी
सजनी गे तेजल कुंजबिहारी
रिमझिम रिमझिम साओन बरिसै
दोसर राति अन्हारी
सजनी गे तेजल कुंजबिहारी
भादव रैनि भयाओन लागय
सब गोपियन जीव हारी
सजनी गे तेजल कुंजबिहारी
आसिन आस लगाओल सजनी गे
नञि आयल गिरधारी
सजनी गे तेजल कुंजबिहारी

गीत-4

केओ ने बुझाबय किए शिव शंकर रुसला अपना मन मे
कार्तिक मास गगन उजियारी, बिछुरल सोच भई मन मे
कार्तिक गणपति कोरा शोभथि, एकसरि रहब कोना वन मे
अगहन अधर अंग रस छूटय, अधिक संदेह होअय मन मे
छोड़ि गेलाह शिव मृगछाला, लइयो ने गेलाह अपन संग मे
पूस मास पाला तन पड़ि गेल, चहुँदिस छाय रहल वन मे
धरब भेष योगन के शिव बिनु, शिव शिव रटन लगाय मन मे
सिहरि सिहरि सारी रैन बिताओल, पिया बिनु माघ बड़ा रगड़ी
भेटथि देव सखा हमर जँ, पूरय मन अभिलाष सगरी

गीत-5

कोना जीअब बिनु कुंअर श्याम हो, बिरहा घेरि लइ तन मे
फागुन मास आस हिय सालय, फड़कि-फड़कि उठय छतिया
केओ नहि मोर विपत्ति केर संगी, अगहन लिखि भेजु पतिया
चैत मास वन टेसू फूलय, मोहि ने भावय घर-अंगना
कोइली कुहुकि-कुहकि हिया सालय, होअय मन जा डूबी यमुना
ठाढ़ बैसाख तोहें होउ बटोही, तोहें देह-दशा मोरा देखू हे
जाय कहू ओहि नटबर श्याम सँ, विरहिन प्राण नहि राखू हे
जेठ मास पिया वारी सोहागिन, चानन अंग लेपू घसि के
भेटलथि श्याम सखा मोरो स्वामी, मन अभिलाष पूरय सभ के

गीत-6

प्रथम तोहर सुनिय सोहर, सुखक मास अखाढ़ यो
बारी वयस प्रीतम विदेश, हमर कोन अपराध यो
साओन हे सखि सर्व सोहाओन, फूलल बेली चमेलि यो
ताहि फुल देखि भमरा लुबधल, करय मधुर झंकार यो
भादव हे सखि रैनि भयाओन, दोसर राति अन्हार यो
लौका जे लौकै, बिजुरि चमकै, ककरा असरा हेबै ठाढ़ यो
आसिन हे सखि आस लागल, आसो नू पूरल हमार यो
आसो जे पुरितै, कुबरी सौतिनियां मोर कन्त राखल लोभाय यो
कातिक हे सखि पर्व लगै छै, सब सखि गंगा स्नान यो
सब सखि पहिरय पीअर पीताम्बर, हमरो दैव दुख देल यो
अगहन हे सखि सारिल लिबि गेल, लीबि गेल सब रंग सीस यो
ताहि सारिल देखि चिड़ै लुबुधल, सैह देखि हिय मोर साल यो

गीत-7

पूस हे सखि पड़ि गेल फुहार, भीजि गेल आँचर चीर यो
सगरि रैनि हम बैसि गमाओल, होयत कखन भोर यो
माघ हे सखि जाड़ लगै छै, पिया बिनु जाड़ो ने जाय हो
एहि अवसर मे पिया के पबितहुँ, सतितहुँ हृदय लगाय यो
फागुन हे सखि फगुआ लगै छै, उड़त अबीर गुलाल यो
रंग अतर घोरि कऽ ढ़ारितहुँ, जँ गृह रहितथि नन्दलाल यो
चैत हे सखि फूलल बेली, भ्रमर लेल निज बास यो
सब सखि पहिरय पीअर पीताम्बर, हम धनी गुदरी पुरान यो
बैसाख हे सखि उखम ज्वाला, घामे भीजय शरीर यो
एहि अवसर मे पिया के पबितौं, अँचरे सऽ बेनियां डोलाय यो
जेठ हे सखि बाँस कटबितौं, रचि-रचि बंगला छराय यो
ओहि बंगला मे दुनू मिलि सुतितौं, पुरति छबो मास यो

गीत-8

चैत आहो रामा चित भेल चंचल
बितल मास बैसाख यो
रगड़ि चन्दन अंग लेपितहुँ
रहितहुँ प्रभुजी के साथ यो
जेठ पहु नहि हेठ अयला
करब कओन उपाय यो
कोन गुण ओझरयला प्रभु जी
के कहत निज बात यो
अखाढ़ आहो रामा बुन्द बरिसय
सभ सखि सांठल धान यो
साओन सिन्दुर काजर शोभय
भादब राति अन्हार यो
कोन गुण ओझरयला प्रभु जी
करब कओन उपाय यो

गीत-9

चलू सखि हे सहेलिया, बिषम लागे
आइ अषाढ़ मास हे सखिया, चहु दिस बुन्द बरसे दिन रतिया विषम लागे
साओन के दुखदाओन रतिया, कुबजी हरकनि हुनको मतिया विषम लागे
भादव के निशि राति अन्हरिया, सपनो मे देखल हुनकर सुरतिया विषम लागे
आसिन आस लगाओल सखिया, नहि आयल पिया निरमोहिया विषम लागे
कातिक कंत उरन्त भेल सखिया, सिन्दूर-काजर ने शोभय सुरतिया विषम लागे
अगहन अग्र सोहावन सखिया, सारिल धान कटायब कहिया विषम लागे

गीत-10

आएल अखाढ़ इहो सुख भेल
अमुआँ सऽ जमुआँ कटहर पाकि गेल, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं
साओन बेली फुलय भकरार
देखि देखि नयना बहय जलधार, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं
भादव के निसि राति अन्हार
पिया बिनु धर्म नहि बांचत हमार, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं
आसिन मन में छल बिसवास
औता गोकुल सऽ पूरत अभिलास, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं
कातिक पिया भेल कठोर
पछिला प्रीत बिसरि देल मोर, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं
अगहन सारिल लिबि गेल धान
सबहक श्याम बसै छथि धाम, मोहन नहि मिलिहैं
हो भगवान, केहन बेकल भेल प्राण, मोहन नहि मिलिहैं

गीत-11

हो भगवान, कोन कसुर विधना भेल बाम
मोहन तेजि गेला
अखाढ़हि मास इहो दुख भेल
आमुन - जामुन - कटहर पाकि गेल
कहब दुख ककरा
साओन बेलि फुलय कचनार
ककरा लय गांथब सुन्दर हार
ककरा पहिरायब
भादव रैनि भयाओन राति
ककरा शरण धय होयब ठाढ़
कि झहरय नीर
आसिन मास छल बिसबास
अओताह यदुपति पूरत आस
कहब दुख हुनके
कार्तिक कन्त गेलाह बिदेस
हमहुँ मरब जहर - बिख खाय
जमुना-जल धसि कय
अगहन खेते-खेते उपजल धान
रहितथि अवधपति, लबितथि धान
कि करितहुँ मे खीरे
करितौं लबान, बिनुपिया अगहन बिषम समान
कि झहरय नीरे

बारहमासा लोकगीत

गीत-1

मिथिलापुरी शोर भयो हे जनक प्रश्न ठामे
चैतहि मास सिया रूप अनूप, देखि जनक मनहि मन चूप
कि आब सिया भेली बारी बयस, सब गुण बर भेटत कोन देश
पूरत अभिलाष
बैशाखहि मास ऋषि सुदिन बनाओल, नग्र हकारि चाप चढ़ाओल
इहो प्रश्न भारी वचन प्रमाण, जे इहो धनुषा तोड़त बलवान
सिया लए जइहें
जेठहि पत्र फिरहिं सभ देश, सुनि हर्षित भेल सकल नरेश
कि राम ओ लक्षमण वशिष्ठ मुनि संग, हाथ धनुष शर कोमल अंग
जनकपुर आयल
पावस मास अषाढ़, सुनि प्रश्न कठिन क्रोध मन भार
कि एक एक मुनि सौ सौ बेर चाप गहथि, कि सभ बेधल शरीर
कि हारि सभ बैसथि
सावन नृपति जनक अकुलाय, हारि बैसल भूप मान धराय
कि आब सिया बैसल रहल कुमारि, किछु ने भेल जग के हकारि
धनुष नहि टूटल
भादव नृपति कहथि कल जोड़ि-
जे इहो धनुष तोड़त बलवान, तिनि संग सीता देब बियाहि
कि लाज बड़ भारी
आसिन लछुमन कुदथि मैदान, चुटकी सँ तोड़ब कि धनुष पुरान
कि क्रोध कीन्ह भारी
कातिक धनुष तोड़ल भगवान, अनहद सुद्ध भेल घमसान
कि झहरय गगन सँ बरसय फूल, राम सिया दूनू समतूल
कि बाजि गेल डंका
अगहन राजा सोचल बरियात, कि रथपर लाल ध्वजा फहराय
कि दशरथ समधि समान, जनक मंडप पर सोचथि भगवान

बियाहि जानकी फूलहिं हाथी चललि रनिवास
करू आरती करपूरहि आस, कि मंगल गाओल
वशिष्ठ संग भेल जनक के भाग्य, कि राम आयल
माघहि मास देखि जनक कयलनि विदाइ
अपरम्पार हरख भेल, कि विस्मृति भेल जन्म
पूरल सब आस
फागुन गौना कयल रघुनाथ, कि जानकी कयलनि देस अनाथ
मिथिलापुरी केर पूरल आस, कि बाबूलाल गाओल इहो बरमास
की मिसान उड़ि गेल

गीत-2

फागुन पहु घर हमरो अबाद गे, करबै हम बिहार गे ना
चैत बैसाख बीतल दुइ फूल लागल अकास
जेठमे रिमझिम पड़ै छै फुहार गे, करबै हम विहार गे ना
अषाढ़ साओन बीतल, दुइ मास बरखा बरसै दिन राति
आनन्दसँ पलंगा पर गद्दा ओछायब गे, करबै हम विहार गे ना
आसिन आशा हम लगौलियै, कातिक किछु नहि केलिऐ
अगहन खेपबै बैसिकऽ दुआरि गे, करबै हम विहार गे ना
पूस सीरक भरायब, माघमे पिया के ओढ़ायब
फागुन छोड़बै अतर गुलाल गे, करबै हम विहार गे ना
पुरि गेलै बारह मास गे, करबै हम विहार गे ना

गीत-3

प्रथम मास अखाढ़ हे सखि श्याम गेला मोहि तेजि यो
कोन विधि हम मास खेपब हरत दुख मोर कोन यो
साओन हे सखि सर्वसोहाओन, दोसर राति अन्हार यो
लौका जे लौके रामा बिजुरी जे चमकै जंगलमे बाजै मोर यो
भादव जल थल नदी उमड़ि गेल चहुदिस श्यामल मेघ यो
एक लोक जब गेल मधुपुर ओतहि भए गेल भोर यो

आसिन हे सखि आश लगाओल आशो ने पुरल हमार यो
एहि प्रीत कारण सेतु बान्हल सिया उद्देश्य श्रीराम यो
कातिक हे सखि छल मनोरथ जायब हरिजी के पास यो
राति सुख दुख संग गमाओल लेसब दीप अकास यो
अगहन हे सखि सारिल लुबधल भांति-भांति केर धान यो
हंस क्रीड़ा करत सरोवर भौंरा लोटय एहिठाम यो
पूस हे सखि जाड़काला बरिसहु हेमगृह जाय यो
तुरत घूर जराय तापल पिया बिनु जाड़ ने सोहाय यो
माघ कामिनी बान्ह यामिनी यौबन भेल जीवकाल यो
बाँचि पतिया फाटु छतिया माधव कोन बिलमाय यो
फागुन हे सखि खेलत होरी उड़त अबीर गुलाल यो
खेलत होली, बोलत बोली सेहो सुनि दगध शरीर यो
चैत हे सखि समय चंचल लोचन चहुँदिस घाव यो
गरजे घन बड़जोर अहाँ दीअ ने पहु घर आनि यो
विषम मास बैसाख हे सखि पिया बिनु निन्द ने होत यो
पिया पिया कए रटय पपीहा कखन होयत प्रात यो
जेठ हरिजी सँ भेंट भए गेल पूरल बारहोमास यो

गीत-4

आसिन मास गे कनियाँ, निसि अन्धी राति
निशिए सपन गे कनियां, बदन तोहार
झुठे तो बजइ छऽ हो कुमर, झुठे तोहर सपन
जे तोरा कहलक हो कुमर, लड़िका छल नदान
कातिक मास गे कनियां, कन्त भेलौ उरन्त
स्वामी तोहर डूबि जे मरलौ, कंकरपुर के धार
हमरो के स्वामी जे मरितै, फुटितै गजमोती
जल थल नदिया हो कुमर, बहितै सिनुरक धार
अगहन मास गे कनियां, शोभउ ने गुदरी-पुरान
पहिरूमे पहिरू गे कनियां, लहंगा हे पटोर
एते दिन पहिरलौं हो कुमर, लहंगा हे पटोर

आब हमरा शोभइ हो कुमर, गुदरी हे पुरान
पूसहिं मास हे कनियां, जाड़क दिन
हमरो के कनियां रहितै, सीरक दितौं भराइ
पूसहि मास हो कुमर, जाड़क दिन
हमरो के स्वामी रहितय, अचरा दितौं ओढ़ाइ
माघहि मास गे कनियां, ओस लागल कपार
हमरो के कनियां रहितै, औखद दितै लगाइ
माघ मास हो कुमर, जाड़क दिन
हमरो के स्वामी रहितै, हाथसँ दितौं दबाइ
फागुन मास गे कनियां, होली के दिन
हमरो के कनियां रहितय, धोरितौं रंग-अबीर
फागुन मास हो कुमर, होली के दिन
हमरो के स्वामी रहितय, खेलितौं रंग-अबीर
चैतहि मास गे कनियां, फूलय बंगटेस
फूल फूलिय गेल गे कनियां, बदन तोहार
एते दिन कहलऽ तहूँ, छलऽ अज्ञान
आब किछु बजबऽ हो कुमर, पिता के पढ़बऽ गारि
बैसाख मास गे कनियां, गरमी के दिन
हमरो के कनियां रहितय, बेनियां दितै डोलाय
बैशाख मास हो कुमर, गरमी के दिन
हमरो के स्वामी रहितय, अंचरा दितौं घुमाय
जेठ मास गे कनियां, अन्हड़ गे बिहारि
स्वामी तोहर डूबि मरलौ, कंकरपुर के धार
झूठ तौं बजै छऽ हो कुमर, झूठ तोहर बात
हमरो के स्वामी मरितै, फुटितै गज मोतीहार
जल थल नदिया हो कुमर, बहितै सिनुरक धार
अखाढ़हि मास गे कनियां, बंगला रचि छरायब
हमरो के कनियां रहितय, कहितौं सबरंग बात
अखाढ़ मास हो कुमर, खिड़की रचि कटायब
हमरो के स्वामी रहितय, करितौं सबरंग प्यार

साओन मास गे कनियां, झूला के दिन
हमरो के कनियां जे रहितै, झूला लितौं लगाय
साओन मास हो कुमर, झुला के दिन
हमरो के स्वामी रहितय, झूला दितौं झुलाय
भादव मास गे कनियाँ, निसि अन्धी राति
आसिन मास गे कनियां, पूरलौ बारहमास
तइयो नै चिन्हले गे कनियां, स्वामी अपन
कोने रंग भइया हो, कोने रंग बहीन
कोने रंग परदेशिया हो कुमर, चिन्हलौं ने अपन
गोरे रंग भइया हो कनियां, गोरे रंग बहीन
श्यामल रंग परदेशिया कनियां, चिन्हले ने अपन

गीत-5

कृष्ण अपने चललनि मधुबन गे, खेबै हम जहर गे ना
कृष्ण चलला अखाढ़ मास, साओन झहरय दिन राति
भादब लगै छै बड़ भयाओन गे, खेबै हम जहर गे ना
असिन आस लगअ लिऐ, कातिक किछु नहि केलिऐ
अगहन रुसि हम जेबै नइहर गे, खेबै हम जहर गे ना
पूस सीरक भरायब, माघ झाड़ि कऽ ओछायब
फागुन फागु खेलायब दिन चारि गे, खेबै हम जहर गे ना
चैत फुल फुलायल, बैसाख चिट्ठियो नहि आयल
जेठ पूरि गेलै बारह मास गे, खेबै हम जहर गे ना

गीत-6

चैत मे बेली फूलल, बैसाखमे दुइ फूल यो
जेठमे सन्ताप लागल, चढ़ल मास अखाढ़ यो
साओन मे मेघ झड़ी लगाओल, भादब राति अन्हार यो
आसिन मे घर देवता नोतब, कातिक पुनीत नहाएब यो
अगहनमे घर सारिल आबि गेल, पूरसमे हम जायब यो
माघमे ब्रज बाल औता, फागुन अबीर उड़ायब यो

गीत-7

चानन रगड़ू सोहागिन हे, गले फूलक हार
सिन्दुर सऽ मांग भरा दय हो, शुभ मास अषाढ़
तइयो ने आय राजा भरथरी, रानी सुन मोर बात
दय दऽ भीख जोगी के, जोगी छोड़ू मोरा द्वार
मृग मारन राजा जइहें, आहो वनमे शिकार
साओन के दुख दाओन हे, दुख सहलो ने जाय
ईहो दुख परियहु कुबजी के, मोर कन्त राखल लोभाय
आसिन आस लगाओल हो, आसो ने पूरल हमार
तइयो ने आए राजा भरथरी ...
कार्तिक के पूर्णिमा, सभ सखि गंगा नहाए
सभ सखि पहिरे पीताम्बर, शुभे गुदरी पुरान
तइयो ने आए राजा भरथरी ...
अगहन अग्र सोहाओन हो, पहीरि सब रंग चीर
चीड़ब फारब अंचरबा, फाटल कोमल शरीर
पूसहिं तूस भरत जी संग हो, हम करब प्रणाम
तइयो ने आए राजा भरथरी ...
माघहिं कँ श्रीपंचमी हो, शिव व्रत तोहार
घूमि फिरि आबे मंदिरबा हो, शिव व्रत तोहार
फागुन फगुआ खेलायब हो, घोरब अतर गुलाब
तइयो ने आए राजा भरथरी ...

चैतहि अमुआ मजरी गेल हो, महु गेल पतझार
बीछि-बीछि हार बनाएब हो, भेजब राजाजी के पास
बैसाखहि गरमी लगतु हैं, चहुदिस खिड़की करायब
पिया बिनु निन्द ने लागय, रानी सुनू मोर बात
जेठहि भेंट भरथ जी सऽ हो, पूरी गेल बारहमास
चानन रगडू सोहागिन हे, गले फूलक हार

गीत-8

मास हे सखि सरस अगहन भूजल चूड़ा संग यो
तरल चेचड़ा माछ कुरमुर लागय मोन भरि संग यो
पूस हे सखि अन्न नवका संग मांगुर झोर यो
कबइ कुरमुर दाँत दबइत करय जनजन शोर यो
माघ बदरी जाड़ थरथर काँपय तन बड़ जोर यो
सुख बोआरी खंड लखि कए मन विनोद विभोर यो
मास फागुन मदक मातल बहय पछबा बसात यो
बढ़ल स्वादक माछ टेंगड़ा रान्हल सानल भात यो
चैत हे सखि रोग सभदिस रूप नाना देखि यो
तरल भुन्ना पलइ रान्हल खाइत बड़ सुख लेखि यो
मास हे सखि आबि पहुँचल गरम बड़ बइसाख यो
गेल मन रुचि माछ गामर खंड सभ दिन चाख यो
जेठ हे सखि हे हेठ बरखा मुंड भाकुर पात यो
पड़तु बिसरतु आबि ससरतु कर नवका भात यो
मेघ सखि बरसत अखाढ़ जत रसालक डारि यो
तोड़ि काँचे आम आमिल देल सौरा पाल यो
मास हे सखि आओल साओन भरल अंडा घेंट यो
तरल दही माछ मारा खाथि भरि पेट यो
माछ इचना भेटल कहुना खाय भरलहुँ कोठि यो
मास आसिन देवपूजा शंख घंटा नाद यो
रान्हि रहुआ माछ बइसब पूर्ण भेल परसाद यो
मास कातिक बारि मरूआ बऽड़ तरल-अपूर्व यो

पूरल बारहमास हरिनाथ गाओल सगर्व यो
पूस गोइठा डाहि तापब
माघ्ज्ञ खेसारिक साग यो
फागुन हुनका छिमरि माकरि
चैत खेसारीक दालि यो
बैशाख टिकुला सोहि राखब
जेठ खेरहिक भात यो
अखाढ़ गाड़ा गाड़ि खायब
साओन कटहर कोब यो
भादव हुनको आंठी पखुआ
आसिन मरुआक रोटि यो
कातिक दुख-सुख संगहि खेपब
अगहन दुनू सांझ भात यो

कजरी लोकगीत

गीत-1

बदरा उमड़ि-उमड़ि घन गरजय
बुन्दिया बरिस लागय ना बदरा...
दादुर मोर पपीहा गाबय
जिया उमताबय ना, हो जिया उमताबय ना बदरा...
बिरहक आगि कुहुकि कुहुकाबय
बइरी कोइलिया ना, हो बइरी कोइलिया ना बदरा...
पिउ के पाती लिखब हम कत विधि
तइयो ने पिघलय ना, हो तइयो ने पिघलय ना बदरा...
कन्त हमर हियहन्त भेल छथि
दरदो ने जानय ना, हो दरदो ने जानय ना बदरा...

गीत-2

कजरी खेलै लय गेलिऐ
हे तूतक गली
झुमका हेरेलिऐ हे
अमरूदक गली
सासु कहय मार-मार
ननदि करय चुगली
जालिम बलमुआं जोर करै
खींच मारै अंगुली
कजरी खेलै लय गेलिऐ
हे तूतक गली

गीत-3

कहू ने सगुन केर बतिया गे दैया
चारि मास हम आस लगाओल
विरह दगध भेल छतिया गे दैया
अपनो ने आबथि, लिखि ने पठाबथि
केहन कठोर छनि छतिया गे दैया
ककरा सँ हम पतिया लिखायब
के समोधत बतिया गे दैया
देओरा सँ हम पतिया लिखायब
ननदि समोघत बतिया गे दैया
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु
कोना खेपब दिन-रतिया गे दैया

गीत-4

खलखल इजोरिया सखि हे निरमल हे रतिया
हे निरमल रतिया, यमुना तीरे
झूला झुलै छै रे सांवरिया, यमुना तीरे
कदम के डरिया सखि हे लाल रे हिड़ोलबा
हे लाल हिड़ोलबा, यमुना तीरे
सखि हे बाजलै मजुरिया, यमुना तीरे
सजि गोप-गोपिया सखिया भरि गेलै डगरिया
हे भरि गेलै डगरिया, यमुना तीरे
सखि हे उमड़लै नगरिया हे यमुना तीरे
मोहनी मुरतिया सखिया भरलै हे नगरिया
हे भरलै हे नगरिया, यमुना तीरे
शोभय सांवली हे सुरतिया हे यमुना तीरे
खलखल इजोरिया सखि हे निरमल हे रतिया

गीत-5

परबस पड़ल कन्हैया गे दैया
मोहन मुरली बजैया
चैत-बैशाख के रौद लगतु हैं
सभ सखि बेनिया डोलैया। परबस...
जेठ अखाढ़ के बुन्द बरसि गेल
भीजैत हेता कन्हैया गे दैया। परबस...
साओन-भादव के नदिया उमड़ि गेल
खेबथि कृष्ण-कन्हैया गे दैया। परबस...
आसिन-कातिक के पर्व लगतु हैं
सभ सखि गंगा नहैया गे दैया। परबस...
अगहन-पूसक साड़ि लुबुधि गेल
भोगहु ने आयल कन्हैया गे दैया। परबस...

माघ-फागुन के रंग उड़तु हैं
खेलहु ने अयला कन्हैया गे दैया। परबस...

चैतावर लोकगीत

गीत-1

नदिया के तीरे-तीरे मुंगिया बाओल हो श्यामा
मुंगिया जे फड़य घौदे घौद हो श्यामा
घर सँओ बहार भेली सुन्दरि हो श्यामा
चलि भेली मुंगिया तोड़न हो श्यामा
खोंइछा भरि तोड़ल चंगेरी भरि तोड़ल
आबि गेलै मुंगिया रखबार हो श्यामा
छीनि लेल दून्‌ू जउबनमा हो श्यामा
विद्‌यापति धन गाओल हो श्यामा
यौवनकैं लोभे हम अयलहुँ हो श्यामा

गीत-2

चैतक निन्दिया बैरिनियाँ हो रामा
सूतलि छलहुँ घर रे मन्दिरबा
सपनामे एला मनमोहन हो रामा
चैत के निन्दिया बैरिनियाँ
सगरि राति हम जागि गमाओल
बैरिनि भेल कर बेनियां हो रामा
चैत के निन्दिया बैरिनियां
बारह बरस पर रामचन्द्र लउटला
धनी देल विरह बजनियां हो रामा
चैत के निन्दिया बैरिनियां
जौं तोहे आहे सुन्दरि मोर अनुरागिनि
धरहमे भेष जोगिनियां हो रामा
चैत के निन्दिया बैरिनियां
नहि हम सोहागिनि नहि अनुरागिनि
मरब जहर बिख खाय हो रामा
चैत के निन्दिया बैरिनियां

गीत-3

सीया के संग मन हारि हो रामा
राम रमत बगिया मे
वन उपवन सभ हरित भेल
हरित पल्लव दुनू डरिया हो रामा
राम रमत बगिया मे
बेलि-चमेली जूही फुलायल
कुंजनमे फूलय अड़हुलिया हो रामा
राम रमत बगिया मे
केओ सखि लोढ़य बेली चमेली
केओ सखि हार गंथाबे हो रामा
राम रमत बगिया मे
हार गांथिय सीया राम पहिराओल
सीताराम जिया हरसाबे हो रामा
राम रमत बगिया मे

गीत-4

चढ़त चैत चित चंचल कि और चित चंचल हो
हो रे, कुसुम लेल पतझार श्याम नहि आयल हो
ककरा सँ चिठिया लिखाएब, ककरा पठायब हो
हो रे, के कहत मोनक बात, खबरिया हम जानब हो
कैथा सँ चिठिया लिखाएब, हजमा पठाएब हो
हो रे, हजमे कहत निजबात, खबरि हम जानब हो

गीत-5

फूल लोढ़य चललि मलिनियाँ रामजी के बगिया
खोंइछा भरि लोढ़लो, दउरिया भरि तोड़ली
आबि गेल राजा रखबरबा हो रामा
खोंइछा भरि छिनलो, दउरिया भरि छिनलो

आँचर धय झिकझोड़ल हो रामा
छोड़ू-छोड़ू आहो राजा, अँचरा के खुटबा
रोबति होयतै गोदी के बलकबा हो रामा
घरबामे होयतौ मालिन सासु गे ननदिया
खेलबति होयतौ गोदी के बलकबा हो रामा
सासु मोर आन्हर ननदि ससुररिया
पियाजी रहए परदेशिया हो रामा

गीत-6

अंगुरी मे डसलक नगिनियां हो रामा
के मोरा जायत बैद बजायत, के मोरा हरत दरदिया हो रामा
के मोरा जायत पलंगा ओछायत, के मोरा पिया के बजायत हो रामा
बाबा मोरा जायत बैद बजायत, अम्मा मोरा हरत दरदिया हो रामा
ननदि मोरा जायत पलंगा ओछायत, दिओर पिया के बजायत हो रामा
देबउ रे कागा दही चूड़ा भोजन, हमरो समाद नेने जाह हो रामा
तोहरो बलमुजी के चीन्हियौ ने जानियौ, कोना समाद नेने जाय हो रामा
हमरो बलमुजी के मुठी एक डाँर छनि, दुअरे चनन केर गछिया हो रामा

गीत-7

चैत मास पिया भेल जोगिया हो रामा
चैत मास पिया भेल जोगिया
जौं हम जनितौं पिया हएता जोगिया
बन्हितौंमे रेशमक डोरिया हो रामा
चैत मास पिया भेल जोगिया
रेशमक डोरिया टुटीय फाटि जयतइ
बान्हितौं मे अंचरा लगाय हो रामा
चैत मास पिया भेल जोगिया
जाहि बाटे जाइ एक रघुवंशी
तीर धनुष नेने हाथ हो रामा

चैत मास पिया भेल जोगिया
भनहि विद्यापति सुनू हे सहेली सभ
फेर घूमि अओताह राम हो रामा
चैत मास पिया भेल जोगिया

मलार लोकगीत

गीत-1

मधुवन रास रचैया ने दइया, मधुवन रास रचइया
सब सखि मिलि-जुलि गंगा नहइया
चीर लए भागल कन्हैया गे दइया, मधुवन रास रचइया
हम सखियन सब लाजे मरतु हैं
कदमक गाछ कन्हैया गे दइया, मधुवन रास रचइया
चीर लए भागथि आंगुर देखाबथि
हंसि मुसुकाथि कन्हैया गे दइया, मधुवन रास रचइया
झट दए दौड़ल कुंवर कन्हैया
लेलहु सखि के चुनरिया गे दइया, मधुवन रास रचइया
कृष्ण श्याम प्रभु तुम्हरे दरस के
कृष्णजी मनमे बसइया गे दइया, मधुवन रास रचइया

गीत-2

लिखब मे प्रभु जी के पतिया हे ऊधो
अपनो ने आए पतियो ने भेजे
ना भेजे कुशल उदेशिया हे ऊधो
ओतहि रहत यशोदा जी के नन्दन
कुबजी हरल गति मतिया हे ऊधो
कोना हम रहब हरिजी के छोड़ब
ना रहब गोकुल अकेलिया हे ऊधो
लिखब मे प्रभु जी के पतिया हे ऊधो
बरिसन चाहे बदरबा हे ऊधो
खन बरिसय खन गरजय
खन-खन बहय बयरबा हे ऊधो
झिंगुर दादुर शोर करय
विरह दग्ध भेल छतिया हे ऊधो

चारि मास हम आस लगाओल
घर नहि आय पियरबा हे ऊधो
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के
घुरि फीरि करत निहोरबा हे ऊधो

गीत-3

आली री, उमड़ि-घुमड़ि घन आबय
दादुर मोर शोर कर चहुँ ओर
बिजुरी चमकि डराबय
छन-छन पल-पल कल ने पड़त हैं
जिया रहि-रहि मदन सताबय
हरि निरमोही भेला हृदय कठोर
परबस भय तरसाबय
ककरा कहब के जाय समझाबय
विरह वारिधि सँ बचाले
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के
राधा हरि गुण गाबय

गीत-4

बनमे करथि बेहाल बिहारी
लय कर चीर कदम चढ़ि बैसल
हम जल बीच उघारी, वनमे...
जलसँ विनती राधा करथिन
चीर दिअ ने मुरारी, वनमे...
हम चीर तऽ दै छी हे राधा
जलसँ होउ ने बहारी, वनमे...
पुरैन-पात पहिरि राधा निकललि
कृष्ण बजाबथि ताली, वनमे...

सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के
कृष्ण बड़ा कुटचाली, वनमे...

गीत-5

ककर नारी हम बाला हे ऊधो
ककर नारी हम बाला
हरि मधुपुर गेल, परम कठिन भेल
दय गेल विहरक भाला
हे ऊधो, ककर नारी हम बाला
बड़ अनुचित भेल, सुपुरुष तेजि गेल
तेजि गेल मदन-गोपाला
हे ऊधो, ककर नारी हम बाला
निन्द हरित भेल, पहु परदेश गेल
चित लेल नन्दक लाला
हे ऊधो, ककर नारी हम बाला

बिरहा लोकगीत

गीत-1

कोन मास बिरहा जनम लेलकै रओ जोड़ीदार
कि कोन मास भेलै छठिहार
कोन महीना परेमियां डेगा-डेगी देलकै, रओ की
कोन मास भेलै परचार?
अगहन मास परेमियां बिरहा रओ जनम लेलकै
पूस मास भेलै छठिहार
माघ महिना परेमियां डेगा-डेगी देलकै, रओ की
फागुन मास भेलै परचार।

गीत-2

केये तोरा देलकौ परेमियां सीकी कोर धोतिया
रओ केये तोरा देलकौ धेनू गाय
केये तोरा देलकौ परेमियां अपना कोखिक बेटिया
रओ केये तोरा देलकौ अंगुरी धराय?
सार मोरा देलकै परेमियां सीकी कोर धोतिया
रओ ससुर मोरा देलकै धेनू गाय
सासु मोरा देलकै परेमियां अपना कोखिक बेटिया
रओ सरहोजि देलकै अंगुरी रे धराय।
किए तोरा देलकौ परेमियां सीकी कोर धोती रओ
रओ किए तोरा देलकौ धेनू गाय
किए तोरा देलकौ परेमियां अपना कोखिक बेटी
रओ किए देलकौ अंगुरी धराय?
पहिरै खातिर देलकै परेमियां सीकी कोर धोतिया
रओ दुधबा खातिर देलकै धेनू गाय
जिनगी के संगी बनाकऽ देलकै अपन बेटिया
रओ तेँ रओ देलकै अंगुरी धराय।

गीत-3

कौन फूल फूले परेमियां धरती रे धरमुआं
रओ कोन फूल फूले असमान
कोन फूल फूले परेमियाँ गंगा माइ के गोदिया
कि खुशी-खुशी रहै भगमान?
दूभी फूल-फूले परेमियां धरती रे धरमुआं
रओ तारा फूल फूले असमान
कमल फूल फूले परेमियां गंगा माइ के गोदिया
रओ खुशी-खुशी रहै भगमान।

गीत-4

कहमा सऽ एलै संगीतबा बर रे बरिअतिया
रओ कीये छिऐ बरबा के नाम
कहमा मे जाकऽ संगीतबा मरबा बन्हेतै
रओ केये ओकरा करतै कन्यादान?
अवध सऽ एलै परेमियां बर रे बरिअतिया
रओ बरबा के नाम छिऐ राम
मिथिला मे जाकऽ परेमियां मरबा बन्हेतै
जनक राजा करतै कन्यादान।

गीत-5

कहमामे ठनकै परेमियां अनका रओ ठनका
कहमामे ठनकै कैला सांढ़
कहमामे ठनकै परेमियां धोबिन केर बेटिया
रओ कहमामे उठै घमसान?
मेघबामे ठनकै परेमियां अनका रओ ठनका
कि गाड़-जेड़मे ठनकै कैला सांढ़
घाट पर ठनकै परेमियां धोबिन केर बेटिया
रओ पलंगा पर उठै घमसान।

जट-जटिन लोकगीत

गीत-1

भैया मलहबा रे, नैया लगा दे नदिया के पार
बहिनी बटोहिन गे, खोजि लही दोसर घटवार
हम तोरा देबौ एबा-खेबा, लोटा देबौ इनाम
भैया मलहबा रे, नैया लगा दे नदिया के पार
हम नै लेबौ एबा-खेबा, नै लेबौ इनाम
बहिनी बटोहिन गे, खोजि लही दोसर घटवार
हम तोरा देबौ कटनी मरिया सोनमा देबौ उतारि
भैया मलहबा रे, नैया लगा दे नदिया के पार
हम नै लेबौ कटनी मरिया, नै सोना उतारि
बहिनी बटोहिन गे, खोजि लही दोसर घटवार
जटबा देबौ एबा-खेबा, जटनी देबौ इनाम
भइया मलहबा रे, नैया लगा दे नदिया के पार
हम नै लेबौ एबा-खेबा, जटनी लेबौ इनाम
बहिनी बटोहिन गे, उतारि देबौ नदिया के पार।

गीत-2

धोबिया के अंगना मे छापर-छुपर पनिया
ताहि मे नहाइ छै फल्लाँ बभना
धोतीयो ने खीचै छै
जनउओ ने मजै छै
चानन करै छिलकौये हो राम
राम, राँड़ी बभिनियाँ हरबा जोतै छै
पानी बिनु पड़लै अकाले हो राम
फल्लाँ बाबू के धिया-पुता
माँड़ लय कनै छै
खुद्दी लय कनै छै
दयो ने लगै छऽ हो इनर भगवान

राम, चर सुखलै चांचर सुखलै
सुखि गेलै सगर संसार
राम, पानी बिनु पड़लै अकाले हो राम
जन के धिया-पुता कल्ह-मल्ह करै छै
मालिक निदर्दी ने मोढ़ियो खोलै छै
राम, गामक पटबरिया झूठे-मुसे लीखै
सड़ल खेसारि बोनि तोलै हो राम
ओकरे पापे पनियाँ ने होइ छै
राम, पानी बिनु पड़लै अकाले हो राम।

गीत-3

सिनुरा जखन कहलियौ रे जटा
सिनुरा किए ने लयले रे
सिनुरा जखन अनलियौ गे जटनी
कोठी पर कऽ धयले गे
हरि-हरि बाली समैया अभगली
सिनुरा किए ने लगौले गे
टिकुली जखन कहलियौ रे जटा
टिकुली किए ने लयले रे
हरि-हरि बाली समैया अभगला
टिकुली किए ने लयले रे
टिकुली जखन अनलियौ गे जटनी
चक्का पर कऽ धयले गे
हरि-हरि बाली समैया अभगली
टिकुली किए ने सटले गे
साड़ी जखन मंगलियौ रे जटा
साड़ी किए ने किनले रे
हरि-हरि बाली समैया अभगला
साड़ी किए ने किनले रे
साड़ी जखन किनलियौ गे जटनी

पेटी मे कऽ धयले गे
हरि-हरि बाली समैया अभगली
साड़ी किए ने पहिरले गे
आंगी जखन मंगलियौ रे जटा
आंगी किए ने सियौले रे
हरि-हरि बाली समैया अभगला
आंगी किए ने सियौले रे
आंगी जखन सियौलियौ गे जटनी
मुहपोछनी मे कऽ धयले गे
हरि-हरि बाली समैया अभगली
आंगी किए ने पहिरले गे
नथिया जखन कहलियौ रे जटा
नथिया किए ने गढ़ौले रे
हरि-हरि बाली समैया अभगला
नथिया किए ने गढ़ौले रे
नथिया जखन गढ़ौलियौ गे जटनी
नाकक भूर मुनौले गे
हरि-हरि बाली समैया अभगली
नथिया कोना पहिरते गे।

गीत-4

हाथी परक हौदा बिकाय गेल हे जटिन
तोरे रे बिनु
तोरे बिनु हमहूँ बेकल भेलहुँ हे जटिन
तोरे बिनु महल उदास भेल हे जटिन
तोरे रे बिनु
तोरे बिनु अंगना मे दुभिया जनमल हे जटिन
सेजिया पर मकड़ा बियाय गेल हे जटिन
तोरे रे बिनु
तोरे बिनु देहिया सुखायल हे जटिन।

गीत-5

दूर-दूर रे जटा
दूर रहिहें रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा
राख छाउर रे जटा
बैगन भाँटी रे जटा
जुलुफी समारिते चल अबिहें रे जटा
दूर-दूर हे जटिन
दूर रहिहऽ हे जटिन
सड़ल भाते हे जटिन
सड़ल तीमन हे जटिन
सड़ल भांटी हे जटिन
जुटिया गुहैते चल अबिहऽ हे जटिन
दूर-दूर रे जटा
दूर रहिहें रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा
राख-छाउर रे जटा
बैगन - भांटी रे जटा
धोतिया पेन्हैते चल अबिहें रे जटा
दूर-दूर हे जटिन
दूर रहिहऽ हे जटिन
सड़ल भात हे जटिन
सड़ल तीमन हे जटिन
सड़ल भांटी हे जटिन
मनटिकबा पेन्हैते चल अबिहऽ हे जटिन।

गीत-6

जाय दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लय जे लयबौ जटिन गहना सनेस
गहना रे जटा तरबाक धूर
घरे रहु रे जटा नयना हजूर
दरबारे रहु रे जटा नयना हजूर
जाय दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लय जे लयबौ जटिन साड़ी सनेस
साड़ी तऽ रे जटा तरबाक धूर
घरे रहू रे जटा नयना हजूर
जाय दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लय जे लयबौ जटिन कंगही सनेस
कंगही रे जटा तरबाक धूर
घरे रहू रे जटा नयना हजूर
दरबारे रहू रे जटा नयना हजूर
जाय दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लय जे लयबौ जटिन सिनूरा सनेस
सिनुरा रे जटा मांग के सिनूर
तेँ घरे रह रे जटा नयना हजूर
दरबारे रहू रे जटा नयना हजूर।

वसन्त लोकगीत

गीत-1

रोपल दाओन फूल लोढ़ियो ने भेल
पिया परदेश गेल देखियो ने भेल
देखलौं मे देखलौं हाजीपुर बजार
बारी रे बंगालिन बेटी खेलय जुआसारि
मरिहौ बंगालिन बेटी तोरो जेठ भाइ
हमरो बालमु जी के राखल लोभाइ
भनहि विद्यापति गाओल वसन्त
ककरहु होइ जनु अमरुख कन्त।

गीत-2

आनि दिअ मोहि प्रात खना
हम नहि जीयब ओहि कंत बिना
जहिया सऽ प्रभु गेलाह विदेश
तहिया सऽ हम जोगिन भेष
चोलिया एक हरि देलनि पठाय
चारूकात हीरामोती देलनि लगाय
खेलइते-धुपइते हरि अयला अंगना
केलि कतेक होएत राति खना।

गीत-3

ककरा संग खेलब ऋतु वसन्त
निरायल फागुन दूर बसु कन्त
उड़ि-उड़ि कागा जाहु बिदेश
हमरो ललाजी के कहब उदेश
चोलिया एक पहु देल पठाय
चारु दिश हीरा-मोती लाल जड़ाय

चोलिया फाटल तारम्तार
विरह सताओल बारम्बार
सूरदास जे गाओल वसन्त
एहि जग बहुरी ने आयल कन्त।

गीत-4

रिमझिम सखि सभ चलली नहाय
तरु उपर चीर सभ देलनि नेराय
यमुना पैसी सखि सब रचथि शृंगार
मने-मन सखि सभ करथि विचार
तेल फुलेल कृष्ण देलथि छीटि
पाछा लागल कृष्ण मारथि पीठि
चलू हे सखि दियनु उपराग
बाट चलैत करथि बटमार
झूठ गोआरिन झूठ तोहर बोल
पलंग सूतल छथि कृष्ण अबोध
भनहि विद्यापति गाओल बसन्त
ककरहु होइ जनु अमरुख कन्त।

फागु लोकगीत

गीत-1

रंग घोरू ने प्रिय मिथिला के गोरी
मिथिला के कुल-रीति एहन थिक
खेलत फागु सबै जोड़ी, रंग घोरू...
किनका हाथ कनक पिचकारी
किनका हाथ अबिर झोरी, रंग घोरू...
रामजी के हाथ कनक पिचकारी
सखियन हाथ अबिर झोरी, रंग घोरू...
खेलत फागु रंग - रस मातल
मिलत गले एक-एक टोली, रंग घोरू..।

गीत-2

होरीमे लाज ने करू गोरी, होरी मे...
हम ब्रजकँ रसिया तो गोरी
करे मिलान इहो जोरी, होरीमे, होरीमे...
जे हमरा सौं होरी नहि खेलय
खेलब रंग बरजोरी, होरीमे, होरीमे...
सूरदास जी कहथि कृष्ण सँ
छुटलनि राधा गोरी, होरीमे, होरीमे...।

गीत-3

तुम्हरे संग नहि खेलब होरी, तुम्हरे संग
फागुन मे हम फगुआ खेलायब
चैत खेलब बरजोरी, तुम्हरे संग...
बैसाखहिमे सखि गरमी लगतु हैं
जेठक गर्म मचे होरी, तुम्हरे संग...
आषाढ़ में सखि रिमझिम वर्षा

साओन सर्व मचे होरी, तुम्हरे संग...
भादवमे सखि निशि अन्धी रतिया
आसिन आस पूरल होली, तुम्हरे संग...
कार्तिक कनत नहि आएल सखि हे
अगहन धान मचे होरी, तुम्हरे संग...
पूसक जाड़ हाड़ मोर कांपे
माघक सर्द मचे होरी, तुम्हरे संग...।

गीत-4

होली कुंजभवनमे खेलतु हैं नन्दलाल
लाले श्याम लाल भेली राधा
लाले सकल बृजबाल, होली कुंजभवनमे...
लाले रंग सब गोपियन रंगाय गेल
लाल भेला भूपाल, होली कुंजभवनमे...
अबीर गुलाल रंग पिचकारी
सब लेलनि कर सम्हारि, होली कुंजभवनमे...
मारतु हैं ताकि - ताकि छतियन पर
चोली भेल गुलजार, होली कुंजभवनमे...
हारि गेली राधा रस दंगलमे
हँसि खेलतु नन्दलाल, होली कुंजभवनमे...
सब सखियन बिच राधा सोहागिन
मानहु बाल मराल, होली कुंजभवनमे...
मधुर रस पिक गण मोहय
सुनत उठय उर ज्वार, होली कुंजभवनमे...
राधा कृष्ण युगल जोड़ी छवि
ऋतु वसन्त विशाल, होली कुंजभवनमे...
नीरस श्याम चरण के चाहत
छोड़ाउ सब जंजाल, होली कुंजभवनमे...।

गीत-5

होरी रंग महलमे खेलत अवध नरेश
अतर गुलाल अबीरक झोरी, लखन सहित जगदीश
आनन्द अति छाय हृदयमे, खेलत अवध नरेश
झालि मृदंग पखावज बाजे
डफली बांसुरी झमकार, होरी रंग महल मे....
गान करत सब सखियन मिलि
ध्यान रहित भेला नरेश
वीणा धुनि कए नारद थकित भयो
ऋषि मुनि सभ धायो, तुरत इन्द्रादि देव सभ आयो
खेलय चाहत फनीश, मही मानो डोलत।

गीत-6

परदेसिया के नारि सदा दुखिया, परदेशिया
चारि महीना के गरमी लगतु हैं
कहियो ने सुतलौं डोला के बेनिया, परदेशिया
चरि महीना बुन्द पड़तु हैं
कहियो ने सुतलौं छेबा के बंगला, परदेशिया
चारि महीना जाड़ लगतु हैं
कहियो ने सुतलौं भरा के सिरका
परदेसिया के नारि सदा दुखिया, परदेशिया।

गीत-7

श्याम रंग दुलहा, दुलहिन गोरी
युग-युग बनल रहय जोड़ी, युग-युग बनल रहय युगल जोड़ी
रामजी के माथे शोभय मुकुटबा
सियाजी के शोभय पटोर जोड़ी, युग-युग बनल रहय युगल जोड़ी
सियाजी के माँग मके शोभय सिन्दुरबा
रामजी के भाल तिलक रोरी, युग-युग बनल रहय युगल जोड़ी
श्याम रंगे दुल्हा दुलहिन गोरी।

गीत-8

माघ मास सिरपंचमी, रंग होरी ओ ब्रज होरी हो
भोर सँ मचय घामार लाल रंग होरी ओ ब्रज होरी हो
ककरा सँ लिखनी लिखाय ककरा पठायब
केये जायत हुनि पास, खबरि हम पायब
कयथे सँ लिखनी लिखायब, हजमा पठायब
देओर जायत हुनि पास, खबरि हम पायब।

गीत-9

बहुरिया खोलू ने केबरिया, अहाँ संग खेलब अबीर
किनका के हाथ कनक पिचकारी, किनका के हाथ अबीर
रामक हाथ कनक पिचकारी, सियाजीक हाथ अबीर
किनका के पहिरन पियर पिताम्बर, किनका के पहिरन चीर
रामजी के पहिरन पियर पिताम्बर, सियाजी के पहिरन चीर।

गीत-10

होरी केये संग खेलब माधव हमरो विदेश
अपनो ने आबथि, लिखि ने पठाबथि
लिखियो ने भेजथि उदेश, होरी केये संग
होरी केये संग खेलब, माधव हमरो विदेश
केये संग रंग मचाउ हे सखि
आब तऽ होरी बीति गेल, होरी केये संग
होरी केये संग खेलब, माधव हमरो विदेश
बृन्दावनमे कुंजगलिन मे
केये मोर करत उदेस, होरी केये संग
होरी केये संग खेलब, माधब हमरो विदेश
राधा करत उदेश, होरी केये संग
होरी केये संग खेलब, माधव हमरो विदेश।

लगनी लोकगीत

गीत-1

दुइ मिलि गेलिऐ हे द्योरे
एसगर एलिऐ रे की
आरे स्वामीनाथ कहमा नराओल रे की
तोहरो के स्वामी हे भौजी बड़ रंग-रसिया
आरे बिजुवन खेलै छऽ शिकारहि रे की
कहमा मारलहुँ हे द्योरे, कहमा नराओल
कओने बिरछी ओठङाओल रे की
बाटहि मारलहुँ हे भौजी, बाटे नराओल
आरे कदम बिरिछ ओठङाओल रे की
एक कोस गेलै गोरी, दुई कोस गेलै
आरे तेसरहि स्वामीनाथ भेटल रे की
जँओ आहे स्वामीनाथ सत के बिअहुआ
आरे आंचरे सँ अगिया उठाबहु रे की
पयर सँ जे उठलै अग्नि, अंचरा पकड़लक
आरे दुनू मिलि खिरलीह अकासे रे की
जँ हम बुझितहुँ हे भौजी, एते छल-बुधिया
आरे अंचरा पकड़ि बिलमाबितहुँ रे की।

गीत-2

नदिया के तीरे-तीरे
वन डोले मीठे-मीठे
शीतल वसन, तन झामर रे की
पिया के लिखल पाती
हहरय मोर छाती
मरद दरद नहि जानय रे की
एक तऽ जे विरहिन

दोसर शरीर खिन
तेसर विरह केर भातल रे की
नदिया के तीरे-तीरे
वन डोले मीठे-मीठे
शीतल वसन तन झामर रे की।

गीत-3

पिया परदेश गेलै, सभ सुख लय गेलै
रोपि गेलै अमुआं के गाछ रे की
फरीय - पकीय अमुआं, अधरस चुबि गेलै
कोना हम रखबै जोगाय रे की
नामी-नामी केशिया मोर, जीव के जंजाल भेलै
अधिक सुरति जीब-काल रे की
एक मोन होइए, जामीन धसि मरितहुँ
नञि तऽ जहर - बिख खइतहुँ रे की
के मोर एहि जग मे हीत-धन होयत
पिया भेल डुमरी के फूल रे की।

तिरहुत लोकगीत

गीत-1

कमल नयन मन मोहन रे
बसु यमुना तीरे
बसिया बजाय मन हरलक रे
चित रहय ने थीर
खन मोहन वृन्दावन रे
खन बसिया बजाय
सन सन रहय अहीं संग रे
बंशीवट धारे
जौं हम जनितौं एहन सन रे
तेजि जयता गोपाले
अपन भरम हम तेजितहुँ रे
सेवितहुँ नन्दलाले
जाय ने क्यो यमुना तट रे
छथि निकट गोपाले
बाँ पकड़ि झिकझोरलनि रे
संग लए ब्रजबाले
जौं जदुपति नहि आओत रे
दह यमुना के तीरे
हमहुँ मरब हरि-हरि कय रे
छुटि जायत पीरे।

गीत-2

जखन चलल बर सुन्दर रे
मन हर्षित भेल
पाछू सँ चन्द्रबदनि धनि रे
आँगुर धए लेल
केयो सखि छत्र छांह देल रे
केयो बेनिया डोलाय
केओ सखि सिन्दूर आर देल रे
केयो मंगल गाबय
पिया पहिरन पीअर धनी लाल रे
जोड़े गेठबन्हन
गोर लागय चलली देव रे
जहाँ आदिभवानी।

गीत-3

माधव जाय केबाड़ छोड़ाओल
जाहि मन्दिर बसु राधा
चीर उघारि अधर मुख हेरल
चान उगल छथि आधा
खीर कपूर पान हम बासल
आर सांठल पकवाने
सगरि रैनि हम बैसि गमाओल
खंडित भेल मोर माने
मथुरा नगर अंटकि हम रहलहुँ
किए ने पठाओल दूती
संग दुइ चारि पथिकसँ मिललहुँ
आलस रहलहुँ सूती
यौवन जोर कला गुन आगरि
से नागरि हम नाही

जाहि हित बन्धु संग रैनि गमाओल
पलटि जाह पुनि ताही
कमल नयन कमलापति चुम्बत
कुम्भकर्ण सन दापे
हरिक चरण धय गाओल विद्यापति
राधा कृष्ण विलापे
सुनू-सुनू कामिनी मालती रे
से आयल पासे
बाम दिशा पहु बैसत रे
पयबह अबकासे
पिउ-पिउ भाखथु पपिहरा रे,
चकइ करू आसा
नवल फुलायलि फुल लतिका रे
खाली भुज पासा
से छन आबि तुलायल रे
करू सकल सिंगारे
आब कहायब कामिनी रे
मोर देइ दुलारे
आजु साजि अलि आओत रे
करू कुमर बखाने
मान टुटत तुअ मातलि रे
नीरस मुख चाने।

अध्याय-6

हिन्दी लोकगीत

भारत की संस्कृति का सैद्धांतिक और परिनिष्ठित स्वरूप है। यहाँ लोकगीतों के रचियाता एवं उसकी रचना प्रक्रिया का कोई निश्चित माप-दंड नहीं रहता। किगी लोकगीत की एक कड़ी एक व्यक्ति के द्वारा तो दूसरा कड़ी दूसरे के द्वारा रची हुई हो सकती है। रचना प्रक्रिया में भी कोई निश्चित शास्त्रीयता और वैज्ञानिकता का समंजस्य नहीं मिलता परंतु इन सारे ऊहापोहों से यक कटाई नहीं समझना चाहिए कि लोकगीत पूर्णतः अनियमित, अमर्यादित एवं अनियंत्रित मूर्खों कि अनपढ़ रचना है।

लूकगीत लोक साहित्य का सर्वाधिक सशक्त अंग (विधा) है। कोई भी अनुष्ठानिक कार्य के लिए लोकगीत अनिवार्य है, भले ही यह परिवर्तित रूप में गे क्यों न हो।

अन्य लोकगीत कि भांति हिन्दी लोकगीत के वाहक भी स्त्री एवं पूरूष दोनों वर्ग है। स्त्री-वर्ग के गीत प्रायः आनुष्ठानिक होते है। देवी-देवता, चौहट, कजरी या जाँता - चक्की के गीतों के वाहक प्रायः स्त्रियाँ ही होती है। लोकगीत गायकों कि भाव भंगिमाएँ एवं हस्तादि अंग संचालन भी अभिव्यक्ति शैली के अंतर्गत आता है। लोकगीतों के गायन अभिव्यक्ति में कुत्छ वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग मिलता है जिससे गेयता में सहयोग मिलता है। इनमे ढोलक और झाल प्रमुख होता है। कभी-कभी जोड़ी, करताल, डफ और हारमोनियम का भी उपयोग किया जाता है परंतु ये सारे वाद्य यंत्र पुरूष वेर्ग के लोकगीतों में ही प्रयुक्त होते हैं। स्त्रियाँ प्रायः बिना वाद्य यंत्र के ही गाती हैं। कभी कभार ढोलक बाजा लिया गया तो काफी है अन्यथा सारे संस्कार और अनुष्ठानिक गीत बिना वाद्य बिना वाद्य यंत्र के ही गाये जाते हैं। पेशा या जाती गीत तो काम करते समय गाये जाने के कारण किसी प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। फिर भी अलग-अलग लोकगीतों कि अपनी परंपरित अभिव्यक्ति-शैली भी रहती ही है।

लोकगीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं गये जाते हैं बल्कि इनमें लोकजीवन कि गहरी आस्था टिकी रहती है। यहाँ तक कि विशुद्ध मनोरंजन के लिए गाए जाने वाले लोकगीत भी अनुष्ठान के समय ही गाये जाते हैं जिसमें समाजशास्त्रीय तत्व और तत संबंधी आस्थाएँ निहित रहती है। लोक गीतों में लोकजीवन कि आस्था इतनी गहरी होती है, इतना प्रवल होती है कि कुल देवता, ग्राम देवता को गीतों के अतिरिक्त कोई कार्यारंभ करते समय गीतों का गाया जाना स्व्भविक देखा जाता है।

अन्य लोकगीत कि तरह हिन्दी लोकगीत को भी निम्न भागों में बाँटा जा सकता है:- (क) संस्कार गीत; (ख) धार्मिक अनुष्ठानिक, पूजा-पाठ से संबन्धित गीत; (ग) ऋतु गीत; (घ) उद्योग अथवा श्रम गीत; और (ड़) जाती गीत ।

हिन्दी लोकगीत के संकलन के क्रम केन जो भी लोकगीत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिला उसे संकलित कर लिया है ताकि आनेवाली पीढ़ी को भी हमारी संस्कृति विरासत में मिल सके।

सोहर

गीत-1

हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२
हुआ रंगमहल में शोर सुनकर दाई चली
रंगमहल में नारा छिनाने लगी
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

हुआ रंगमहल में शोर सुनकर सासू चली
रंगमहल में चरुआ चढ़ाने लगी
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

हुआ रंगमहल में शोर सुनकर जिठनी चली
रंगमहल में पीपर पिसाने लगी
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

हुआ रंगमहल में शोर सुनकर ननदी चली
रंगमहल में छटनियाँ लिखाने लगी
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

हुआ रंगमहल में शोर सुनकर देवर चले
रंगमहल में वंशी बजाने लगे
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

हुआ रंगमहल में शोर सुनकर सखियाँ चली
रंगमहल में मंगल गवाने लगी
बजो शंख घड़ियाल, लियो कृष्ण अवतार
यदुवंशी के घर में उजाला हुआ
हुए देवकी के लाल, यशोदा जच्चा बनी-२

गीत-2

माथे लगी बेंदी, हाथों में लगी मेंहदी-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली
मेरी सासू के अरमान पूरे हुए, और
चरुवे की घड़ी में लालन हुए
मेरी प्यारी सासू को कंगन चाहिए-2

प्यारी सी जच्चा सजन संग चली.

माथे लगी बेंदी, हाथों में लगी मेंहदी-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली
मेरी जिठनी के अरमान पूरे हुए, और
पिपरी की घड़ी में लालन हुए
मेरी प्यारी जिठनी को हरवा चाहिए-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली.

माथे लगी बेंदी, हाथों में लगी मेंहदी-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली
मेरी ननदी के अरमान पूरे हुए, और
छठी की घड़ी में लालन हुए
मेरी प्यारी ननदी को झाला चाहिए-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली.

माथे लगी बेंदी, हाथों में लगी मेंहदी-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली
मेरे देवर के अरमान पूरे हुए, और
वंशी की घड़ी में लालन हुए
मेरी प्यारे देवर को घड़ियाँ चाहिए-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली.

माथे लगी बेंदी, हाथों में लगी मेंहदी-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली
मेरी सखियों के अरमान पूरे हुए, और
मंगल की घड़ी में लालन हुए
मेरी प्यारी सखियों को लड्डू चाहिए-2
प्यारी सी जच्चा सजन संग चली.

गीत-3

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना-2
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

सासू हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
मम्मी भी दौड़ी आएगी चरुवे के वास्ते
दोनों को नेग देना न मन घटाना
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना-2
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

जिठनी हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
भाभी भी दौड़ी आएगी पिपरी के वास्ते
दोनों को नेग देना न मन घटाना
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना-2
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

ननद हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
बहना भी दौड़ी आएगी छठी के वास्ते
दोनों को नेग देना न मन घटाना
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना-2
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

देवर हमारे आयेगें मतलब के वास्ते
भईया भी दौड़े आएगें वंशी के वास्ते

दोनों को नेग देना न मन घटाना
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना-2
जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

गीत-4

क्या किए गोरी गगरिया के मोती-2
एक शेर मोती मैंने सासू को दीन्हें
लालन के चरुआ चढाई, गगरिया के मोती

क्या किए गोरी गगरिया के मोती-2
एक शेर मोती मैंने जिठनी को दीन्हें
लालन की पिपरी पिसाई, गगरिया के मोती

क्या किए गोरी गगरिया के मोती-2
एक शेर मोती मैंने ननदी को दीन्हें
लालन की छठी लिखाई, गगरिया के मोती

क्या किए गोरी गगरिया के मोती-2
एक शेर मोती मैंने देवर को दीन्हें
लालन की वंशी बजाई, गगरिया के मोती.

गीत-5

ले लूँगी भाभी रानी से कँगना-२

कँगना-कँगना मत कर ननदी
आने न दूंगी आँगना, भाभी रानी से कँगना
अँगना क्या भाभी मेरी तेरे बाप का
मेरे बाप का अँगना रे भाभी रानी से कँगना

ले लूँगी भाभी रानी से कँगना-२

अँगना-अँगना मत कर ननदी
छूने न दूंगी पलना, भाभी रानी से कँगना
पलना क्या भाभी मेरी तेरे भतीजे का
मेरे भतीजे का पलना रे भाभी रानी से कँगना

ले लूँगी भाभी रानी से कँगना-२

पलना-पलना मत कर ननदी
छूने न दूंगी लालना, भाभी रानी से कँगना
ललना क्या भाभी मेरी तेरे वीरन का
मेरे वीरन का ललना रे भाभी रानी से कँगना

मैं हारी तू जीती ननदिया,
ले जाओ तुम ये कंगना
ले लूँगी भाभी रानी से कँगना-२.

गीत-6

रुपईया मागें ननदी लल्ले की बधाई-२

ये तो रुपईया मेरे ससुर की कमाई
अठन्नी लैलो ननदी लल्ले की बधाई
रुपईया मागें ननदी लल्ले की बधाई-२

ये तो अठन्नी मेरे जेठ की कमाई
चवन्नी लैलो ननदी लल्ले की बधाई
रुपईया मागें ननदी लल्ले की बधाई-२

ये चवन्नी मेरे राजा की कमाई
दो अन्नी लैलो ननदी लल्ले की बधाई
रुपईया मागें ननदी लल्ले की बधाई-२

दो अन्नी मेरे देवर की कमाई
दो डंडा लैलो ननदी लल्ले की बधाई
रुपईया मागें ननदी लल्ले की बधाई-२.

गीत-7

कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
सासू बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा
चरुआ हमीं से चढवा लो, गोरी मानो कहना

कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
भाभी बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा
पिपरी हमीं से पिसवा लो, गोरी मानो कहना

कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
साली बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा
छठी हमीं से लिखवा लो, गोरी मानो कहना

कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
साला बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा
वंशी हमीं से बजवा लो, गोरी मानो कहना

मेंहदी गीत

गीत-1

मेंहदी बोवन मैं गई जी कोई छोटे देवर के साथ
मै बोये बिगे डेडसौ देवर न बिगै चार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

मेहंदी सिचन मैं गई जी कोई छोटे देवर के साथ
मैं सिन्चे बिगे डेडसौ देवर न सिंचे चार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

मेंहदी काटन मै गई जी कोई छोटे देवर के साथ
मैं काटे बिगे डेडसौ देवर न बिग चार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

मेंहदी छानन मैं गई जी कोई छोटे देवर के साथ
मैं छाने बिगे डेडसौ देवर न बिगे चार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

मेंहदी घोलन मै गई जी कोई छोटे देवर के साथ
मै घोला बिगे डेडसौ देवर न बिगे चार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

मेंहदी लगावन मै गई जी कोई छोटे देवर के साथ
देवर रचाई छोटी आंगली भाभी ने दोनो हाथ
मेंहदी रंगे भरा जी राज

देवर दिखावे अपनी माँ ऐ न भाभी का पिया परदेष
पो पाटी तडका हुआ जी कोई गई तेली के पास
मेंहदी रंगे भरा जी राज

तेली बेटा तेल दे जी कोई आज जगे सारी रात
आज बडी का ओसरा जी कोई करे सोलह सिंगार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

टगटग महलों चड़ गई जी-, मेरा जबरक दिवला हाथ
दिवला धरा दीवार पर जी खड़ी पलंग के पास
मेंहदा रंगे भरा जी राज

कहो तो साजन सोई सा कहो तो पाछी जाऊं
जाओ तो सुख सा सोई से रहो तो बैरन रात
मेंहदी रंगे भरा जी राज

टगटग मेहला उतरी मेरे जबरक दिवला हाथ-
छोटी पूछे ऐ बड़ी कहो रात की बात
मेंहदी रंग भरा जी राज

पिया पर पत्थर पड़ो सेजा में पड़ो अंगार
बड़ी कहव ऐ छोटी कोई कर सोहल सिंगार
मेंहदी रंगे भरा जी राज

हाथ साजन दे दिया करली मन की बात
टगटग मेहला उतरी मेरा जबरक दिवला हाथ-
मेंहदी रंग भरा जी राज

गीत-2

अम्बे की मेंहदी रचनी। गौरा की मेंहदी रचनी।
किन तेरे बाग लगाए और कौन सींचन जाए।।
म्हारै बाबा बाग लगाए, दादी सींचन जाए।।
अम्बे...

किसने पिसाए पात री, किसयाँ के रच गए हाथ री।
म्हारै ताऊ पिसाए पात री, ताई के रच गए हाथ री।।
अम्बे...

अम्बे की मेंहदी रचनी। गौरा की मेंहदी रचनी।
किन तेरे बाग लगाए और कौन सींचन जाए।।
म्हारै पापा बाग लगाए, मम्मी सींचन जाए।।
अम्बे...

किसने पिसाए पात री, किसयाँ के रच गए हाथ री।
म्हारै चाचा पिसाए पात री, चाची के रच गए हाथ री।।
अम्बे...

अम्बे की मेंहदी रचनी। गौरा की मेंहदी रचनी।
किन तेरे बाग लगाए और कौन सींचन जाए।।
म्हारै भईया बाग लगाए, भाभी सींचन जाए।।
अम्बे...

किसने पिसाए पात री, किसयाँ के रच गए हाथ री।
म्हारै जीजा पिसाए पात री, दीदी के रच गए हाथ री।।
अम्बे...

गीत-3

मेरी मेंहदी के हरे हरे पात,
सांवरिया मेंहदी रंग भरी।।
गोरी किन तुझे मेंहदी मंगा दई,
और किसको मेंहदी का चाव।।
सांवरिया मेंहदी....

मेरे ससुरा जी ने मेंहदी मंगाइयाँ,
मेरे जेठा जी ने मेंहदी मंगाइयाँ,
मेरी सासू जी को मेंहदी का चाव,
मेरी जिठनी जी को मेंहदी का चाव।
सांवरिया मेंहदी....

गोरी किन थारे हाथ रचाइयाँ,
और कौन थारा निरखन हार।।
सांवरिया मेंहदी....

मैं तो ओढ़ पहर पनियां चली,
सखि हाथों में चूड़ा काँच का,
थारी खूब बनी तकदीर।।
सांवरिया मेंहदी....

मेरी मेंहदी के हरे हरे पात,
सांवरिया मेंहदी रंग भरी।।
गोरी किन तुझे मेंहदी मंगा दई,
और किसको मेंहदी का चाव।।
सांवरिया मेंहदी....

मेरे देवर जी ने मेंहदी मंगाइयाँ,

मेरे ननदोई जी ने मेंहदी मंगाइयाँ,
मेरी देवरानी जी को मेंहदी का चाव,
मेरी ननद जी को मेंहदी का चाव।
सांवरिया मेंहदी....

गोरी किन थारे हाथ रचाइयाँ,
और कौन थारा निरखन हार।।
सांवरिया मेंहदी....

मैं तो ओढ़ पहर पनियां चली,
सखि हाथों में चूड़ा काँच का,
थारी खूब बनी तकदीर।।
सांवरिया मेंहदी....

गीत-4

मोरा सैयाँ अभागा न जागा ---
नकबेसर कागा ले भागा

हाय सैंयां अभागा ना जागा,
उड़उड़ कागा मोरी बिन्दिया पे बैठा-
अरे मोरे माथे का सब रस ले भागा,
नकबेसर कागा ले भागा

अरे मोरा सैंयाँ अभागा ना जागा,
उड़.-- उड़ कागा मोरी नथुनी पे बैठा-
मोरे होंठ्वा का सब रस ले भागा,
नकबेसर कागा ले भागा

जुल्मी सैंयाँ अभागा ना जागा,
हाय राम नकबेसर कागा ले भागा

सुन सखी मोरा सैंयाँ अभागा ना जागा,
उड़उड़ कागा मोरे करधन पे बैठा-
पापी जोबना का सब रस ले भागा मोरा
अरे नकबेसर कागा ले भागा
मोरा सैंयां अभागा ना जागा

जेवनार गीत

गीत-1

रुकमिनी जेवनार बनाए, मकसूदन जेमन आए जी।
सोभित रतन जड़ाओ कुंडल, मोर मकुट सिर छाजहिं॥1॥
केसर तिलक लिलार सोभित, उर बयजन्तरी माल हे।
बाँहे बिजाइठ सोबरन बाला, अँगुरी अँगुठी सोहहिं॥2॥
सेयाम रूप मँह पीयर बसतर, चकमक झकझक लागहिं।
कनक कंकन, चरन नेपुर, रूप काहाँ लौं बरनउँ॥3॥
जिनकर रूप सरूप मुनिजन, मनहिं मन नित गावहिं।
झारि बिछौना, लाइ झारी सब के पाँव धोवावहि॥4॥
कनक, कलसबा, सुन्नर झारी, गिलास दय आगे धरयो।
अंजुल[9] जोरी विनय करि के, सभें के पाँत बइठावहि॥5॥
कनक थारी में रुचिर ओदन दाल फरक परोसहिं।
सुन्नर भोजन परसि परसि, घीउ ऊपर ढरकावहि॥6॥
साग, बैंगन, अलुआ मूरी, कटहर, बड़हर परोसहि।
अदरख, अमड़ा, अरु करइला, इमली चटनी लावहिं॥7॥
कदुआ, ककड़ी अउर खीरा, राइ दही रहता बनो।
बारा, बजका आउ तिलौरी, हरखि पापर देइ दियो॥8॥
अदउरी, दनउरी आउर मेथौरी, हरखि दही आगे धरयो।
देइ अचमन जल गँगा के, बाद सभे बीरा दियो॥9॥
खाइ बीरा हँसि हँसि बोलथि हरि रुकमिनी का चही
देऊँ परेम परगास हमरा, हाथ जोरि बिनति करी॥10॥

गीत-2

गाजल से पाँव पखारल चनन पीढ़ा बिछावल, कि हाँ जी॥1॥
झारी के झारी गँगाजल पानी, सोने के कलस धरावल कि हाँ जी।
बामे हलधर दाहिन जदुपत, सभ गोवारन सँघ आवल कि हाँ जी॥2॥
नारद आवल बेनु बजवात, बरम्हा बेद उचारे, कि हाँ जी।
सभ सुन्नरि सभ गारी गावत, मुसकत सीरी गिरधारी, कि हाँ जी॥3॥
बसमती चाउर के भात बनावल, मूँग रहर के दाल, कि हाँ जी।
कटहर, बड़हर, कद्दू, करइला, बैंगन के तरकारी, कि हाँ जी॥4॥
रतोआ, खटाइ, अचार, मिठाई, चटनी खूब परोसे, कि हाँ जी।
बारा, पापड़, मूँग, तिलौरी आउर दनौरी बनावल, कि हाँ जी॥5॥
बजका बजुकी आउर पतोड़ा, सबहे भाँति बनावल, कि हाँ जी।
ऊपर से ढारल घीउ के चभारो धमधम धमके रसोइ, कि हाँ जी॥6॥
पंखा जे डोलवथि रुकमिनी नारी, आजु भोजन भल पावल, कि हाँ जी।
ऊपर दही आउ चीनी बिछावल, लौंग सोपाड़ी खिलाइ, कि हाँ जी॥7॥
जेमन बइठल जदुपत, हलधर, जेमत हय मुसकाइ, कि हाँ जी।
जेमिए जुमुए जदुपत आचमन कयलन, झारी गंगाजल पानी, कि हाँ जी॥8॥
पौढ़ल सेज पोंछल मुँह रेसम, रुकमिनी चौर डोलावे, कि हाँ जी।
बड़ रे भाग से जदुपत आवल, धन धन भाग हमारो, कि हाँ जी॥9॥
फिनु आयब इही मोर डगरिया, करूँ अंगेया अंगीकारे कि हाँ जी।
नारद गावत, बरम्हा गूनत धन रुकमिनी तोर भागे, कि हाँ जी॥10॥

गीत-3

गोबर से लिपलूँ अँगना, हरबोबिन लाल।
बिछवा रेंगल जाय हे, हरगोबिन लाल॥1॥
ओने से अयलन दुलरइतिन छिनरो हे, हरगोबिन लाल।
काट लेलक छिनरो के बिछवा हे, हरगोबिन लाल॥2॥
कउन बइदा के बोलाऊँ हे, हरगोबिन लाल।
कउन ओझा के गुनाऊँ हे, हरगोबिन लाल॥3॥

ओने से अयलन कवन रसिया हे, हरगोबिन लाल।
जरा एक जगहा देखाऊँ हे, हरगोबिन लाल॥4॥
इसे के जगहा देखाऊँ हे, हरगोबिन लाल।
लहँगा में बिछवा समायल हे, हरगोबिन लाल॥5॥

गीत-4

उ जे पत्तल परसले परास के, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुआ सब जेवन आइ के,
गुंड़ा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥1॥
उ जे भात परोसले बूक से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुवा जेंवन आइ के,
गुंडा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥2॥
उ जे दाल परोसले ढार से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुवा जेंवन आइ के,
गुंडा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥3॥
उ जे घीउ परोसले ढार से, मोहन के मन भावे हो।

राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुवा जेंवन आइ के,
गुंडा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥4॥
उ जे दही परोसले छेव से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुवा जेंवन आइ के,
गुंडा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥5॥
उ जे चिन्नी परोसले मुट्ठी से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँडुवा जेंवन आइ के,
गुंडा सब जेंवन आइ के,
चलिका सब परोसन आइ के,
सखी सब मंगल गाइ के॥6॥

गीत-5

कहे जनकपुर के नारि राम से, चलहुँ भमन हमारी कि हाँ जी।
आबल महल हमर रघुनन्नन, अति भाग हमारी कि हाँ जी॥1॥
कंचन थारी कंचन केर झारी, लावल गंगाजल पानी कि हाँ जी।
चरन पखारि चरनोदक लीन्हे, है बड़ भाग हमारी कि हाँ जी॥2॥
जे मन लागे सीरी राम ललाजी, देवे सखिन सभ गारी कि हाँ जी।
जनकपुर के भाग उदे भेल, धन धन भाग हमारी कि हाँ जी॥3॥
बासमती चाउर के भात बनावल, मूँग रहड़ के दालि कि हाँ जी।
कटहर, बड़हर, सीम आउ लउका, करइला के भुँजिया बनाये कि हाँ जी॥4॥

भाँजी, तोरइ, बैंगन आउ आलू, सबके अचार परोसे कि हाँ जी।
बारा, बजका, दिनौरी, तिलौरी, आउ कोहड़उरी परोसे कि हाँ जी॥5॥
भभरा, पतौड़ा, पापर, निमकी, सबहिं भाँति सजायो कि हाँ जी।
गारी गावत सभ मिलि नारी, राम रहल मुसकाइ, कि हाँ जी॥6॥
राउर पितु रसरथ हथ गोरे, तूँ कइसे हो गेल कारे कि हाँ जी।
तोहर मइया बहुत छिनारी, तूँ परजलमल पूत कि हाँ जी॥7॥
बहिनी तोर साधु सँधे इकसल फूआ के कउन ठेकाना कि हाँ जी।
सात पुस्त तोर भेलन छिनारी, तुहूँ छिनार के पूत कि हाँ जी॥8॥
गारी परम पियारी हइ रघुबर, सुनूँ सुनूँ परेम के गारी कि हाँ जी।
मुसुकत राम मुसुके भाइ लछुमन, धन धन भाग हमार कि हाँ जी॥9॥
भोजन करि के किये अचमनियाँ, दीन्हें खरिका झारी कि हाँ जी।
पोंछ हाथ रेसम के रूमलिया, बइठल सेज सँभारि कि हाँ जी॥10॥
एतबर उमर हमारी जी नारी, नइ खायो ऐसी जेमनारी कि हाँ जी॥11॥

बेटी-बिदाई गीत

गीत-1

बेरहिं बेरहिं तोरा बरजों कवन दुलहा, बन बिरिदा जनि जाहु हे।
बन बिरिदा एक देव बरिसल भींजि जइहें चन्नन तोहार हे॥1॥
हाँथी भींजल, घोड़ा भींजल, भींजल लोक बरियात हे।
हँथिया उपरे भींजल कवन दुलहा, चन्नन भरले लिलार हे॥2॥
डाँड़ी भींजल, डोरी भींजल, भींजल सबजी ओहार हे।
डँड़िया भीतरे भींजल कवन सुगइ, सेनुर भरले लिलार हे॥3॥
झिहिर झिहिर नदिया बहतु हैं, ओहि में कवन सुगइ नेहाय हे।
हँथिया उपर बोलल कवन दुलहा, हरवा दहि मति जाय हे॥4॥
ई हरवा मोरा ऐरिन बैरिन, ई हरवा मोरा परान के अधार हे।
ई हरवा मोरा बाबा के हलइ ई हरवा मोरा परान के अधार हे॥5॥
अपन मउयिा सम्हारहु ए दुलहा, घामा लगत कुम्हलाए हे॥6॥

गीत-2

खेलते रहली सुपलो मउनिया आइ परल कवन लाल दुलहा।
किए धानि खेलब हे सुपली मउनिया, किय धानि चलब हे हमर देसवा॥1॥
कवन हटिया कवन बटिया, कवन नगरिया लिआइ जयबऽ।
जहाँ नहीं हटिया, जहाँ नहीं बटिया, पटना नगरिया लिआइ जयबो॥2॥
केकरा सँगे उठबइ हे, केकरा सँगे बइठबइ, केकरा ठेहुनिया लगाइदेबऽ।
दीदी सँगे उठिहऽ हे भउजी सँगे बैठिहऽ, मइया ठेहुनिया लगाइ देबो॥3॥
जैसन जनिहे मइया अपन धियवा, ओयसहिं जनिहे मइया हमर धनिया।
ओलती के पनिया बड़ेड़ी नहीं जइहें, धिया के दुलार दुतोह नहीं पइहें॥4॥

गीत-3

बाबा हो धन लोभित धनवे लोभाइ गेल।
सातो नदिया पार कयलऽ।
केहि अइहें केहिं जइहें, सनेस पहुँचइहें।
कउन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से भेंट होयतन हे॥1॥
नउआ अयतन, बरिया जयतन, सनेस पहुँचयतन हे।
कवन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से मिलन होयतन हे॥2॥

अन्य लोकगीत

गीत-1

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए ।
नई ज्योति के धर नये पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगनछू ले स्वर्ग-,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरणद्वार जगमग-,
उषा जा न पाए, निशा आ ना पाए।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यों ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए ।
मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ़ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आएँ नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजारा,
कटेगे तभी यह अँधेरे घिरे अब
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

गीत-2

ओ मन्दिर के शंख, घण्टियों तुम तो बहुत पास रहते हो,
सच बतलाना क्या पत्थर का ही केवल ईश्वर रहता है?

मुझे मिली अधिकांश
प्रार्थनाएँ चीखों सँग सीढ़ी पर ही।
अनगिन बार
थूकती थीं वे हम सबकी इस पीढ़ी पर ही।

ओ मन्दिर के पावन दीपक तुम तो बहुत ताप सहते हो,
पता लगाना क्या वह ईश्वर भी इतनी मुश्किल सहता है?

भजन उपेक्षित
हो भी जाएं फिर भी रोज सुने जाएंगे।
लेकिन चीखें
सुनने वाला ध्यान कहाँ से हम लाएंगे?

ओ मन्दिर के सुमन सुना है ईश्वर को पत्थर कहते हो!
लेकिन मेरा मन जाने क्यों दुनिया को पत्थर कहता है?

गीत-3

लो विदा दे दी तुम्हे इस जन्म में,
किन्तु अगले जन्म का वादा करो
तोड़कर बन्धन सभी सँग सँग रहोगी।

सुमन अर्पण, आचमन या मन्त्र में
है सभी में मन मगर खुलकर नही।
अब न रखना व्रत मुझे मत माँगना
यत्न कोई भाग्य से बढ़कर नही।

छोड़ दो करनी प्रतीक्षा द्वार पर

देहरी का दीप आँगन में धरो
और कब तक लांछनों को यूँ सहोगी।

मान्यताएँ हैं जमाने की कठिन
किन्तु अपना प्यार है सच्चा सरल।
परिजनों की बात रखनी है तुम्हे
इसलिए मैं हारता हूँ आज", कल।"

मान लोगी बात सबकी ठीक पर
सात जन्मों के लिए होंगे वचन
सोंचता हूँ हाय तब तुम क्या कहोगी।

गीत-4

है इश्क़ तो फिर असर भी होगा
जितना है इधर उधर भी होगा

माना ये के दिल है उस का पत्थर
पत्थर में निहाँ शरर भी होगा

हँसने दे उसे लहद पे मेरी
इक दिन वही नौहागर भी होगा-

नाला मेरा गर कोई शजर है
इक रोज़ ये बारवर भी होगा-

नादाँ न समझ जहान को घर
इस घर से कभी सफ़र भी होगा

मिट्टी का ही घर न होगा बर्बाद
मिट्टी तेरे तन का घर भी होगा

ज़ुल्फ़ों से जो उस की छाएगी रात

चेहरे से अयाँ क़मर भी होगा

गाली से न डर जो दें वो बोसा
है नफ़ा जहाँ ज़रर भी होगा

रखता है जो पाँव रख समझ कर
इस राह में नज़्र सर भी होगा

उस बज़्म की आरज़ू है बेकार-
हम सूँ का वहाँ गुज़र भी होगा

'शहबाज़' में ऐब ही नहीं कुल
एक आध कोई हुनर भी होगा

गीत-5

करता अन्तर्मन अनन्त के चरणों में अभिवन्दन,
सत्यात्मक प्रतीति का रागों ध्वनियों में अभिव्यंजन।

आकर चिरनूतन पहेलियाँ-,
देने लगती हैं चुनौतियाँ
नहीं जान सकते तुम शब्दातीत तत्त्व को गोपन।
चले गूँथने सिन्धुलहर को-,
खण्डखण्ड करने अम्बर को-
उठता है खिलखिला तुम्हारी लघुता पर वह प्रतिक्षण।
कस्त्वं, कोऽहम् के इतिअथ में-,
जिज्ञासा के दर्शनपथ में-
रह जाती क्या नहीं कल्पना मात्र चरम अवलम्बन।
अनन्तत्व का चक्र निरन्तर,
जयध्वनि करता स्तब्ध दिगम्बर-
करती गहन मौन को पृथिवी नत होकर आत्मार्पण।
आता है विराट वामन बन,

युगसंचरण-पथ में कर चरण-,

परे विदित से बँधा गणित के अंकों में चेतन मन।

अन्तर्प्रांगण में अनन्त के,

महाआयतन में दिगन्त के,

अहरोरात्र मिलते रहते विज्ञानपुराण चिरन्तन।-

-------------------- समाप्त------------------